आर्य समाज उदयपुर का संक्षिप्त इतिवृत्त

आर्य समाज मन्दिर

।।ओ३म्।।
भटियानी चौहट्टा
महर्षि दयानन्द मार्ग
उदयपुर (राज.)

सुगन द्वार
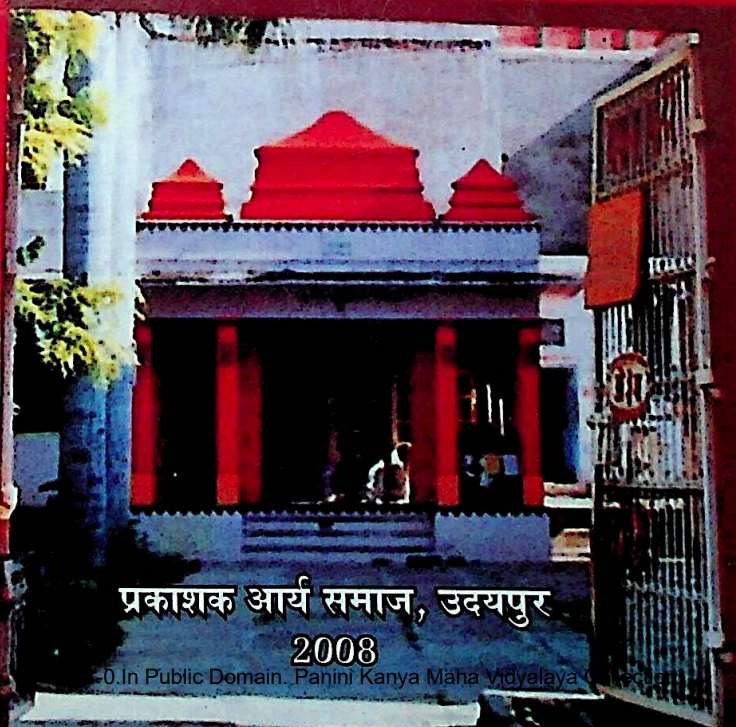
स्थापना
कार्तिक
अमावस्याँ
1944 वि.
16, अक्टूबर
सन् 1887 ई.

प्रकाशक आर्य समाज, उदयपुर

2008
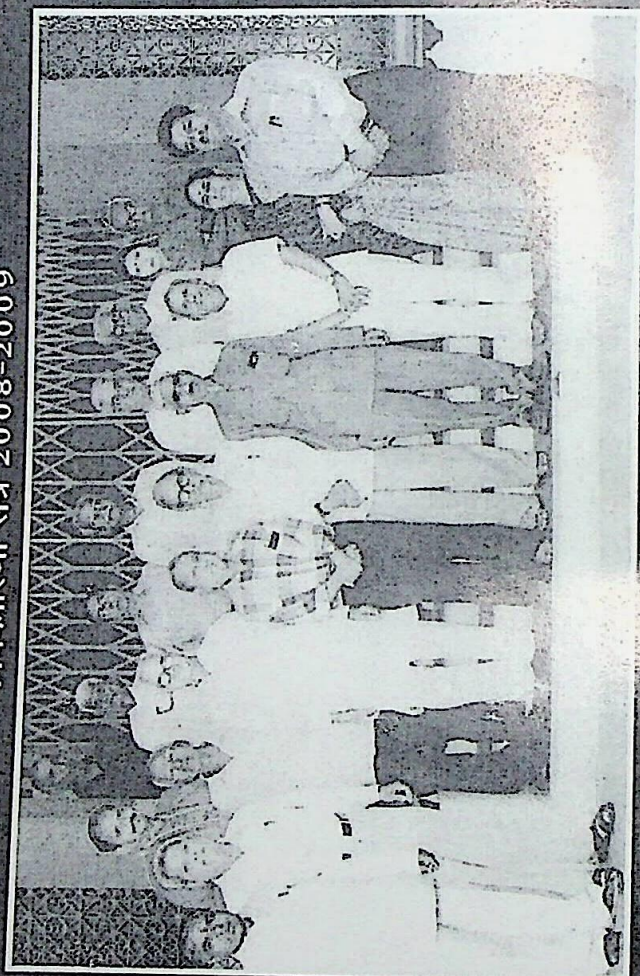
ओ३म्

आर्य समाज, उदयपुर
संक्षिप्त इतिवृत्त
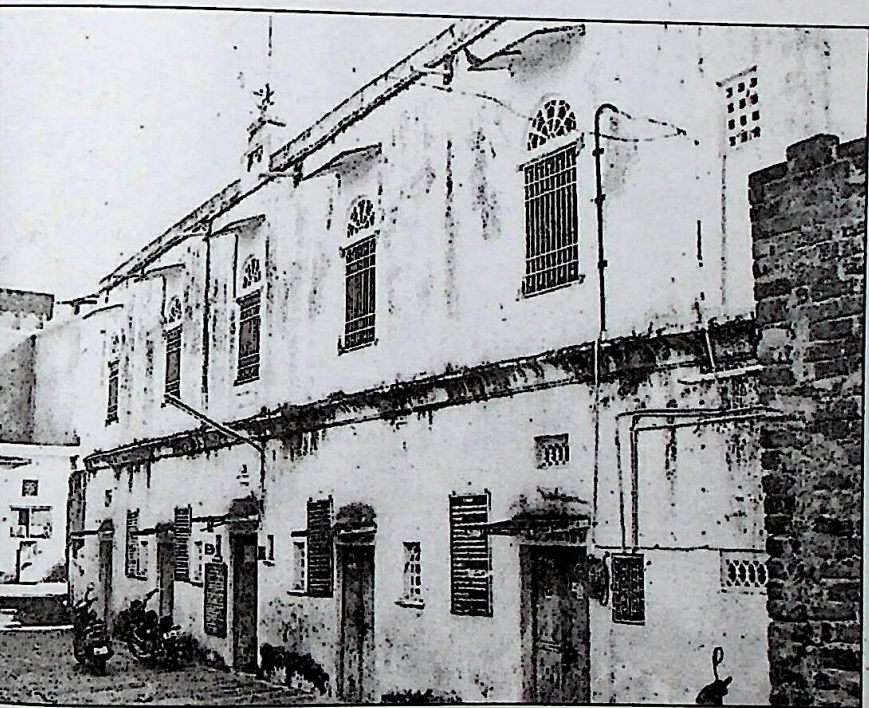
प्रकाशक

आर्य समाज, उदयपुर

(राजस्थान)

वर्ष 2008

प्रकाशक
आर्य समाज, पिछोली,
उदयपुर–313001, राजस्थान
फोन : 0294–2417941

मूल्य : तीस रुपए

आवरण : सुरेश चन्द्र चौहान

लेजर टाईप सेटिंग
राजेंद्रसिंह नेगी
3–द–1, प्रभातनगर,
सेक्टर 5, हिरणमगरी, उदयपुर
मो. 9784842926, 2464487

मुद्रक
चिराग प्रकाशन
3–थ–19, अभिमन्यु मार्ग,
प्रभातनगर, सेक्टर 5, हिरणमगरी,
उदयपुर–313002, राजस्थान
फोन : 0294–2463474

ARYA SAMAJ UDAIPUR

प्रथम संस्करण–2008

Rs : 30/-

प्राक्कथन

कई वर्षों से नगर आर्य समाज (म. दयानन्दमार्ग) उदयपुर की स्थापना से अब तक के इतिवृत्त अभिलेखन की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा था। आर्य समाज में गत साठ वर्षों से विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित रहे डॉ. ब्रजमोहन जवालिया से इस हेतु आग्रह किया गया। उन्होंने अपने संग्रह में प्राप्त सामग्री, प्रकाशित पुस्तकों और वेदवाणी, राजस्थान पत्रिका आदि तथा आर्य समाज में विशेष अवसरों पर उनके द्वारा लिख कर पढ़े गए लेखों आदि के आधार पर इतिवृत्त लेखन का कार्य पूर्ण किया। लेखनकाल के मध्य में ही उनकी अस्वस्थता के कारण शेंष कार्य का उत्तरदायित्व डॉ. प्रेमचन्द गुप्त के आग्रह पर उन्हें सौपा गया। डॉ. गुप्त ने आर्य समाज में प्राप्त अवशिष्ट अभिलेख सामग्री तथा आर्य समाज के मान्य सदस्यों– डॉ. जावलिया, श्री हरिनारायण शर्मा, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री कृष्णकुमार सोनी, डॉ. दीनदयाल शर्मा, श्री शंकरलाल मरमट और श्री श्रीराम आर्य प्रभृति, मित्रों के सहयोग से इसे पूर्ण कर पुस्तिका का आकार दिया। आर्य समाज, उदयपुर से संबंधित सभी प्रकार की सामग्री का समावेश पुस्तक में करने का प्रयास किया गया है– संभव है फिर भी कोई गौण सूचनाएं सम्मिलित करने से रह गई हों।

आर्य समाज, उदयपुर का यह महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है– इससे आने वाली पीढ़ी के सदस्य अवश्य प्रेरणा प्राप्त करेंगे। अपनी संस्था के गौरवपूर्ण इतिवृत्त का प्रकाशन कर हम आत्मतोष का अनुभव कर रहे हैं।

इतिवृत्त के टंकन, प्रूफ संशोधन भव्य आवरण और मुद्रण का भार

श्री सुरेश चन्द्र चौहान को सौंपा गया था, जिसे अमूल्य समय समर्पित कर उन्होंने पूरा किया है– अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तिका के सुंदर मुद्रण के लिए चिराग प्रकाशन के प्रबंधक श्री शिवप्रकाश को अनेक साधुवाद।

उदयपुर
2008

सदस्य, अंतरंग सभा
नगर आर्य समाज, उदयपुर

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का मेवाड़ आगमन

सद्धर्म की खोज में लगभग 30 वर्ष तक भारत भ्रमण के उपरांत महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी जी ने अनुभव किया कि लगभग एक सहस्र वर्ष से विधर्मियों की दासता में स्वधर्म को भूल चुके भारतवासियों में पुनः चेतना का संचरण करने हेतु राजसत्ता का आश्रय आवश्यक है। राजपूताना और मध्य भारत के नगरों में यद्यपि वैदिक धर्म के प्रचारार्थ वे अनेक बार आ चुके थे, फिर भी रजवाड़ों के शासकों को सद्प्रेरणा देकर आर्य जाति के पुनरूत्थान और राष्ट्र की स्वतंत्रता में उनके सहयोग की आशा से संवत १९३८ के अंत में इन रियासतों की ओर प्रस्थान किया।

कार्तिक शुक्ला ५ संवत १९३८ को चित्तौड़ आकर स्वामीजी ने गम्भीरी नदी के सुरम्य तट पर स्थित रूण्डेश्वर महादेव के मंदिर में अपना शिविर स्थापित कर, महाराणा सज्जनसिंह को जी.सी.एस.आई. से सम्मानित करने हेतु आयोजित राजसभा में उपस्थित हुए, राजाओं और सामन्तों को उपदिष्ट करना प्रारम्भ किया। चित्तौड़ में हर्षोल्लास का वातावरण था। मेवाड़ राज्य की समस्त शोभा अतिशय तड़क–भड़क युक्त वेष–विभूषा से शोभायमान थी। स्वामीजी के प्रातःशाम होने वाले सत्संग में भारी भीड़ होती थी। मेवाड़ राज्य के समस्त सामंत और आमात्य तथा अधिकारीगण भी उसमें उपस्थित होते थे। महाराणा सज्जनसिंह भी कविराजा श्यामलदास के मुख से स्वामीजी की कीर्ति को सुन कर अपने परिजनों सहित सत्संग में सम्मिलित हुए। सत्संग में

स्वामीजी के प्रवचनों से प्रभावित होकर महाराणा सज्जनसिंह ने उनसे उदयपुर आने हेतु निवेदन किया।

स्वामीजी दो मास तक मेवाड़वासियों को अपने उपदेशों से लाभान्वित कर बंबई (अब मुंबई) के लिए प्रस्थान कर गए। महाराणा के निमंत्रण पर दिए गए आश्वासन के अनुसार आषाढ़ शुक्ला ६ संवत १६३६ को बंबई से प्रस्थान कर खण्डवा, इंदौर, रतलाम और जावरा की जनता को अपने धर्मोपदेशों का लाभ देते हुए श्रावण शुक्ला ६ संवत १६३६ को वे पुनः चित्तौड़ आ पहुंचे। स्वामीजी के चित्तौड़ आगमन पर वहाँ के परगना हाकिम ठाकुर जगन्नाथ ढींकड्या ने राजकीय अतिथि के रूप में उनके निवास की उत्तमोत्तम व्यवस्था के साथ श्रद्धा भक्ति के साथ उनकी सेवा सुश्रुषा की।

दो सप्ताह तक चित्तौड़ में निवास के उपरांत द्वितीय श्रावण कृष्णा द्वादशी को स्वामीजी ने उदयपुर के लिए प्रस्थान किया और त्रयोदशी गुरुवार (11 अगस्त 1882 ई.) को उदयपुर पहुंचे। स्वामी के साथ इस यात्रा में स्वामी आत्मानंदजी, पंडित भीमसेनजी और ब्रह्मचारी रामानंद तथा एक–दो सेवक भी थे। स्वामीजी की यात्रा के लिए पालखी की व्यवस्था की गई थी पर मार्ग में पालखी टूट जाने से उन्हें पैदल यात्रा भी करनी पड़ी। तदुपरांत हाथी और बघ्घी की व्यवस्था कर उन्हें उदयपुर लाया गया।

उदयपुर आगमन

महाराणा की ओर से स्वामीजी के निवास की व्यवस्था सुरम्य सज्जन निवास बाग में स्थित नवलखा महल में की गई। महाराणा ने स्वयं अपनी पटरानी, मंत्रीमंडल और पुरोहित मंडली के साथ नवलखा महल में आकर स्वामीजी का स्वागत किया, कुशलक्षेम पूछी। नाथद्वारा से प्रकाशित होने वाली हरिश्चंद्र चंद्रिका पत्रिका के संपादक वर्ग ने जो स्वामीजी की आलोचना करते रहते थे– लिखित में स्वामीजी से क्षमा याचना की।

महाराणा नित्यप्रति स्वामीजी की सेवा में उपस्थित होने लगे। मेवाड़ के सामंतों और अधिकारियों में आसींद के रावत अर्जुनसिंह, पारासोली के राव रतनसिंह, शिवरति महाराज रायसिंह, मामा बख्तावरसिंह, कविराजा श्यामलदास, राय महता पन्नालाल, मेहता तख्तसिंह, पुरोहित पद्मनाभ और ढींकड्या जगन्नाथ प्रमुख थे जो स्वामीजी की अमृतवाणी का श्रवण करने हेतु प्रतिदिन उपस्थित रहते थे।

स्वामीजी ने महाराणा और कई अन्य जिज्ञासु विद्वानों को राजधर्म, संस्कृत भाषा, आदि की शिक्षा देना प्रारंभ किया। महाराणा सज्जनसिंह ने स्वामीजी से पाणिनि व्याकरण, गौतमसूत्र, योगदर्शन, न्याय और वैशेषिक दर्शन तथा आर्य जाति की रीतिनीति से पूर्ण वैदिक धर्म की सार रूप मनुस्मृति का अध्ययन किया।

स्वामीजी के उदयपुर नगर में दिए जा रहे प्रवचनों को एक मास तक श्रवण करने के उपरांत मौलवी अब्दुर्रहमान जो मेवाड़ में पुलिस सुपरिंटेंडेंट और न्यायाधीश के पद पर नियुक्त थे के मध्य भाद्रपद कृष्णा १४ सोमवार, भाद्रपद शुक्ला एकम बुधवार और भाद्रपद शुक्ला ५ रविवार संवत् १९३८ (तद्नुसार 11, 13 और 17 सितंबर सन् 1882) को प्रश्नोत्तरी (शास्त्रार्थ) का दौर चला और स्वामीजी ने मौलवी के प्रश्नों का यथोचित उत्तर दिया। **(परिशिष्ट संख्या एक पर)** उदयपुर की हिंदू और मुसलमान जनता बहुत अधिक संख्या में शास्त्रार्थ सुनने आती थी। अंतिम दिन महाराणा भी स्वयं सुनने आए। महाराणा ने और कविराजा ने स्वामीजी के मत को सत्य बताया। शास्त्रार्थ लिखित में होता था। मेवाड़ के सायर हाकिम (चुंगी अधिकारी) ब्रजनाथ, मिर्ज़ा मोहम्मद अली खां भूतपूर्व वकील एवं सदस्य विधानसभा टोंक तथा मुंशी रामनारायण सरिश्तेदार बाग (कलां) ने शास्त्रार्थ में हुए प्रश्नोत्तरों को लिखा। दिनांक 17 दिसंबर को शास्त्रार्थ समाप्त हो गया।

स्वामी जी प्रातः काल बहुत जल्दी शय्या त्याग करते थे और गोवर्धन विलास पर्वत पर भ्रमण के लिये चले जाते थे। लौटने पर उद्यान के चबूतरे की चौकी पर आसन लगाकर बैठते और दीर्घ काल तक परमेश का चिन्तन एवं ध्यान करते थे। इसके बाद ब्राह्मी बूटी युक्त दूध का सेवन करते थे। इसके बाद वेद भाष्य लिखने का कार्य आरम्भ होता था। मध्याह्न में भोजन से निवृत होकर वे पत्र–व्यवहार का कार्य देखते थे तथा स्वग्रन्थों का प्रूफ–शोधन करते थे। दोपहर बाद सत्संगियों के आने का सिलसिला आरम्भ होता तो चार बजे से लेकर रात्रि होने तक जिज्ञासुओं के प्रश्नों के उत्तर देने और शंका समाधान में लगे रहते थे। उदयपुर में स्वामी जी के शिष्य स्वामी आत्मानन्द तथा ब्रह्मचारी रामानन्द उनके साथ थे तथा ग्रन्थ लेखन के लिये पं. भीमसेन शर्मा को उन्होंने अपने साथ रखा हुआ था।

नवलखा महल में प्रतिदिन होने वाले, धर्म, राजनीति, दर्शन शास्त्रादि व्याख्यानों से उदयपुर की प्रजा के हृदयों में आनन्द, आश्चर्य और विरोध की तरंगे उठने लगी। पौराणिक कथा–वार्ताओं के अतिरिक्त सत्य वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या इससे पूर्व उनके कानों में पड़ी तक न थी। वेद–वेदान्तों के जानने वाले गिने–चुने पंडित और सन्यासी, शूद्रों और स्त्रियों को अथवा विधर्मियों को वेद मंत्र सुनाना पाप समझते थे। यह स्वामी दयानन्द का ही प्रताप है कि यह दुराग्रह धीरे धीरे शिथिल पड़ता गया। अनेक पुराणपंथी पंडित स्वामी जी के उदयपुर निवास के समय अपने द्वारा स्वामी जी के प्रति दुष्प्रचार के लिये अपनी भूल स्वीकार करते हुए अनुशोचना प्रकट करने उनके पास आते थे। स्वामी दयानन्द, 11 अगस्त 1882 से 27 फरवरी 1883 तक उदयपुर में बिराजे।' फाल्गुन शुक्ला ७ संवत् १६३६ के दिन विदाई के समय महाराणा ने सम्मान सूचक सभा का आयोजन कर, ऊंचे आसन पर बिठाकर पुष्पहार से स्वामीजी का वंदन करते हुए अपनी ओर से सम्मान पत्र पढ़ कर सुनाया। (डॉ.

ब्रजमोहन जावलिया द्वारा वेदवाणी में प्रकाशित लेख-- **परिशिष्ट सं. 2 व 3)**

स्वामीजी के उदयपुरस्थ शिष्यों में उस समय के शीर्षस्थ विद्वान् और प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा श्यामलदास, पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, पंडित जगन्नाथ, पंडित ब्रजनाथ, मास्टर किशनजी, फतेहकरण उज्ज्वल (विजयकर्ण), पंडित रामप्रसाद विक्रमाश्रय, ठाकुर मनोहरसिंह डोडिया और बारहठ कृष्णसिंह थे।

स्वामीजी के समीप संन्यास लेने आए बिहारी ब्राह्मण सहजानंद को उन्होंने सदुपदेश देकर वैदिक धर्म प्रचार हेतु प्रदेश में भेजा। नीलकंठ महादेव के समीप समोरबाग में वृहद हवन कराया। सुयोग्य संगीतज्ञों को वेदमंत्रों को संगीतबद्ध रूप में गाने की कला सिखाई। मुसलमान संगीतज्ञ डागर बंधुओं को सामवेद के संगीत की शिक्षा देने का प्रयत्न किया पर वे असफल रहे। वेश्यावृत्ति का समूलोन्मलन कराया, चारण पाठशाला के विद्यार्थियों को वेद वेदांग पढ़ने की शिक्षा दी। उन्होंने सामंतों के सुपुत्रों की पाठशाला स्थापित कर उनमें संध्यावंदन आदि के प्रबंध की योजना बनाई। शस्त्र और शास्त्र दोनों ही विषयों की शिक्षा देने की सम्मति दी। स्वामीजी ने पाठशाला की भूमि का नक्शा बनाकर महाराणा से अनुमोदन कराया। राजकीय पाठशाला में कक्षा क्रम से अध्यापन की व्यवस्था कराई। न्यायालयों में देवनागरी लिपि के प्रयोग पर बल दिया और कानून में व्यवहृत अरबी फारसी के शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्द लिखवाए। वैद्यों को औषधियों द्वारा चिकित्सा और देशी वस्त्र धारण करने की शिक्षा देते थे। स्वामीजी ने गौरक्षा हेतु लोगों से हस्ताक्षर करवा कर भी केंद्रीय सरकार को भिजवाये। वेदों की शिक्षा हेतु वेदशाला बनाने का आग्रह किया और वैदिक निधि का प्रस्ताव किया। उन्होंने बहु विवाह प्रथा के उन्मूलन का प्रयास भी किया।

अनार्य मतों के खंडन तथा इतिहास और राजनीति विषयक व्याख्यानों

द्वारा भी तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार राजाओं, सामंतों, आमात्यों, राज कर्मचारियों तथा स्थानीय जनता को भी सजग करने का उन्होंने प्रयत्न किया।

उदयपुर में रहते हुए उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सत्यार्थ प्रकाश के लेखन और संशोधन को अंतिम रूप देकर उसके प्रकाशन का था। उदयपुर निवास की अवधि में स्वामीजी ने निम्नलिखित अन्य पुस्तकें लिख कर मुंशी समर्थदान के प्रबंध से प्रयाग से प्रकाशित करवाई।

1. वेदाङ्ग प्रकाश (कार्तिक कृष्णा एकम संवत, १६३६)
2. पारिभाषिक (आश्विन शुक्ला– संवत् १६३६)
3. उणादि कोष (माघ कृष्णा एकम संवत् १६३६)
4. गणपाठ (माघ शुक्ला १0 संवत् १६३६(भूमिका 16 फरवरी सन् 1883)
5. निघण्टु (माघ शीर्ष–४ संवत् १६३६)
6. धातुपाठ (पौष बदी १0 संवत् १६३६ वि)

अपनी समस्त संपत्ति की सुरक्षा और सदुपदेश हेतु स्वामीजी ने परोपकारिणी सभा की स्थापना करके तद्विषयक स्वीकार पत्र यहीं पर लिख कर पंजीकृत कराया। शंभुनिवास में इसका महोत्सव किया गया। परोपकारिणी सभा के सर्व प्रथम प्रधान के पद पर महाराणा सज्जनसिंह, मंत्री के पद पर कविराजा श्यामलदास और उपमंत्री पद पर पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या नियुक्त हुए। स्वामीजी ने बेदला के राव तख्तसिंह, देलवाड़ा के राजराणा फतहसिंह, आसींद के रावत अर्जुनसिंह तथा शिवरति के महाराजा गजसिंह को इस सभा के सभासद के रूप में नियुक्ति दी।

आर्य समाज उदयपुर की स्थापना :

यद्यपि स्वामी जी के उपदेश से वैदिक धर्म का बीजारोपण उदयपुर–वासियों में से बहुतों के हृदय में हो गया था तथापि आर्य समाज की

स्थापना यहाँ कार्तिकी अमावस्या संवत् 1944 वि. (16 अक्टूबर सन् 1887 ई0) को पंड्या मोहन लाल जी के निवास स्थान पर ही हो पाई। उक्त पंडया जी तथा सरदारगढ़ ठाकुर साहब मनोहर सिंह जी की प्रेरणा से यहाँ के पाणेरी ब्राह्मणों ने अपनी बापोती का एक लम्बा चौड़ा तलिया समाज को भेंट किया और उससे मिली हुई कुछ जमीन उनके स्वामियों से खरीदी जाकर जाबते मुताबिक उसकी रजिस्ट्री करवा ली गई। इस भूमि पर चैत्र शुक्ला 13 संवत् 1947 वि. (22 अप्रेल, 1891ई0) को आर्य समाज के भवन का शिलान्यास हुआ। आर्य समाज के लिये प्रदत्त भूमि का विवरण पत्र इस प्रकार है :–

"सीध श्री श्री आरीया समाज उदेपुर जोग ली0 पाणेरी नंद राम, दीप लाल, हेमराज, किशन लाल, देव किशन, छगन लाल, गणेश लाल, रणछोड़ लाल, सेवाराम को नमस्ते वंचे– अपरंच मा सारा भायां की सामलात को पड़त तल्यो पीछोली में सीतला माताजी के पास है जीरो फेसलो सदर दीवानी वा राजे श्री मेदराज सभा में 1937 का मगसर विद 3 हुयो और तजबीज श्री जी में मंजूर लम्बरी 1883 (1937) का म्हा विद 10 को हुई सो ये पड़त तल्यो मा समसत पाणेरियाँ श्री आरीया समाज के मंदर करावा ताबे भरमा अरपण रामा अरपण कर भैंट करीयो जीरा पाड़ोस उगमणो रसता–व नंद राम माली को– घर आथमणो रासतो– लंकाऊ बामण नंद लाल महालखमी जी को पुजारी को तथा लाल संकर नागदा को – धराऊ चतरभुज नागदा तथा मा पाणेर्या का गरा को या चार ही पाड़ोसा वचलो पड़त तल्यो भैट कर्यो सो इम्हे मंदर करावसी मन वे जा कमठाणो करावसी– और चोमासा म्हें नाला परनाला जठे नीकलता होसी वठे नीकालसी इ जगां बाबत मारो भाई गरास्यो बोले बदले जीरो मन भी मनावांगा ओ पुन पतर मारी राजी खुशी वी लीख भेंट करयो सो मंदर वणावसी इ म्हे बोलां बदला नहीं– बोला बदला तो राज दरबार पंचा में जूठा दः पाणेरी देवी लाल का समस्त पाणेर्या का केवासु पुन पतर लीख्यो

1947 का पोष सुद 10 दः पाणेरी दीप लाल रा ऊपर लो पुनः पतर वाचेने दसगत कीदा– दसगत पाणेरी नंद राम बे कलम रतन लाल रा दः पाणेरी हेमराज़ का हाथ अखरा दसगत पाणेरी रणछोड़लाल का हाथरा ऊपरलो पुनपतर बाचेने कीदा दः पाणेरी कीसन लाल रा दः पाणेरी छगन लाल रा हाथ अखरां ऊपरला अखर वाचने कीदा दः पाणेरी गुणेश लाल कलम लक्ष्मण रा ऊपरला वांच कीदा दः पाणेरी सेवाराम दः देवीलाल

अे कागज रजिस्टर किया गया बाद मुनकजाए मीयाद इस्त्रीहार कोई ऊजरदार खड़ा न होने पर साथ रजामंदी त्रफेन – नपती लंकाऊ तरफ के तल्या की उगमणी आथमणी धराऊ लंकाऊ दोनों तरफ गज 20 बीस = उगमणी आथमणी तरफ धराऊ लंकाऊ गज 18 अठारा आथमणी तरफ भी लंकाऊ धराऊ चौड़ा गज 16 सोला जीसके धराऊ तरफ ऊगमणी दीसा गज 30 तीस धराऊ लंकाऊ ऊगमणी आथमणी लम्बी गज 15 पंदरा धराऊ तरफ आथमणी तरफ गज 24 चोइस लंकाऊ तरफ गज 22 बाइस–खाचो। एक धराऊ लंकाऊ गज 6 छे धराऊ तरफ आथमणी दीसा की नपती धराऊ में काऊ गज 32 बत्तीस और ऊगमणी तरफ गज 36 छत्तीस और धराऊ तरफ गज 32 बत्तीस और लंकाऊ तरफ गज 21 अकबीस ऊपर नम्बर 102 नकल कीताब रजिस्टरी 1947 का चेत सुद 11 तारीख 18 जून सन् 1891 ईस्वी नकशा संलग्न है। **(परिशिष्ट संख्या 4 व 5)**

समाज मन्दिर के निर्माण में ठाकुर सा. मनोहर सिंह जी ने अग्रगण्य होकर 500.00 रूपये प्रदान किये, राव सा. तख्त सिंह जी, बेदला व राजराणा जालिम सिंह जी, देलवाड़ा ने भी पाँच पाँच सौ की रकम दी और ठाकुर सा. गोविन्द सिंह जी, बदनौर, राव सवाई कृष्ण सिंह जी, बीजोल्यां, कँवर शार्दुल सिंह जी, सरदारगढ़, बावजी श्री गजसिंह जी, राय मेहता श्री पन्ना लाल जी, पंड्या मोहन लाल जी, मेहता, तख्त सिंह जी, अन्य सरदारों और प्रतिष्ठित

पुरूषों ने दान देकर अच्छी सहायता की। ठाकुर साहब जगन्नाथ सिंह जी, प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर के प्रंशसनीय प्रयत्न से भी चंदे की एक बड़ी रकम प्राप्त हो गई, जिससे इसमें वर्तमान भवन की निचली मंजिल का निर्माण कराया गया। मार्गशीर्ष कृष्णा 12 संवत् 1950 वि. (4 दिसम्बर सन् 1893 ई0) को स्वामी विश्वेश्वरानंद जी, पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी तथा मेवाड़ राज्य के अन्य सरदारों की उपस्थिति में बेदला राव साहब श्री कर्ण सिंह जी ने आर्य समाज मन्दिर, उदयपुर का विधिवत् उद्घाटन किया तथा निम्न वक्तृता प्रस्तुत की –

"मैं प्रसन्नता पूर्वक जाहिर करता हूँ कि सत्य, वेदोक्त धर्मोपदेशक स्वर्गवासी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वेद, जो हमारा अनादि धर्मपुस्तक है, उसके उसूलों को कायम कर इस आर्य भूमि पर समाजे कायम की, जिसकी एक शाखा हमारी वीर भूमि मेवाड़ की खास दारूल सल्तनत (राजधानी) उदयपुर में स्थापन हुई। जिसको खोलने के लिऐ आप सज्जन मुझे फरमाते हैं। मैं इस कार्य को करने में अपना गौरव समझता हूँ और गरूर के साथ कहता हूँ कि ऐसी समाजें सब जगह कायम होकर वेद धर्म का पूरा प्रचार होगा तो भारत भूमि की उन्नति का दिन बेशक नजदीक समझना चाहिये। ज्यादातर खुशी मैं यह मानता हूँ कि स्वामी जी विश्वेश्वरानन्द जी महाराज और ब्रह्मचारी जी नित्यानन्द जी महाराज जैसे महापण्डितों ने देश विदेश में भ्रमण कर अपने सत्य उपदेश द्वारा हजारों अज्ञानी लोगों को पर धर्म अंगीकार करने से बाज (पृथक) रखा और उनके उपदेश से वेद धर्म की श्रेष्ठता लोग समझने लगे। मेरे पूज्य पिता राव बहादुर तख्त सिंह जी ने इस समाज मन्दिर के बनाने में मदद की और समाज की उन्नति में वे खुशी मानते थे। वैसे मैं भी, समाज की उन्नति के लिये कोशिश करूंगा। प्रियवरों, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह समाज मन्दिर जो मैं आप सज्जन के

रू–बरू खोलता हूँ, उसकी दिनों दिन तरक्की हो और हमारे देश मेवाड़ को उससे पैज पहुँचे" इति ओ३म्।

आर्य समाज उदयपुर के इस भवन के निर्माण में राव बहादुर, पं. शुकदेव प्रसाद जी, मेहता जगन्नाथ सिंह जी, झाड़ोल राव सा., पं. त्रिभुवन लाल जी, ठा. लाभ चन्द जी पंचोली, पं. गोपी नाथ जी ओझा, ठा. ईश्वरी सिंह जी चंदेल, बाबू प्रभास चन्द्र जी, बिनु लाल जी, धायभाय चतुर्भुज जी, बाबू रघुवरदयालजी, लाला अमृत लाल जी, बाबू राम नारायण जी जेलर, इंजीनियर संतराम जी सेंगल, डॉ. शिव शंकर जी शुक्ल, डॉ. रामरिछपाल जी, सेठ रुस्तम जी (पारसी), वकील सा. ग्वालियर, मुंशी अहमद खाँ, पं. प्यारे किशन जी, वैद्य भानुशंकर जी, पं. श्याम सुन्दर लाल जी, पटेल घासीराम जी कुरज, मेहता जसवन्त सिंह जी, कोठारी सोभाग सिंह जी, महता जीवन सिंह जी, चौधरी मदन सिंह जी नंदराय, महाराज नाहर सिंह जी, सनवाड़, कोठारी सुजान सिंह जी, बांबू स्वरूप लाल जी, मिस्तरी लाला राम जी तथा भंडारी मोती लाल जी के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

इसके बाद कुछ वर्षो तक समाज का काम भली प्रकार चलता रहा। स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी आदि योग्य विद्वान और साधु उपदेशक समय समय पर यहाँ आकरं उपदेश करते रहे। परन्तु समाज के हितेच्छु ठाकुर साहब मनोहर सिंह जी और राव साहब कर्ण सिंह जी आदि सरदारों का स्वर्गवास हो जाने पर उदयपुर समाज को और स्वामी विश्वेश्वरानंद जी व ब्रह्मचारी नित्यानंद जी जैसे विद्वान् महात्माओं का शरीर न रहने से समस्त आर्य समाजों को बड़ी हानि पहुँची। फिर अर्थाभाव से उदयपुर आर्य समाज न तो अपने वार्षिकोत्सव कर सका और न निज की कोई संस्था ही स्थापना करने में समर्थ हो सका।

आर्य समाज उदयपुर के संस्थापक पं. मोहन लाल विष्णु लाल पंड्या

ने आर्य समाज के इसी भवन में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना भी की थी। किन्हीं कारणों से वह बंद हो गई। सन् 1908–09 में पुनः इसके सुचारू संचालन की व्यवस्था की गई। इसकी सुव्यवस्था का श्रेय अमृतधारा औषधि के उदयपुर कार्यालय के संचालक पं. विनायक राव नामक महाराष्ट्री सज्जन को जाता है, जिन्होंने इसकी एक अन्य शाखा की स्थापना बोहरवाड़ी में भी शीतला माता के पास की। बाद में इस संस्था का स्थानान्तरण कोल–पोल में जतीजी के उपासरे और फिर ओसवालों के पंचायती नोहरे की दूकानों में हुआ। सन् 1918–19 में विनायक राव जी का देहान्त हो जाने पर महाराणा फतेह सिंह जी द्वारा सूरजपोल में गोचर भूमि प्राप्त हो जाने पर वहाँ कर दिया जो आज उदयपुर के नारी शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में गेलड़ा राजस्थान महिला परिषद के नाम से संचालित है।

संवत् 1971 वि. (सन् 1914 ई0) में श्रीमान् राजाधिराज नाहर सिंह जी शाहपुरा नरेश ने 100.00 रूपये आर्य समाज उदयपुर के उत्सव के लिये प्रदान किये और अन्य महानुभावों यथा श्री कँवर जी बाप जी, पटेल घासी राम जी कुरज जिला सहाड़ा, महता श्री जसवन्त सिंह जी (जोधपुर), कोठारी श्री सोभाग सिंह जी महता, श्री जीवन सिंह जी, चौधरी श्री मदन सिंह जी नंद राय वाले, महाराज साहब श्री नाहर सिंह जी (सनवाड़), कोठारी श्री सुजान सिंह जी डॉ. श्री रामरिछपाल जी, लाला श्री अमृत लाल जी, बाबू श्री स्वरूप लाल जी, मिस्तरी लाला राम जी, मिस्तरी शिव चरन जी, भंडारी श्री मोती लाल जी आदि ने भी सहायता दी जिससे दौ सो सत्तासी रूपये दो आना एकत्र हुये तथा इससे 10 नवम्बर सन् 1914 ई0 को आर्य समाज, उदयपुर ने अपना प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया। उपदेशक पंडित नरसिंह राव जी शर्मा आदि के व्याख्यानों का श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। आर्य समाज, उदयपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव शाहपुरा नरेश के सहयोग से ही फिर 1916 ई. में सम्पन्न हुआ।

इसमें काठियावाड़ निवासी हरि शंकर मुरार जी के सारगर्भित व्याख्यान हुये। समाज के अतिरिक्त अन्य स्थानों में भी उनके व्याख्यान कराये गये।

गुरुकुल –

गुरुकुल कांगड़ी के रजत जयंती महोत्सव में 18 मार्च सन् 1927 ई. को ब्रह्मचारी युधिष्ठिर विद्यालंकार ने पूज्यपाद महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज से सन्यास की दीक्षा ली। अब उनका नाम स्वामी व्रतानंद हो गया। सन्यास लेते ही स्वामी व्रतानंद जी ने यह घोषणा की कि अब मैं शीघ्र ही गुरुकुल चित्तौड़गढ़ की स्थापना के लिये पुरुषार्थ करूंगा। इसके पश्चात् चूँकि चित्तौड़गढ़ में स्थान नहीं मिल सकता था, अतः सर्वप्रथम आर्य समाज मन्दिर उदयपुर में गुरुकुल चित्तौड़गढ के सामयिक संचालन का कार्य आश्विन शुक्ला 9 संवत् 1984 वि.को 8 (आठ) ब्रह्मचारियों को लेकर किया गया। विजयादशमी के दिन इसका स्थापनोत्सव बड़ी धूमधाम से राजा साहब श्री अमर सिंह ज़ी बनेड़ा के सभापतित्व में मनाया गया। श्री स्वामी लक्ष्मणानन्द जी, श्री पं. जयदेव जी विद्यालंकार, श्री पं. देवराज जी विद्यावाचस्पति श्री पं. जनमेजय जी विद्यालंकार आदि आर्य जगत के प्रमुख विद्वान् एवं उदयपुर राज्य के प्रमुख राजपुरुष इसमें भाग लेने पधारे थे। तबसे गुरुकुल का कार्य आर्य समाज में होता रहा। आर्य समाज मन्दिर में पर्याप्त स्थान नहीं था अतः ऊपर की मंजिल का निर्माण कराया गया और वहीं गुरुकुल का कार्य होने लगा। आर्य, समाज मंदिर, उदयपुर के ऊपरी खंड का निर्माण कार्य 11.10. 1927 को प्रारम्भ हुआ और 31.08.1928 को समाप्त हुआ। इसमें सहायक दान दाताओं की सूची इस प्रकार है –

परोपकारिणी सभा, अजमेर, राजाधिराज नाहर सिंह जी, शाहपुरा, श्रीमान् बाबू सुगन चंद जी, कुँवर सुगुण सिंह जी, कुँवर जवान सिंह जी राणावत, मा. मुरली धर जी, बाबू राम नारायण जी दुगड़, बाबू स्वरूप लाल जी,

बाबू रूप शंकर जी, प्रो. शंभूदयाल जी यज्ञधारी, मा. राम चन्द्र जी, डॉ. नारायण दत्त जी, डॉ. राम नारायण जी, वरदी शंकर जी पोस्टमेन, सक्सेना साहब, भूर सिंह जी सा., चुन्नी लाल जी ठेकेदार, श्रीमती गुलाब कुँवर बाई, श्री नारायण जी दर्जी, श्री भैरव सिंह जी मेनेजर होटल, ठा. जगन्नाथ सिंह जी ढीकड़िया, ठा. महेन्द्र सिंह जी राणावत एवं ठा. लाल सिंह जी शक्तावत। आर्य समाज के सभासदों ने इस हेतु अपने एंक माह के वेतन की आधी राशि प्रदान की थी।

माघ पूर्णिमा सं. 1986 वि. को गुरुकुल, उदयपुर से चित्तौड़गढ़ में ले जाया गया। यहाँ स्थान मिलने में बड़ी कठिनाई हुई। सबसे पहले मेवाड़ के उत्साही क्षत्रिय श्री विजयपुर राव जी ने अपना स्थान देना स्वीकार किया। इस स्थान का नाम विजयाश्रम रखा गया। इसके पश्चात् श्री कजोड़ी मल जी लाठी वकील ने भी अपना मकान किराये पर दिया। इस स्थान का नाम दुर्गाश्रम रखा गया। इन स्थानों पर गुरुकुल का कार्य आसाढ़ कृष्णा 11 संवत् 1986 वि. तक होता रहा। पुष्कल पुरुषार्थ के पश्चात् संवत् 1987 वि. में स्टेशन के समीप भूमि प्राप्त हुई। 11 मार्च सन् 1931 ई. के दिन पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी के कर कमलों द्वारा गुरुकुल भवन का शिलारोपण हुआ। 1 जुलाई सन् 1932 ई. के दिन गुरुकुल भवन का उद्‌घाटन हुआ और गुरुकुल, विजयाश्रम तथा दुर्गाश्रम से उठकर यहाँ आ गया। तब से गुरुकुल यहीं पर संचालित हो रहा है।

समाज मन्दिर के सहन में से शहर तथा महलों में से आने वाले बरसाती जल का नाला निकाल देने के कारण समाज मन्दिर को बहुत हानि पहुँचती थी। कोटिशः धन्यवाद है तत्कालीन युवराज श्री भूपाल सिंह जी को, जिन्होंने कृपापूर्वक पानी के उस बहाव का मार्ग पहले के अनुसार करवा देने की आज्ञा प्रदान कर उस धर्म स्थान की रक्षा की। आर्य समाज के कुछ सदस्यों ने यह सम्मति दी कि आर्य समाज का भवन नगर के एकान्त भाग में

होने से साप्ताहिक अधिवेशनों में सम्मिलित होने वालों की संख्या बहुत थोड़ी हुआ करती है, अतएव नगर के मध्य कोई स्थान मिल जावे तो विशेष लाभ होना संभव है। तदनुसार बनेड़ा राजा सा. से प्रार्थना की गई और उन्होंने अपनी हवेली में अधिवेशन किये जाने की आज्ञा प्रदान की। कुछ समय तक वहाँ अधिवेशन होते रहे। वार्षिक उत्सव शाहपुरा की हवेली में आयोजित किये जाते रहे। सन् 1929–30 ई. में वार्षिक उत्सवों में श्री परमानन्द जी, महोपदेशक शिव शर्मा जी, स्वामी मंगलानन्दपुरी जी, स्वामी कर्मानन्द जी के उपदेश तथा ठाकुर खूबचन्द जी, युगराज सिंह जी, पं. ललिता प्रसाद जी, श्री पन्ना लाल जी पीयूष आदि भजनोपदेशकों की धूम रहीं। उस काल में इस आर्य समाज को उपदेशों से लाभान्वित करने वाले विद्वानों में राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, प्रोफेसर सुधाकर जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी शंकरानन्द जी, स्वामी लक्ष्मणानन्द जी, आर्योपदेशक पं. परमानन्द जी, पं. राम सहाय जी, पं. राम चन्द्र जी देहलवी, भजनोपदेशक चौधरी तेज सिंह जी, छज्जूराम जी प्रेमी, पं. प्रकाश चन्द्र जी कविरत्न आदि का प्रमुख योगदान रहा है। यह वह काल था जब आर्य समाज, उदयपुर का संचालन सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ. आशीर्वादी लाल जी श्रीवास्तव, श्री सुगन सिंह जी कोठारी, श्री शंभू लाल जी यज्ञधारी, प्रो. उमराव सिंह जी, प्रो. शान्ति स्वरूप जी कुलश्रेष्ठ, श्री लाल सिंह जी शक्तावत, डॉ. वख्तावर लाल जी शर्मा, श्री सौभाग्य सिंह जी जैन आदि के द्वारा प्रधान मंत्री या सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में किया जाता रहा था।

सन् 1932 में आर्य समाज उदयपुर में सदस्यों की संख्या 72 थी। इस समय श्री ईश्वर दत्त जी मेधार्थी वेदोपदेशक, प्रचार मंत्री के रूप में आर्य समाज से जुड़े हुये थे। सन् 1933 में श्री माँगी लाल जी आर्य इंदौर निवासी भीलोपदेशक ने 4 माह तक ऋषभदेव, खेरवाड़ा आदि क्षेत्रों में प्रचार कार्य

किया। श्री ईश्वर दत्त जी मेधार्थी उस समय भील विद्या मंदिर समिति, उदयपुर, मेवाड़ के संयोजक थे और मंत्री बाबू रूपशंकर जी शर्मा थे। सन् 1936 में जब प्रधान लाल सिंह जी शक्तावत थे और मंत्री श्री बख्तावर लाल जी, आर्य समाज उदयपुर का 49 वाँ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। हवन का कार्यक्रम प्रातःकाल समाज मंदिर में होता था और व्याख्यान सायंकाल शाहपुरा की हवेली में होते थे। इस उत्सव में पूज्यपाद स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, स्वामी नारायणानन्द जी, पं. धुरेन्द्र जी शास्त्री, पं. सूर्य देव जी, पं. दत्तात्रेय, श्री कर्मवीर, पं. जिया लाल जी, पं. हरिश्चन्द्र जी उपदेशक तथा पं. ओंकार लाल जी व पं. पन्ना लाल जी पीयूष भजनोपदेशक के रूप में पधारे थे। सन् 1939 में हैदराबाद दक्षिण में निजाम के दुराग्रह से जब हिन्दू जाति पर संकट के बादल मंडरा रहे थे, तब आर्य समाज द्वारा छेड़े गये आन्दोलन में आर्य समाज, उदयपुर की ओर से स्वंतन्त्रता सेनानी श्री मोती लाल जी तेजावत, श्री भँवर लाल जी पालीवाल तथा आर्टिस्ट श्री कृष्ण जी पारीक अपनी बलि प्रदान करने हेतु स्वेच्छा से हैदराबाद गये।

हम आर्य समाज उदयपुर में डॉ. बख्तावर लाल जी द्वारा दी गई सेवाओं को स्मरण किये बिना नहीं रह सकते। वे आर्य समाज, उदयपुर में विभिन्न पदों पर रहे। उन्होंने अछूतोद्धार तथा नशा निवारण जैसे कार्यक्रमों को हाथ में लिया। शिक्षा प्रसार का कार्य भी उन्होंने किया। इन योजनाओं का शुभारम्भ फतेह मेमोरियल के पृष्ठ भाग में सलेटिया मैदान में बसी हरिजन बस्ती से और नाड़ाखेड़ा की बस्ती, जहाँ आज बापू बाजार बन गया है, से किया गया। इन हरिजन बस्तियों में शिक्षा प्रसार के कार्य में जिन लोगों का सहयोग मिला, वे थे – पन्ना लाल जी पीयूष व श्री कृष्ण जी पारीक। शाम के समय लालटेन और दरी लेकर प्रचार सामग्री के साथ ये लोग इन बस्तियों में पहुँचते तथा बच्चों बूढ़ों को पढ़ाते थे। पीयूष जी राष्ट्रभक्ति, कुरीति निवारण

तथा समाज सुधार के गीत सुनाते थे। फलस्वरूप अनेक लोगों ने मद्यपान को तिलांजलि दी और अपनी संतानों को पाठशालाओं में भेजने का संकल्प लिया। इस प्रकार के कार्यो के कारण आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को अनेक कष्ट भी झेलने पड़े। जातिगत संकीर्ण दायरे में विश्वास करने वाले समाज के ठेकेदारों ने काष्ठकला उद्योगकर्मी मिस्तरी दौलत राम जैसे व्यक्तियों को जाति से बहिस्कृत कर दिया। डॉक्टर बख्तावर लाल जी की प्रेरणा के फलस्वरूप श्री भेरू लाल जी मेघवाल, बालू लाल जी मेघवाल जैसे उत्साही युवक आर्य समाज के सदस्य बने। उदयपुर में भरे जाने वाले मेलों, सुखिया सोमवार, हरियाली अमावस्या आदि में आर्य समाज का साहित्य निशुल्क बांटा जाता था। इस कार्य में श्री पन्ना लाल जी पीयूष, राधा किशन जी दर्जी (डंडे वाले) श्री अमृत लाल जी सोनी जैसे उत्साही युवकों का सहयोग सदा रहा। आर्य समाज के प्रचारकों, विद्वानों को स्वयं अपने निवास पर आतिथ्य देकर उन्हें बड़ा संतोष होता था। डॉ. साहब के देहान्त के बाद उनके यशस्वी पुत्रों ने आर्य समाज, उदयपुर को बीस हजार रूपये की राशि प्रदान की जिसमें आर्य समाज ने अपनी ओर से राशि मिलाकर डॉक्टर बख्तावर लाल स्मृति भवन (कमरा) का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन दिनांक 05.05.1991 को सम्पन्न हुआ।

पहले जब भी आर्य समाज, उदयपुर का उत्सव होता था, उसके लिये सर्व साधारण से चंदा धन आदि एकत्र नहीं किया जाता था। इसका कारण था कि शाहपुरा के राजाधिराज महाराज नाहर सिंह जी तथा श्री उम्मेद सिंह जी वर्ष में एक बार कुछ दिनों के लिये महाराणा की सेवा में आते थे। उनके साथ आर्य विद्वान राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री सुधाकर जी आदि भी आते थे। उनके परामर्श से आर्य विद्वानों व संन्यासियों, भजनोपदेशकों को बुलाकर, उन्हीं की हवेली में आर्य समाज का उत्सव होता था। उपदेशकों का सत्कार,

दक्षिणा आदि राजाधिराज की ओर से दी जाती थी और प्रबन्ध भी उन्हीं की ओर से होता था। समाज पर व्यवस्था का आर्थिक भार किसी प्रकार का नहीं पड़ता था।

उत्सव में महाराणा के सभी उमराव, जागीरदार, सरदार, प्रजा जन हिन्दू मुसलमान आदि हजारों की संख्या में भाग लेते थे। शाही ठाठ से उत्सव होता था। शंका – समाधान भी होता था। श्री पंडित राम चन्द्र जी देहलवी, पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार, समाधान करते थे। स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, महात्मा नारायण स्वामी जी, चौधरी तेज सिंह जी, पं. प्रकाश चन्द्र जी, पं. पन्ना लाल जी पीयूष आदि आते थे। सन् 1940 ई. के आसपास राजाधिराज शाहपुरा ने उस समय उदयपुर की जागीर को, महाराणा को वापस कर दिया। इससे उनका आना जाना बन्द हो गया, तो उत्सव प्रचार भी बन्द हो गये।

राजस्थान निर्माण के साथ ही आर्य समाज में भी पुनः एक उत्साह की लहर दौड़ गई। आर्य समाज के कार्यक्रमों में शाहपुरा में वैदिक विद्वानों से घुट्टी पाये मेजर दौलत सिंह जी ने अपना योगदान देना प्रारम्भ किया। नित्य नियमानुसार यज्ञ के साथ साथ, नियमित साप्ताहिक अधिवेशनों, पारिवारिक सत्संगों आदि के आयोजनों की शृंखला आरम्भ हुई। शाहपुरावासी श्री भंवरलाल जी जोशी उस समय मंत्री पद पर प्रतिष्ठित थे। श्री ब्रजमोहन जी जावलिया व श्री मदन मोहन जी जावलिया, दोनों भाई इसी काल में सन् 1947 ई. में उदयपुर अध्ययनार्थ आये थे। उन्होंने सदस्य, उपमंत्री, मंत्री आदि के रूप में आर्य समाज की अच्छी सेवा की। दिनांक 29.12.1954 ई. की सूचना के अनुसार आर्य समाज, उदयपुर कार्यालय का स्थानान्तरण पीछोली (भट्टियानी चौहट्टा) से मोती चौहट्टा में राजस्थान बैंक के निकट ईस्ट एंड वेस्ट वाले मकान में किया गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय भी वही चलाया गया।

इसका उद्‌घाटन दिनांक 2 जनवरी 1955 ई. को रविवार प्रातः 9 बजे श्रीमान् कमिश्नर साहब श्री दौलत सिंह जी के कर कमलों से हुआ। आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन भी वही होने लगे।

सन् 1954–55 में सौभाग्य से आर्य समाज, उदयपुर को श्री प्यारे लाल जी चोपड़ा जैसे व्यक्ति का सहयोग मिल गया। वे पंजाब नेशनल बैंक के मेनेजर पद पर प्रतिष्ठित थे। आर्य समाज, उदयपुर में उस समय अर्थ की दरिद्रता को उन्होंने समाप्त किया। उनकी योग्य धर्मपत्नी ने नारी जागृति हेतु महती सेवा की। आर्य समाज की ओर से सिलाई शिक्षण आदि की पाठशाला भी चलाई गई। इस काल में हुये आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों को जनता आज तक याद करती है, जब उन्हें पंडित बुद्धदेवजी विद्यालंकार, पं. राम चन्द्र जी देहलवी, पं. ज्ञानेन्द्र जी सूफी तथा स्वामी कृष्णानन्द जी आदि के धुँआधार व्याख्यानों ने आर्य समाज की शिक्षाओं की ओर आकर्षित किया। अक्टूबर 1955 में ओसवाल नोहरे में पं. बुद्धदेव विद्यालंकार के चार व्याख्यानों को अक्षरशः लिखकर डॉ. मदनमोहन जावलिया ने सार्वदेशिक और आर्य मित्र में 'आर्य समाज का जनाधार और उसके विस्तार की दिशाएं' शीर्षक से प्रकाशित करवाया। श्री चोपड़ा सा. के समय में ही आर्य समाज का पंजाब नेशनल बैंक में खाता खोलने का निर्णय लिया गया। अलीपुरा भीलबस्ती स्कूल के लिये 15/– रूपये मासिक की स्वीकृति प्रदान की गई तथा जाँच करने पर अध्यापक को पाठशाला चलाते नहीं पाने पर बन्द करने का निर्णय लिया गया। आर्य समाज भवन पीछोली में उस समय राजकीय पाठशाला चलती थी जिसका 40/– रूपये मासिक किराया शिक्षा विभाग से मिलता था। अंतरंग की बैठक पंजाब नेशनल बैंक में होती थी। महिला उद्योग शाला मालदास जी की सेहरी में चलती थी।

ईसाई प्रचार निरोध, राष्ट्रभाषा हिन्दी आन्दोलन आदि में आर्य समाज,

उदयपुर को स्वामी वेदानन्द जी द्वारा दिया गया सहयोग सदा स्तुत्य रहेगा। इस युग में डॉ. ब्रजमोहन जी जावलिया, श्री बजरंग पांथीजी, श्री हरिनारायण जी शर्मा, श्री इन्दर लाल जी शर्मा बांदी कुई वाले, श्री लाल चन्द जी कालरा, श्री अर्जुन सिंह जी, मास्टर नंद लाल जी शर्मा, आदि ने आर्य समाज की अच्छी सेवा की। दिनांक 02.09.1956 को आर्य समाज, उदयपुर ने ईसाई प्रचार निरोध सम्मेलन आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता स्वामी वेदानन्द जी ने की। निम्न महानुभावों ने अपनी–अपनी सम्मतियाँ प्रस्तुत की –

1. श्री स्वरूप सिंह जी चूंडावत वकील ने पिछड़े वर्गो में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सुधार ही इस समस्या का समाधान बताया एवं भारतीय विधान में परिवर्तन करना आवश्यक बताया।

2. श्री मदन लाल जी धूपड़ (वकील) ने ईसाईयों द्वारा ग्रामों में दूध एवं घी वितरण को ईसाईयों के प्रचार का साधन बतांया तथा हिन्दुओं को भी यह कार्य अपने हाथ में लेने की प्रार्थना की। मस्तिष्क परिवर्तन को उन्होंने आवश्यक बताया।

3. श्री भानु कुमार जी शास्त्री ने भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना की कमी बताई और कहा कि लोगों में राष्ट्रीयता की भावना भरी जावे। लोग ईसाईयों के स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाना बन्द करें।

4. ब्रह्मचारी आत्मानन्द जी ने विभिन्न मार्गो पर चलने वाली हिन्दू जाति को एक ही सीधा सच्चा वैदिक धर्म अपनाने की सलाह दी। पत्थरों पर सिर पटकना अहितकर बताया। हिन्दू जाति को स्वयं को चैतन्य होना आवश्यक बताया। इससे ईसाई अपना प्रचार अपने आप बन्द कर देंगे। हमें पिछड़े वर्गो का आदर करना सीखना चाहिये।

5. स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती ने कहा कि हमें अपने ढोंग तोड़ने पड़ेंगे और साथ ही ईसाई पादरियों के प्रचार गढ़ तोड़ने पड़ेंगे। नियोगी

कमीशन की रिपोर्ट ईसाईयों की पोल खोलने के लिये बहुत है। अपने बच्चों को ईसाई स्कूलों में मत भेजो। अपने स्कूल खोलो। स्वामी जी ने इस हेतु एक समिति के निर्माण की सम्मति दी। नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलने के लिये जो समिति बनाई गई उसके सदस्य थे –

1. श्री अर्जुन सिंह जी
2. श्री मदन लाल जी धूपड़
3. श्री महाराज किशन चन्द जी
4. श्री स्वरूप सिंह जी चूंडावत
5. श्री भानुकुमार जी
6. श्री ब्रजमोहन जी जावलिया, मंत्री– आर्य समाज उदयपुर

(कन्वीनर) श्री प्यारे लाल जी चोपड़ा एवं स्वामी वेदानन्द जी महाराज को मार्ग प्रदर्शक के रूप में इस समिति में रखा गया।

दिनांक 31.09.1956 को "प्रभात विद्यालय" खोलने का निश्चय किया गया जिसकी संचालन समिति इस प्रकार गठित की गई–

स्वामी वेदानन्द जी– संरक्षक

डॉ. हरिलाल जी (उडेरा लाल होमियोपेथिक अस्पताल)– प्रधान

मास्टर साहब बलवंत सिंह जी– प्रधानाध्यापक

श्री ब्रजमोहन जी जावलिया– मंत्री

श्री गणेश लाल जी– कोषाध्यक्ष

समिति के अन्य सदस्य– प्रोफेसर उमराव सिंह जी
प्रोफेसर श्याम स्वरूप जी कुलश्रेष्ठ
श्री हरि नारायण जी शर्मा
श्री चुन्नी लाल जी कपूर
श्री अनिल कुमार जी शर्मा

यह निर्णय किया गया कि आर्य समाज भवन में अभी जो राजकीय स्कूल चलता है उसे खाली करवा कर, उसी में प्रभात विद्यालय चलाया जावे। स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने सितम्बर 1956 से फरवरी 1957 तक उदयपुर में रहकर कार्य किया।

सन् 1956 में आर्य समाज, उदयपुर के अन्तर्गत "आर्य कुमार परिषद" संचालित होती थी। इसके प्रधान श्री कैलाश चन्द्र जी मेघवाल थे। उन्होंने 10.01.1956 को आर्य कुमार परिषद से एक प्रस्ताव पारित कर परिषद के लेटर पेड पर हरिजन सेवक संघ, उदयपुर को भेजा। प्रस्ताव इस प्रकार था "आर्य कुमार परिषद आज की अंतरंग की बैठक में, हरिजन सेवक संघ, उदयपुर द्वारा उठाये गये हरिजनों के मन्दिर प्रवेश कदम की सराहना करती है। चुँकि उसके मूल में छुआछूत को समाप्त करने की भावना है जो महर्षि दयानन्द द्वारा प्रारम्भ की गई, सामाजिक क्रान्ति को बल प्रदान करती है। परिषद अस्पृश्यता निवारण सम्बन्धी अभियान में सदैव अपना सहयोग देने को तत्पर रहेगी"। यही कैलाश चन्द्र जी मेघवाल आगे जाकर राजस्थान सरकार में गृह मन्त्री बने और वर्तमान में संसद सदस्य हैं। आर्य समाज प्रांगण में उत्तर दिशा में एक खुला चबूतरा था। उस पर टिनशेड लगाकर यज्ञशाला और सभा भवन बनवाया गया। मंत्री श्री ब्रजमोहन जावलिया और श्री हरिनारायण शर्मा ने यह कार्य संपन्न करवाया।

आर्य समाज पीछोली, उदयपुर के प्रांगण में एक कुँआ था। उसे बन्द करा देने का निर्णय लिया गया। दिनांक 01.09.1956 को आर्य समाज में नल लगवाने का भी निर्णय हुआ। दिनांक 14.05.1956 को महाराणा भूपाल इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी लिमिटेड से आर्य समाज में बिजली का कनेक्शन लेने का निर्णय लिया गया।

आर्य समाज का सौभाग्य है कि इसके घोषित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु

सुयोग्य नवयुवक स्वतः ही इसकी ओर चले आते है। श्री जयसिंह जी महता, ठा. बलवंतसिंह जी, डॉ. हरिलाल जी ठकुर, श्री हरिनारायण जी शर्मा, श्री लालचन्द्र जी कालरा, डॉ. ब्रजमोहन जी जावलिया, श्री अनिलकुमार जी शर्मा जैसे पुराने कर्मठ कार्य कर्ताओं के रहते, एक नौजवान पीढ़ी ने आर्य समाज को संभालने का दायित्व लिया। डॉ. प्रेमचन्दजी गुप्त, डॉ. अमृतलाल जी तापड़िया, डॉ. सुरेन्द्रसिंह जी राठौड़, डॉ. भँवरलाल जी पोरवाल, श्री शंकरलालजी मरमट, श्री किशनलाल जी चौहान, श्री सुरेशचन्द्र जी गुप्ता आदि की सेवायें चिरस्मरणीय रहेंगी। इन्ही के अदम्य साहस का परिणाम है कि स्वल्पकाल में ही कई महत्वपूर्ण कार्य इनकी देखरेख में सम्पन्न हो गये। कुछ समय से अवरुद्ध हुए वार्षिकोत्सवों का पुनः आयोजन, यज्ञशाला निर्माण, सभाभवन निर्माण, हिरणमगरी में योग प्रशिक्षण केन्द्र, यज्ञ शाला निर्माण आदि कार्य इन्हीं कर्मठ कार्यकर्ताओं के सतत् प्रयास का सुफल हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी जैसे विशाल महोत्सव का आयोजन कर इन्होंने दिखा दिया कि यदि कोई दृढ़ संकल्प व्यक्ति किसी कार्य को अपने हाथ में ले ले तो कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो उसमें बाधक बन सके।

दिनांक 18.09.1964 को "आर्य समाज रेलवे कॉलोनी" उदयपुर खोला गया। यज्ञ के पश्चात् पंडित पन्नालाल जी पीयूष एवं पंडित विद्याशंकर जी शास्त्री के भजन हुये। प्रवचन स्वामी व्रतानन्द जी एवं श्री मदनमोहन जी जावलिया के हुये। धन्यवाद डॉ. ब्रजमोहन जी जावलिया ने दिया। इसकी निम्नलिखित कार्यकारिणी गठित की गई–

अध्यक्ष –	श्री आर.के. मेहरा
उपाध्यक्ष –	श्री जसवन्त सिंह
उपाध्यक्ष –	श्री पचौरी
मंत्री –	श्री भैरू सिंह

उपमंत्री – श्री जटाशंकर

प्रचार मंत्री – श्री मोहन लाल

कोषाध्यक्ष – श्री मोहन दास

सदस्य – श्री गणेश लाल

श्री नन्द लाल

कर्मठ कार्यकर्ताओं के अभाव में आर्य समाज रेलवे कॉलोनी अल्पायु ही रहा। श्री भंवरलाल जी जोशी और श्री श्रीकृष्ण पारीक ने मीरा गर्ल्स कालेज के समीप और अशोकनगर में भी आर्य समाज संचालित किये, पर वे भी अस्थायी ही रहे।

सन् 1963 तक आर्य समाज, पीछोली, उदयपुर में स्कूल चलता था, बिजली नही थी तथा लोग कचरा डालते थे।' पुस्तकालय भी डॉ. हरिलाल जी ठकुर के उडेरा लाल होमियोपेथिक अस्पताल पर ही चलता था। 27.12.1964 को स्कूल खाली करा दिया गया, पानी का मीटर व बिजली का फिटिंग करवा कर पानी बिजली चालू कर दिये गये। भवन के हालों को 10 कमरों में परिवर्तित करवा दिया गया। दो स्नानघर, दो शौचालय व एक पेशाबघर की मरम्मत करवाई गई। आर्य समाज की आर्थिक स्थिति उस समय ठीक नहीं थी। श्री उदयलाल जी ठेकेदार ने अपने पास से पैसे लगाकर यह सब कार्य करवाया, जिसमें 6000.00 रूपये लगे। आर्य समाज के सदस्यों यथा ठा. बलवन्त सिंह जी, श्री प्रेम चन्द जी गुप्त, श्री अमृत लाल जी तापड़िया, श्री सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़, श्री हरिनारायण जी शर्मा ने आर्य समाज को राशि ऋण स्वरूप प्रदान की, जिससे ठेकेदार को भुगतान किया गया। इन सब कार्यो में श्री अनिल कुमार जी शर्मा का अपूर्व योगदान रहा।

सन् 1965 में आर्य समाज का पुस्तकालय, उडेरा लाल होमियोपैथिक अस्पताल से आर्य समाज भवन में लाया गया। शिव रात्रि पर कैलाशपुरी

जिसको एकलिंग जी भी कहते है, में भव्य मेला लगता है। यह वही स्थान है जहाँ की गद्दी मेवाड़ के महाराणा ने स्वामी दयानन्द जी महाराज को देने का प्रस्ताव किया था। आर्य समाज, उदयपुर ने ऋषि बोधोत्सव पर्व वहीं जाकर मनाया। आर्य समाज का टेन्ट लगा, यज्ञ, भजन, प्रवचन वैदिक साहित्य की बिक्री तथा वैदिक ट्रेक्ट्स का निशुल्क वितरण कर धुँआधार प्रचार किया। सभी सदस्यों का वहीं सहभोज भी हुआ। शिव रात्रि पर कैलाशपुरी जाकर प्रचार करने का यह क्रम कई वर्षों तक चला। आर्य समाज उदयपुर का 82 वाँ वार्षिकोत्सव 9 मई से 12 मई सन् 1965 को बहुत धूमधाम के साथ मनाया गया। इसमें यज्ञ स्वामी श्री मेघार्थी जी हरिद्वार द्वारा सम्पन्न करवाया गया। स्वामी व्रतानन्द जी (चित्तौड़), स्वामी वेदानन्द जी (श्री गंगानगर), स्वामी सर्वदानन्द जी (मध्यप्रदेश), कुँवर सुख लाल जी आर्य मुसाफिर सितारे हिन्द (बुलन्दशहर), श्री विद्याशंकर जी शास्त्री (संगीत रत्न, बाइबिलाचार्य, आलिम फाजिल, हाफिजे कुरान), डॉ. सूर्यदेव जी (अजमेर) एवं पं. पन्ना लाल जी पीयूष अजमेर ने व्याख्यानों एवं भजनोंपदेशों के द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तों का बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रचार किया। वार्षिकोत्सवों का यह क्रम अनवरत चलता रहा। इनके माध्यम से उदयपुर की जनता को श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रेम, आचार्य श्री कृष्ण जी, पंडित वाचस्पति जी शास्त्री, शांति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, श्री कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री, श्री कृष्णपाल सिंह जी, आचार्य वेद प्रिय जी, पं. विश्व बंधु जी शास्त्री, श्री जोरावर सिंह जी, श्रीमती प्रभा जी, श्री ओम प्रकाश जी वर्मा आदि विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के विचार सुनने को मिले। ये वार्षिकोत्सव ओसवाल भवन या पंचायती नोहरे में मनाये जाते थे। प्रत्येक उत्सव में भव्य शोभायात्रा उदयपुर नगर में निकाली जाति थी। शोभायात्रा के अन्दर महिलाओं द्वारा वेद मंत्रों से यज्ञ करते हुये चलने की झाँकी विशेष आकर्षण का केन्द्र हुआ करती थी। वार्षिकोत्सव में

आर्य समाज द्वारा वैदिक साहित्य की बिक्री भी की जाती थी। आर्य समाज उदयपुर के एक वार्षिकोत्सव की शोभा तो उस समय के महामहिम उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती जी ने भी पधार कर एवं उदयपुरवासियों को संबोधित कर बढ़ाई थी। इस अवधि में वार्षिकोत्सव तो मनाये ही गये, इसके अतिरिक्त साप्ताहिक अधिवेशन, पारिवारिक सत्संग, परिवारों में संस्कार आदि सम्पन्न करवाने, सभी पर्व उल्लासपूर्वक मनाये जाने, वेद प्रचार सप्ताह मनाने, वैदिक साहित्य बिक्री, पुस्तकालय, वाचनालय आदि सभी कार्य सुव्यस्थित ढंग से चले। इन सब कार्यो में कृषि विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की टीम व उनके विद्यार्थियों का अच्छा योगदान रहा। डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त ने इस अवधि में कई टेक्टस निकाले, उदाहरणार्थ "कुचल दो ईसाइयत के इस विषेले फन को" "वेदों का परिचय", "यज्ञ–एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण", "आर्य समाज मान्यता शतक", "चाय कॉफी–सर्वथा त्याज्य", "मदिरापान–सर्वथा त्याज्य", "धूम्रपान – सर्वथात्याज्य", "मांसाहार – सर्वथा त्याज्य" आदि। इन टेक्टस की हजारों प्रतियाँ आर्य समाज उदयपुर द्वारा निशुल्क वितरण कर अभिनव प्रचार कार्य किया गया।

"दृष्टिकोण" पत्र के सम्पादक श्री भेरू लाल जी मेघवाल द्वारा उनके ग्राम मझावड़ा में मेधवाल सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें उदयपुर आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने उसमें सम्मिलित होकर यज्ञ, व्याख्यान, भजन आदि के द्वारा वैदिक धर्म, समाज सुधार, कुरीति निवारण आदि पर अच्छा प्रकाश डाला तथा सहभोज आदि के द्वारा एकता के सूत्र में बंधने का विचार प्रशस्त किया।

इसी काल में आर्य समाज, उदयपुर को वेद प्रचार सप्ताह या अन्य अवसरो पर कई विद्वानों का आतिथ्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिन्होंने उदयपुर में वेद ज्ञान की धारा को प्रवाहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इनमें से कुछ विद्वान है – स्वामी विशुद्धानन्द जी (बम्बई), स्वामी व्रतानन्द जी

परिव्राट, सुश्री मीरा यतिजी, स्वामी विजयानन्द जी, स्वामी कृष्णानन्द जी अहमदाबाद, स्वामी ओमानन्द जी (मनधारा प्रपात इंदौर), स्वामी केवलानन्द जी, स्वामी शान्तानन्द जी, श्री ओम भक्त जी, जगदीश प्रसाद जी वैदिक, श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश आदि।

स्वामी सोमानन्द जी सरस्वती ने एक पखवाड़े तक उदयपुर में बिराज कर लोगों को जलनेति, सूत्रनेति, कुंजर क्रिया, आसन, प्राणायाम आदि सिखाये तथा अस्थल मंदिर, कृषि महाविद्यालय, प्रसार शिक्षा निदेशालय, शक्ति नगर तथा नगर के विभिन्न क्षेत्रों में व्याख्यान दिये। उनकी संगीतमयी राम कथा तथा संगीतमयी दयानन्द जीवन गाथा ने लोगों को बहुत प्रभावित किया। 75 वर्ष की आयु में भी उनका स्वास्थ्य, उनकी स्मरणशक्ति एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार सब कुछ बड़ा प्रेरणादायक थां।

प्रचार प्रसार के उद्‌देश्य से अधिकतर कार्यक्रम आर्य समाज भवन के बाहर ही आयोजित किये जाते थे। जहाँ वार्षिकोत्सव के लिये ओसवाल भवन एवं पंचायती नोहरा चुना जाता था, वहीं वेद प्रचार सप्ताह के लिये अग्रवालों का नौहरा पंसदीदा स्थान था तथा मुखर्जी चौक (चूड़ीघरो की मसजिद) अन्य अवसरों पर पधारने वाले विद्वानों के व्याख्यानों के लिये सर्वप्रिय स्थान था। इनके अतिरिक्त कोलपोल, धानमंडी आदि स्थानों पर भी विद्वानों के व्याख्यान करवाये जाते थे। ये सारे ही स्थान उदयपुर के बाजारों के बीच में पड़ते थे। अतः प्रचार करवाकर बड़ी संतुष्टि मिलती थी। हम डॉ. कृष्णबल्लभ जी पालीवाल के मार्गदर्शन को सदैव याद रखेंगे। क्योंकि उन्होंने ही कृषि विश्वविद्यालय की नई टीम को आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ाने के विभिन्न गुर बताये।

आर्य समाज भवन में आयुर्वेद कॉलेज का छात्रावास चला करता था। सत्संग भवन की छत पर टीन के पतरड़े थे। बरसात में पानी टपकने लग जाता था। अलग से कोई यज्ञशाला नहीं थी। ईश्वर की कृपा से आर्य समाज को

प्रकाश वाच के मालिक श्री कर्म चन्द जी वाधवानी के रूप में दानदाता मिला और उनके सात्विक दान से यज्ञशाला का निर्माण हुआ, जिसका भव्य उद्घाटन पं. वीरसेन जी वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य के द्वारा ऋषि बोधोत्सव पर्व पर दिनांक 25. 02.1979 को सम्पन्न हुआ। झंडारोहण स्वामी व्रतानन्द जी (गुरुकुल चितौड़) के द्वारा किया गया। यज्ञ पंडित वीरसेन जी वेदश्रमी (इंदौर) के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। भजन, आदिवासी कन्या छात्रावास की बालिकाओं, श्री किशन लाल जी चौहान तथा श्री इंद्रदेव जी द्वारा प्रस्तुत किये गये। पंडित वीरसेन जी एवं ब्रह्मचारी राम किशन जी के प्रवचन हुये। स्वागत श्री जय सिंह जी महता विद्यालंकार व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त द्वारा किया गया। इस उद्घाटन समारोह में लगभग 500 लोग उपस्थित थे। समारोह के पश्चात् सहभोज हुआ। बुजुर्ग पीढ़ी एवं युवा पीढ़ी के सामंजस्य ने आर्य समाज, उदयपुर में ऐसा उत्साह पैदा किया कि अंतरंग की बैठकों में यह विचार होने लगा कि सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का अर्न्तराष्ट्रीय समारोह उदयपुर में मनाया जाना चाहिये, क्योंकि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का पूर्ण संशोधन यहीं पर करके भूमिका में स्थान "महाराणाजी का उदयपुर" का उल्लेख किया है। जब प्रस्ताव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, जयपुर को भेजा गया तो एक सम्मिलित बैठक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान तथा आर्य समाज, उदयपुर की, उदयपुर में रखी गई और समस्त पहलुओं पर विस्तार से विचार–विमर्श किया गया। यह बैठक देवस्थान विश्रान्ति गृह में हुई। आर्य समाज उदयपुर के कार्यकर्ताओं ने विचार–विमर्श में सभा के अधिकारियों को आश्वस्त कर दिया और सैद्धान्तिक रूप से यह निर्णय हो गया कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्यार्थप्रकाश शताब्दी का आयोजन उदयपुर में ही किया जाय।

दिनांक 10.02.1980 को सांयकाल 4.30 बजे निम्नांकित व्यक्तियों का

प्रतिनिधिमंडल महाराणा साहब उदयपुर श्री भगवत सिंह जी से मिला।

1. श्री राम गोपाल जी शालवाले, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा, दिल्ली,
2. श्री ओम प्रकाश जी त्यागी, महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
3. श्री सोमनाथ जी मरवाहा, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
4. श्री छोटू सिंह जी एडवोकेट, उपप्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली एवं पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान,
5. डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त, प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर,
6. श्रीमती कुसुम लता जी नैयर, सदस्य, आर्य समाज, उदयपुर
7. डॉ. सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़, सदस्य, आर्य समाज, उदयपुर

आर्य समाज के प्रतिनिधि मंडल का स्वागत करते हुये महाराणा साहब ने कहा कि हमें तो नित्य ही वेद मंत्रों की ध्वनि सुनाई देती है। इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश जी त्यागी एवं डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त द्वारा आर्य समाज, उदयपुर की ओर से एक बड़ी साइज का सत्यार्थ प्रकाश, महाराणा साहब को भैंट किया गया। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित भूमिका में "स्थान–महाराणा जी का उदयपुर" अंकित शब्दों को महाराणा साहब को दिखाया। सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के विषय में श्री ओम प्रकाश जी त्यागी ने महाराणा साहब को विस्तार से बताया, जिस पर महाराणा साहब ने प्रसन्नता व्यक्त की। महाराणा साहब को स्वागताध्यक्ष बनने के लिये निवदेन किया गया जिसकी उन्होंने स्वीकृति दी। साथ ही यह भी कहा कि एक पत्र आप भिजवा देना ताकि लिखित स्वीकृति दी जा सके। जब प्रतिनिधि मंडल

ने यह कहा कि उत्सव 1981 के अक्टूबर माह में आयोजित करने का निश्चय किया है तो महाराणा साहब ने सुझाव दिया कि अक्टूबर माह उपयुक्त नहीं रहेगा, क्योंकि उस समय वर्षा हो जाया करती है और स्कूल आदि भी खाली नहीं मिलेंगे। इसके लिये उन्होंने अप्रेल मई के समय का सुझाव दिया जो सभी को पसन्द आया। उन्होंने बताया कि पानी की, यहाँ कोई समस्या नहीं आयेगी और उस समय स्कूल, छात्रावास आदि सब खाली मिलेंगे। महाराणा साहब ने त्यागी जी को कहा कि जब भी वे उदयपुर पधारे, बिना मिले नहीं जावें। महाराणा साहब ने सभी को जलपान करवाया। सभी महाराणा साहब को धन्यवाद देकर वहाँ से विदा हुये।

सार्वेदेशिक सभा की एक बैठक आर्य समाज, उदयपुर भवन में हुई। उसमें उत्सव की तिथियों को अन्तिम रूप दिया गया। समारोह की तिथियाँ 16,17,18 अक्टूबर 1981 तय की गई। आर्य समाज, उदयपुर ने सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह हेतु एक लाख रुपये की राशि एकत्र कर देने की बात कही। शेष राशि आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान एवं सार्वदेशिक सभा जुटायगी, ऐसा तय हुआ। रसीद बुकें सार्वेदशिक सभा प्राप्त करवायेगी। समारोह स्थल भंडारी दर्शक मंडप रखने का तय हुआ, जिसका सभी सदस्यों ने जाकर अवलोकन किया। समारोह की विभिन्न व्यवस्थाओं का जिम्मा स्थानीय आर्य समाज को सौंपा गया। समारोह की रूपरेखा, विद्वानों, अतिथियों को आमंत्रण भेजना तथा सभा के पत्र द्वारा पब्लिसिटी का जिम्मा सार्वदेशिक सभा का रहा। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा भी अपने सभा के पत्र द्वारा इस आयोजन को सफल बनाने हेतु पूरा प्रयास करेगी ऐसा तय हुआ। एक ऐतिहासिक निर्णय जो इस बैठक में हुआ वह यह था कि सार्वदेशिक सभा पं. सत्यकेतु जी द्वारा आर्य समाज का इतिहास लिखवायेगी। डॉ. सत्यकेतु जी द्वारा जो रूपरेखा इतिहास की प्रस्तुत की गई, उसका अनुमोदन सभा द्वारा यहीं पर किया गया।

आर्य समाज, उदयपुर के ऊपर जो गुरुतर भार दोनों सभाओं ने डाला, उसको किस तरह सुचारू रूप से सम्पन्न किया जाय, इस हेतु एक कार्यालय की स्थापना भंडारी दर्शक मंडप में की गई तथा प्रतिदिन निश्चित समय पर मिलने का कार्यक्रम स्थल आदिवासी कन्या छात्रावास रखा गया। सत्यार्थप्रकाश समारोह हेतु विभिन्न समितियों का गठन किया गया जो इस प्रकार थी–

क्रं.	समिति	संयोजक	सहयोगी
1.	बिजली, पानी माइक	डॉ. अमृतलाल तापड़िया	1. श्री सम्पतलाल तापड़िया 2. श्री भँवरलाल गर्ग 3. श्री देवेन्द्र मेहता
2.	पंडाल	श्री हरिनारायण शर्मा	1. श्री राजेन्द्रकुमार शर्मा 2. श्री सुरेशचन्द्र चौहान
3.	धनसंग्रह	श्री उमरावसिंह भटनागर	1. श्री जय सिंह मेहता 2. डॉ. अमृतलाल तापड़िया 3. श्री हरिनारायण शर्मा 4. श्री मनुराम 5. श्री भँवरलाल जोशी
4.	ऋषि लंगर	डॉ. राधेश्याम जी	1. श्री कन्हैया लाल राजौरा 2. श्री सोमदत्त शर्मा (जयपुर) 3. श्री अमरसिंह आर्य (अलवर) 4. श्री महेन्द्र सिंह मौर्य 5. श्री उमेश गर्ग 6. श्री राजीव तिवारी 7. श्री दिनेश गर्ग 8. श्री हीरालाल मस्ताना(अलवर)

5.	पूछताछ	श्री शंकरलाल मरमट	1. श्री हीरालाल सांचोरा
			2. श्री मनुराम
			3. श्री ब्रह्मस्वरूप रस्तोगी
			4. श्री शार्दूलचन्द्र
6.	यज्ञ	श्री गोपाल भाई	1. श्री अमृतलाल सोनी
			2. श्री देवेन्द्र मेहता
			3. श्री राजेन्द्रकुमार शर्मा
			4. पंडित राजगुरु
7.	आवास	डॉ. सुरेन्द्रसिंह राठौड़	1. श्रीमती स्नेहलता गुप्ता
			2. श्री कृष्णकुमार सोनी
			3. श्री नटवरलाल जोशी
			4. श्री शार्दूलचन्द्र
			5. श्री मूलाराम
8.	शोभायात्रा	श्री श्यामलाल मोटवानी	1. श्री ज्ञानप्रकाश शर्मा
			2. श्री गिरधारीलाल आर्य
9.	प्रचार	श्री लालचन्द कालरा	1. श्रीमती लीलावती कालरा
			2. डॉ. भँवरलाल पोरवाल
10.	स्टेज नियंत्रण	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	1. श्री कृष्णकुमार सोनी
11.	स्मारिका	डॉ प्रेमचन्द गुप्त	1. श्री पृथ्वीसिंह मेहता
			2. डॉ. अमृतलाल तापड़िया
			3. डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
			4. डॉ. सुरेन्द्रसिंह राठौड़
			5. श्री भगवती प्रसाद
			6. श्री महेन्द्रसिंह भटनागर

सार्वदेशिक सत्यार्थ प्रकाश समारोह, उदयपुर के पदाधिकारी इस प्रकार बनाये गये –

1.	प्रमुख संरक्षक	श्री महाराणा भगवतसिंह, उदयपुर
2.	अध्यक्ष	श्री राम गोपाल शालवाले (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)
3.	स्वागताध्यक्ष	श्री छोटू सिंह (संयोजक, समारोह)
4.	अधिष्ठाता	पं. रवि दत्त वैद्य (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान)
5.	स्वागत मंत्री	श्री भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान) प्रो. नेतिराम शर्मा (उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान) श्री जयसिंह महता, विद्यालंकार (प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर) डॉ. अमृतलाल तापड़िया (मंत्री, आर्य समाज, उदयपुर)
6.	कोषाध्यक्ष	श्री हेतराम आर्य (कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान) श्री हरिनारायण जी शर्मा (कोषाध्यक्ष, आर्य समाज, उदयपुर)
7.	प्रचार मंत्री	प्रो. सत्यव्रत, जयपुर प्रो. विजयबिहारी लाल माथुर, जयपुर

समारोह का विवरण

(प्रथम दिवस, दिनांक 16 अक्टूबर, 1981)

यज्ञ :

समारोह का शुभारंभ "सत्यार्थभृत यज्ञ" के साथ हुआ। यज्ञशाला में 11 वेदियाँ बनाई गई थी। मध्यवेदिः का नाम समीक्षा वेदिः रखा गया था। इसके अतिरिक्त नाम वेदिः, शिक्षा वेदिः, विद्या वेदिः, गृहमेध वेदिः, सर्वमेध वेदिः, राष्ट्र वेदिः, ब्रह्म वेदिः, सर्ग वेदिः, अपवर्ग वेदिः एवं आचार्य वेदिः बनाई गई थी। इस यज्ञ के अध्यक्ष स्वामी दीक्षानन्द जी थे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश थे। पाणिनी कन्या महाविद्यालय की आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी जी, पं. राजगुरू जी, गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के पं. भीमसेन जी वेदवागीश, कन्या गुरुकुल दधिया की आचार्या श्रीमती सुशीला देवी जी ऋत्विज थे। पाणिनी कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों ने मंत्रोचारण किया।

ध्वजारोहण :

यज्ञ के पश्चात् स्वामी ओमानन्द जी ने ध्वजारोहण किया और कहा कि सत्यार्थप्रकाश में प्राणी मात्र के हित निहित है।

शोभायात्रा :

दोपहर को विशाल शोभायात्रा महाराणा सज्जनसिंह द्वार से प्रारम्भ हुई। उदयपुर के इतिहास में लोगों को आज पहली बार इतनी अभूतपूर्व विशाल रेली देखने को मिली। शोभायात्रा दो किलोमीटर लम्बी थी जिसमें लगभग 30 हजार आर्य थे। इस भव्य शोभायात्रा में सबसे आगे कन्या गुरुकुल बड़ौदा की 10 छात्रायें घोड़ो पर सवार थी, जिनके पीछे ऊँट, हाथी, जीप आदि

चल रहे थे। जुलूस के मध्य में एक सजी हुई बग्घी में अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी शालवाले, स्वागताध्यक्ष श्री छोटू सिंह जी तथा श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी थे। जुलूस के स्वागतार्थ नगर के कई संगठनों एवं व्यापारियों ने तोरण द्वारा बनाये, पुष्प वर्षा की एवं शीतल पेय की व्यवस्था की। शोभायात्रा में विभिन्न स्थानों से आये नर, नारी, बच्चे अपनी पारम्परिक वेशभूषा में थे तथा ईश्वर भजन, ऋषि दयानन्द के गुणगान तथा जय जयकार करते हुये चल रहे थे। ऐसे वातावरण ने नगरवासियों को आल्हादित कर दिया। आर्यवीर दल की विभिन्न टोलियों ने अद्भूत व्यायाम प्रदर्शन कर लोगों को मुग्ध कर दिया। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट का सत्यार्थ प्रकाश वाहन शोभा यात्रा में सत्यार्थप्रकाश की महिमा बता बता कर उसे खरीदने के लिये आव्हान कर रहा था और बड़े प्रेम और उत्साह से लोग सत्यार्थ प्रकाश खरीद रहे थे। पूरी शोभा यात्रा देखने में लोगों को लगभग दो घंटे लगे। शोभायात्रा श्रद्धानन्द द्वार पर जाकर समाप्त हुई। शोभा यात्रा का संयोजन श्री श्याम लाल जी मोटवानी ने किया।

रात्रिकालीन अधिवेशन का संयोजन श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने किया। पंडित पन्नालाल जी पीयूष एवं उनकी मंडली ने भजन प्रस्तुत किये। सत्यार्थप्रकाश समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी शालवाले का सभी प्रांतीय सभा के प्रधानों श्री छोटू सिंह जी, श्री ओम प्रकाश जी त्यागी, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री दलबीर सिंह जी, श्री जयसिंह जी मेहता प्रधान, आर्य समाज उदयपुर, मंत्री डॉ. अमृत लालजी तापड़िया, महिलाओं की ओर से श्रीमती कुसुम लता जी नैयर एवं विदेशों के प्रतिनिधि के रूप में नैरोबी के श्री सत्यपाल जी वेद शिरोमणि ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। स्वागताध्यक्ष श्री छोटू सिंह जी ने स्वागत भाषण दिया। श्री दलबीर सिंह जी, केन्द्रीय पेट्रोलियम एवं रसायन राज्य मंत्री ने सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया। इसी अवसर पर जूनागढ़ के एक प्रज्ञाचक्षु व्यक्ति श्री कालिदास जी द्वारा ब्रेल लिपि में बनाये गये सत्यार्थ प्रकाश का अध्यक्ष श्री

रामगोपाल जी शालवाले द्वारा विमोचन किया गया। श्री कालिदास जी ने इस सत्यार्थ प्रकाश का एक पृष्ठ निकालकर उसमें लिखे संस्कृत के श्लोकों एवं गद्य अंश को जिस खूबी के साथ पढ़कर सुनाया, उसे देखकर पूरा जन समूह आश्चर्य एवं प्रसन्नता में डूब गया और करतल ध्वनि कर उनका उत्साहवर्धन किया। प्रसन्नता की दूसरी लहर उस समय दौड़ गई जब श्री त्यागी ने घोषणा की कि सार्वदेशिक संभा ब्रेल लिपि में लिखे इस सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन करेगी। श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले द्वारा सम्पादित एवं विद्वानों द्वारा लिखित सत्यार्थप्रकाश के 14 समुल्लासों पर 15 लघु पुस्तिकाओं (ट्रेक्ट्स) का विमोचन अध्यक्ष जी द्वारा इस अवसर पर किया गया इसके बाद माननीय अध्यक्ष जी ने अध्यक्षीय भाषण दियां

द्वितीय दिवस दिनांक 17 अक्टूबर 1981

प्रातःकाल सत्यार्थभृत यज्ञ के अवसर पर सोजत सिटी के 20 वर्षीय बाबू खाँ ने अपनी माँ व छोटे भाई सहित वैदिक धर्म की दीक्षा ली। उनका नाम बाबूलाल आर्य रखा गया।

इसी अवसर पर उदयपुर, बाँसवाड़ा, कुशलगढ़ एवं कपासन के एक सौ हरिजन एवं आदिवासियों को स्वामी दीक्षानन्द जी ने यज्ञोपवीत धारण करवाया। इसी अवसर पर पाणिनी कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी जी ने 251 महिलाओं व बच्चों को यज्ञोपवीत धारण करवा कर वैदिक धर्म के प्रति आस्था व्यक्त करवाई।

वेद सम्मेलन : (यज्ञ के पश्चात्)

संयोजक : पं. सत्यानन्द वेदवागीश

अध्यक्ष : आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

वक्ता : 1 पं. योगेन्द्र कुमार
(प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर)
2. आचार्य सत्यप्रिय व्रती, व्याकरणाचार्य लाडवा,

जि. कुरुक्षेत्र

3. आचार्या डॉ. प्रज्ञा देवी, पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
4. पं. पृथ्वीराज शास्त्री, दिल्ली
5. पं. सत्यपाल वेद शिरोमणि, नैरोबी
6. आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, बड़ौदा

पंडित सत्यपाल का कहना था कि विदेशों में लोग वेद पढ़ने के लिये लालायित हैं। हमें वेदों को विदेशी भाषाओं में अनुदित करवाकर उपलब्ध करवाने की व्यवस्था करनी चाहिये।

धर्म रक्षा महाअभियान सम्मेलन : (दोपहर को)

संयोजक : डॉ. प्रेमचन्द गुप्त, उप–प्रधान आर्य समाज, उदयपुर

अध्यक्ष : श्री पृथ्वीसिंह आजाद, उप–प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

उदघाटन : श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् द्वारा

वक्ता :
1. श्री पृथ्वीसिंह आजाद, दिल्ली
2. श्री जयप्रकाश आर्य (बेतिया, पश्चिमी चम्पारण, बिहार मुसलिम परिवार के भूतपूर्व इमाम खुर्शीद आलम)
3. डॉ. आनन्द सुमन (बुलंदशहर जिले के नवाब छत्तारी के पौत्र)
4. मेवाड़ मण्डलेश्वर निम्बार्काचार्य महन्त श्री मुरली मनोहर शरण, उदयपुर
5. श्री ओम प्रकाश त्यागी, दिल्ली

श्री त्यागी जी ने विदेशी धन एवं षड़यंत्रों को रोकने की अपील की। श्री जयप्रकाश जी एवं डॉ. आनन्द सुमन जी ने इस्लामी संगठनों के द्वारा निर्णीत षड़यंत्रों का भांडाफोड़ करते हुये राष्ट्र को सजग रहने की अपील की। महन्त जी ने कहा कि भारतीय समाज अपने मूल तत्वों से दूर होता जा रहा हैं। इन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने का अभियान प्रारंभ होना चाहिये।

प्रदर्शनी अवलोकन : (सायंकाल)

परोपकारिणी सभा अजमेर के मंत्री श्री श्रीकरण जी शारदा द्वारा अजमेर से लाई गई वस्तुओं की प्रदर्शिनी का सभी ऋषि भक्तों ने अवलोकन किया। प्रदर्शिनी में निम्नलिखित वस्तुएं रखी गई थीं –

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थप्रकाश द्वितीय संस्करण के हस्तलेख की फोटो कॉपी,
2. स्वामी जी के सौ वर्ष से प्राचीन हस्तलिखित पत्रों की मूल व फोटोकोपी,
3. सत्यार्थप्रकाश प्रथम संस्करण
4. स्वामी जी के हस्ताक्षरों की मुहर तथा उनके द्वारा उपयोग में लाये जाने वाला दुशाला, कमण्डलु, खड़ाऊ आदि।

प्रदर्शिनी की वस्तुओं को कविराज श्री धर्मसिंह जी कोठारी दिखा रहे थे।

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन : (रात्रि को)

संयोजक : वैद्य रवि दत्त, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

अध्यक्ष : स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

भजन : 1. श्री भूपेन्द्र, भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

2. पं. पन्नालाल पीयूष एवं मंडली

3. पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की छात्रायें

वक्ता : 1. श्री कैलाशनाथ सिंह भूतपूर्व शिक्षा मंत्री, उत्तरप्रदेश ने शिक्षा विषय पर,

2. पं. भूदेव शास्त्री अजमेर ने शिक्षा विषय पर,

3. श्री श्रीकरण शारदा, अजमेर ने परोपकारिणी सभा एवं सत्यार्थप्रकाश पर,

4. डॉ. प्रज्ञा देवी वाराणसी ने ईश्वर विषय पर,

5. श्री उमाकान्त उपाध्याय, कलकत्ता ने राजधर्म विषय पर,

6. श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर ने भक्ष्याभक्ष्य विषय पर,

7. पं. राजगुरु ने सत्यार्थप्रकाश एवं शहीदों पर,

8. प्रो. रत्न सिंह, गाजियाबाद ने मोक्ष विषय पर,

9. आचार्य सत्यप्रिय ने ब्रह्मचर्य विषय पर,

10. श्री आनन्द मुनि ने सत्यार्थप्रकाश के प्रभाव पर,

11. श्री पं. सत्यानन्द वेदवागीश ने आस्तिकता पर,

12. स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लासों के क्रम पर प्रकाश डाला।

श्री पन्नालाल जी पीयूष एवं श्री उत्तम चन्द जी शरर ने कविताओं के माध्यम से सत्यार्थ प्रकाश के विषय को सबके सामने प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर नैरोबी से पधारे प्रतिनिधि मण्डल द्वारा वहाँ की भाषा "स्वाहिली" में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश का विमोचन अध्यक्ष श्री शालवाले जी द्वारा करवाया गया।

तृतीय दिवस दिनांक 18 अक्टूबर 1981

प्रातः सत्यार्थभृत यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। पाणिनी आर्य कन्या महाविद्यालय की ब्रह्मचारिणियों ने वेदों में प्रक्षेप को रोकने के लिये, वेदों को कण्ठस्थ करने के लिए बनाये गये आठ प्रकार के पाठों से गायत्री मंत्र का सस्वर वेद पाठ कर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर एक युवती ने ब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा ली, दो महिलाओं ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली तथा श्री हरीश बन्धु का सुश्री लता के साथ अर्न्तजातीय विवाह सम्पन्न हुआ।

आर्य परिवार सम्मेलन : (यज्ञ के बाद)

संयोजक	:	श्री हेतराम (अलवर)
अध्यक्ष	:	श्री आचार्य प्रेम भिक्षु (मथुरा)
वक्ता	:	1. ब्र. आर्य नरेश
		2. श्री सुरेश चन्द्र
		3. श्री बन्देश्वर
		4. श्री श्याम सुन्दर
		5. श्री विशवम्भर प्रसाद शर्मा

इस सम्मेलन में प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से माँग की गई कि वह समूचे देश में शराब बन्दी को कड़ाई से लागू करे। एक अन्य प्रस्ताव में गौहत्या बन्दी के लिये कानून बनाने की माँग की गई। आचार्य प्रेम भिक्षु जी ने कहा कि पहले स्वयं को आर्य बनाओ, फिर दूसरों को आर्य बनाओ। आर्यो की दिनचर्या क्या होनी चाहिये, इस पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर एक शोक सभा भी हुई जिसमें आर्य कन्या गुरुकुल नरेला की छात्रा सुश्री स्वदेश कुमारी का निधन हो जाने पर हार्दिक शोक प्रकट किया।

आर्य महिला सम्मेलन : (दोपहर को)

संयोजिका	:	श्रीमती कुसुम लता नैयर

अध्यक्ष	:	आर्या मीरा यति (ज्वालापुर)
वक्ता	:	डॉ. प्रज्ञा देवी
		श्रीमती शकुन्तला
भजन	:	श्रीमती शिवराजवती (बम्बई)
		श्रीमती कुसुम लता (उदयपुर)
		श्री पन्ना लाल पीयूष
		पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्रायें

इस सम्मेलन में महिलाओं का आह्वान किया गया कि वे साहसी बने, अश्लील विज्ञापनों का विरोध करें, दहेज के विरुद्ध वातावरण बनाये तथा स्त्री शिक्षा को आगे बढ़ायें।

आर्य युवक सम्मेलन : (सायंकाल)

संयोजक	:	श्री देवव्रत व्यायामाचार्य
अध्यक्ष	:	केप्टेन श्री देवरतन आर्य (बम्बई)
वक्ता	:	1. श्री बाल दिवाकर हंस, प्रधान संचालक, आर्य वीर दल
		2. श्री राजसिंह, अधिकारी, आर्य युवक परिषद
		3. श्री ओम प्रकाश आर्य (ब्यावर)
		4. श्री उत्तम चन्द शरर
		5. ब्र. आर्य नरेश
		6. आचार्य सत्यप्रिय
		7. श्री ओम प्रकाश त्यागी, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

सम्मेलन की गूँज थी कि राष्ट्र का भविष्य आर्य समाज के हाथ में है और आर्य समाज का भविष्य आर्य वीरों के हाथ में है। आर्य वीर सेवा के बल

पर आगे बढ़े। यह माँग की गई कि सार्वदेशिक सभा, आर्य वीर दल के बजट में वृद्धि करे। सभा की ओर से श्री त्यागी जी (महामंत्री) तथा श्री मरवाह जी (कोषाध्यक्ष) ने घोषणा की कि आर्य वीर दल का बजट सवा लाख से बढ़ा कर दुगना अर्थात् ढाई लाख कर दिया जायेगा। सभी ने करतल ध्वनि से इस घोषणा का स्वागत किया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन : (रात्रि को)

संयोजक	:	श्री छोटू सिंह एडवोकेट (अलवर)
अध्यक्ष	:	सांसद श्री मोहनलाल सुखाड़िया
वक्ता	:	श्री रामचन्द्र राव बन्देमातरम्
		श्री सच्चिदानन्द शास्त्री
		श्री पृथ्वीसिंह आजाद
		श्री रामगोपाल शालवाले

माननीय सुखाड़िया जी का श्री रामगोपाल जी शालवाले, श्री रामचन्द्रराव जी बन्देमातरम्, श्री ओम प्रकाश जी त्यागी, श्री भगवती प्रसाद जी, श्री जय सिंह जी मेहता, श्री पृथ्वीसिंह जी आजाद, डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त, श्री छोटू सिंह जी एवं श्रीमती कुसुम लता जी द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। श्री सुखाड़िया जी ने कहा कि आर्य समाज देश की सामाजिक क्रांति को मजबूत बनाने में योगदान करे। उन्होंने कहा कि उदयपुर के नौलखा महल को, जहाँ बैठकर स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश लिखा, जल्दी से जल्दी आर्य समाज को सोंपने में अपनी पूरी ताकत लगा देंगे। श्री शालवाले जी ने हिन्दू कोड बिल को संशोधित करने व अल्प संख्यक आयोग को भंग करने की मांग की। श्री छोटू सिंह जी ने सम्मेलन के प्रारम्भ में ही श्री सुखाड़िया जी से नौलखा महल को आर्य समाज को दिलवाने की अपील की। श्री ओम प्रकाश जी त्यागी ने सूचना दी कि धर्म के तुलनात्मक अध्ययन के लिये विदेश

में रहने वाले भाई बहिनों की ओर से 25,000/-- रूपये सार्वदेशिक सभा को देने की घोषणा की गई है, जिसमें से 10,000/– रूपये की प्रथम किश्त प्राप्त हो गई है।

कवि सम्मेलन : (अन्तिम सम्मेलन)

संयोजक : श्री उत्तम चन्द्र शरर

अध्यक्ष : श्री मेघराज मुकुल

सम्मेलन का प्रारम्भ श्री सत्यपाल जी वेद शिरोमणि (नैरोबी) के द्वारा आदि काव्य वेद की ऋचाओं के गान के साथ हुआ। श्री मनीषी जी, श्री मुकुल जी, श्री शरर जी, श्री व्याकुल जी, बहिन शिव राजवती जी, श्री राजेन्द्र जी वर्मा, पं. श्री राजगुरू जी, श्री नाज जी, श्री भाटिया जी, श्री सुरेश चन्द्र जी, श्री सिया राम जी निर्भय, डॉ आनन्द सुमन जी, श्री जय प्रकाश जी तथा श्री पन्ना लाल जी पीयूष ने ऋषि दयानन्द, आर्य समाज तथा सत्यार्थप्रकाश पर अपना कविता पाठ किया।

कवि सम्मेलन के साथ ही समारोह की समाप्ति पर डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त (उप–प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर) ने सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की अभूतपूर्व सफलता के लिये परमपिता परमात्मा, सार्वदेशिक सभा दिल्ली, प्रतिनिधि सभा राजस्थान, सहयोगी कार्यकर्ताओं, उदयपुर की जनता, अस्पताल, नगरपालिका, पुलिस विभाग, जलविभाग एवं सभी को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया तथा इसके पश्चात् शान्ति पाठ, महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं सत्यार्थ प्रकाश के जयघोषों के साथ समारोह का समापन हुआ।

इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन भी आर्य समाज, उदयपुर द्वारा किया गया। इसमें महत्वपूर्ण लेखों के साथ सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह का सचित्र विवरण भी प्रस्तुत किया गया था। स्मारिका की प्रति सार्वदेशिक सभा, सभी प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं, सभी आर्य समाजों तथा

एक हजार रूपये तक दान देने वालों को भिजवाई गई।

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह के बाद एक लाख रूपये की बचत हुई। श्री ओम प्रकाश जी त्यागी, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सामने यह निर्णय हुआ कि बचत का एक तिहाई भाग आर्य समाज, उदयपुर को भवन निर्माण हेतु दिया जावे। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा चाहती थी कि इस राशि को स्थायी कोष में डाल दिया जावे और इससे जयपुर में सत्यार्थप्रकाश भवन का निर्माण करवाया जावें। आर्य समाज उदयपुर ने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के इस प्रस्ताव का विरोध किया और 30.05.1982 की अपनी अंतरंग की बैठक में निर्णय लिया कि बीस हजार रूपये के लगभग जो राशि सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह की बचत के रूप में हमारे पास है, उसे आर्य समाज, उदयपुर के यज्ञशाला एवं सत्संग भवन निर्माण कोष के खाते में स्थानान्तरित कर दिया जावे। यह भी निर्णय लिया गया कि आर्य समाज, उदयपुर के सब सदस्य भी इसमें अपना अपना योगदान करें तथा महाराणा साहब उदयपुर श्री भगवत सिंह जी से भी निवेदन किया जावे कि आर्य समाज, उदयपुर के यज्ञशाला एवं सत्संग भवन निर्माण के लिये वे भी अपना अंशदान देने की कृपा करें। महाराणा साहब उदयपुर से पत्र द्वारा निवेदन किया। उत्तर में उनके कार्यालय से एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें किसी प्रकार का कोई आश्वासन नहीं दिया गया था। सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह का आयोजन उदयपुर में करवाकर निश्चित रूप से आर्य समाज उदयपुर गौरवान्वित हुआ।

2 जनवरी सन् 1983 को आर्य समाज, उदयपुर के नये सत्संग भवन का शिलान्यास समारोह आयोजित हुआ। प्रारम्भ में आर्य सन्यासी स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने ध्वजारोहण किया। आदिवासी कन्या छात्रावास, उदयपुर की बालिकाओं ने ध्वज गीत प्रस्तुत किया। गुरुकुल चित्तौड़ के आचार्य पण्डित भीमसेन जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी

द्वारा आधारशिला रखी गई। उन्होंने सत्संग भवन निर्माण हेतु 21000.00 (इक्कीस हजार) रूपये देने की घोषणा की। श्री सुरेश चन्द जी गुप्त की माताजी ने 1001.00 (एक हजार एक) रूपये तथा श्री आत्मासिंह जी ने 2200.00 (बाइस सौ) रूपये दान स्वरूप प्रदान किये। इस अवसर पर एक बरनी में आर्य समाज, उदयपुर का इतिहास, सदस्यों की सूची, आर्य समाज के नियम, सत्यार्थप्रकाश पुस्तक एवं प्रचलित सिक्के आदि बंद कर नींव में रखे गये। इस अवसर पर पण्डित जनार्दनराय जी नागर, महन्त मुरली मनोहर शरण जी, स्वामी स्वतंत्रानन्द जी, उद्योगपति दौलत मल जी सिंघवी तथा न्यायाधीश श्री जवान सिंह जी राणावत ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री दौलत मल जी सिंघवी ने 40 कम्बल, आदिवासी छात्र–छात्राओं की सहायतार्थ प्रदान किये। श्री सुरेश चन्द जी गुप्त के प्रयास से रामगंज मंडी के श्री किरीट भाई ने 1500 वर्गफीट फर्श का पत्थर कोटा स्टोन आधे मूल्य पर प्रदान किया। इसी वर्ष दो कमरों में पत्थर के फर्श लगवाये। लगभग 65000.00 (पैंसठ हजार) रूपये इस भवन के निर्माण में खर्चा आया। निर्माण कार्य श्री हरिनारायण जी शर्मा ने करवाया।

1 अप्रेल सन् 1983 से नगर पालिका परिषद, उदयपुर ने आर्य समाज उदयपुर के प्रांगण में सार्वजनिक वाचनालय खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया, जिसका उदघाटन प्रशासक नगर पालिका परिषद श्री सी. एल. खन्ना साहब ने 3 अप्रेल सन् 1983 को किया।

सन् 1983 में, अजमेर ऋषि उद्यान में आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह में आर्य समाज, उदयपुर के सदस्य श्री देवा राम जी आर्य ने स्वामी सर्वदानन्द जी से सन्यास लिया और अपना नाम स्वामी देवानन्द सरस्वती रखा।

दिनांक 17.07.1983 की अंतरंग की बैठक में वृक्षारोपण योजना के बारे

में विचार विमर्श हुआ और निर्णय लिया गया कि जो सज्जन अपने पूर्वजों के नाम पर आर्य समाज, उदयपुर प्रांगण में वृक्ष लगाना चाहेंगे वे 101.00 (एक सौ एक) रूपये वृक्षों की देखभाल हेतु आर्य समाज में जमा करवायेंगे। प्राथमिकता आर्य समाज के सदस्यों को दी जावेगी। दिनांक 31.07.1983 को आर्य समाज में वृक्षारोपण समारोह मनाया गया जिसमें श्री एस. के. वर्मा, वन संरक्षक का व्याख्यान हुआ। निम्न तालिकानुसार वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

क्र.सं.	नाम	जिनकी स्मृति में वृक्ष लगाया गया
1.	प्रकाश वाच कम्पनी	स्व. कर्मचन्द बाधवानी
2.	श्री एस.सी. अग्रवाल	स्व. श्रीमती कृष्णा देवी
3.	डॉ. भँवरलाल पोरवाल	स्व. जगदीशप्रसाद पोरवाल
4.	श्री अम्बालाल सनाढ्य	स्व. अनिलकुमार शर्मा
5.	श्री के.के कालिया	स्व. बसन्त राम
6.	श्री ए. एस. मल्होत्रा	स्व. डॉ. अरविन्द मल्होत्रा
7.	श्रीमती भाग्यवती	स्व. डॉ. हरिलाल ठकुर
8.	श्री उमरावसिंह भटनागर	
9.	जस्टिस जे.एस. राणावत	
10.	श्री के.जी. भाटिया	श्री सुन्दरलाल भाटिया
11.	श्री कुल प्रदीप सिंह	स्व. घीसूलाल एडवोकेट
12.	श्री मुनीन्द्र सिंहभाटी	स्व. ठाकुर बलवंत सिंह
13.	श्री सुरेशचन्द गुप्ता	श्री रामगोपाल गुप्ता
14.	डॉ. शूरवीर सिंह	स्व. श्रीमती केशर बाई
15.	सुश्री सत्यवती शर्मा	श्री डॉ. बख्तावरलाल शर्मा
16.	डॉ. शूरवीर सिंह	स्व. छोग सिंह

17. लक्ष्मी इंजीनियरिंग कोरपोरेशन स्व. डॉ. अम्बालाल शर्मा
18. श्री राजेन्द्रकुमार छाबड़िया स्व. परमानन्द छाबड़िया

शुद्धि कार्यक्रम :

वैसे तो समय समय पर शुद्धि कार्यक्रम होते रहे किन्तु सन् 1981 से 1986 तक इसे अभियान के रूप में लिया गया।

08.02.1953 को एक मुस्लिम महिला श्रीमती बिस्मिल्ला को शुद्ध कर उसका नाम श्रीमती दाखी बाई रखा गया।

1979 में कुमारी मरियम एवं कुमारी हुकी को शुद्ध कर उनके नाम क्रमशः कुमारी मनोरमा एवं कुमारी हेमलता रखा गया।

20.12.1981 को ईसाई युवती प्रभाराज कुमारी को शुद्ध कर उसका नाम प्रभाकुमारी आर्या रखा गया।

17.01.1982 को एक मुस्लिम युवक इशफाक हुसैन पिता इतखार हुसैन को शुद्ध कर उसका नाम अशोक कुमार रखा गया।

21.03.1982 को ईसाई युवती मालती देवी सुपुत्री श्री छगन लाल जी जाट को शुद्ध कर पुनः वैदिक धर्म में लिया गया।

06.06.1983 को सुश्री अनिता सुपुत्री श्री अलकजेन्डर रेबर्न ईसाई को शुद्ध कर पुनः वैदिक धर्म में लिया गया।

07.08.1983 को कुमारी एन जेकब को शुद्ध कर उसका नाम अनु रखा और श्री रवीन्द्र पूनिया के साथ उसका विवाह करवाया।

18.09.1983 को मुसलिम युवती जीनत जावेद को शुद्ध कर उसका नाम सुश्री मीना कुमारी डोडेजा रखा गया।

20.02.1984 को एक ईसाई बहिन की शुद्धि की गई तथा उसका विवाह करवाया गया।

18.08.1985 को रेलमगरा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर कार्यरत नर्स ईसाई

महिला सोफिया को आर्य समाज मंदिर, उदयपुर में शुद्ध कर उसका नाम सरिता रखा गया।

09.02.1986 को रेलवे कॉलोनी डूँगरपुर में आयोजित समारोह में 18 ईसाइयों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में लिया गया। इस अवसर पर आर्य समाज उदयपुर के श्रीमती मालती जी अग्रवाल, श्री ज्ञान प्रकाश जी गुप्ता, श्री भँवर लाल जी जोशी तथा डूँगरपुर के एडवोकेट श्री नर्बदाशंकर जी उपस्थित थे।

क्र.सं.	पूर्व नाम	परिवर्तित नाम
1.	श्री प्रेम मसीह	श्री हकसी भाई आर्य
2.	श्रीमती प्रीति	श्रीमती पार्वती आर्य
3.	श्री जेवन कुमार	श्री जयवन्त कुमार आर्य
4.	श्री ईश्वर लाल	श्री ईश्वर लाल आर्य
5.	श्रीमती सवरी	श्रीमती शबरी आर्य
6.	सुश्री शीला	सुश्री शीला कुमारी आर्य
7.	श्री डेविड	श्री देवी लाल आर्य
8.	श्रीमती अवन्ति	श्रीमती अवन्ति आर्या
9.	सुश्री वीणु	सुश्री विनोद कुमारी आर्या
10.	श्री लालजी भाई	श्री लालजी आर्य
11.	श्रीमती चारा	श्रीमती सरला आर्या
12.	श्रीमती अमरी बाई	श्रीमती अमरी आर्या
13.	श्री रमन	श्री रमण कुमार आर्य
14.	श्री मूसा	श्री मूल चन्द आर्य
15.	श्री गेरसन	श्री गोविन्द सिंह आर्य
16.	श्री अवगेस कुमार	श्री योगेश कुमार आर्य

17. श्रीमती नानी बाई — श्रीमती नानी बाई आर्या
18. श्री महेन्द्र — श्री महेन्द्र कुमार आर्य

16.03.1986 को 6 ईसाईयों को शुद्ध किया गया और उन्हें वैदिक धर्म में लिया गया।

क्र.सं.	पूर्व नाम	परिवर्तित नाम
1.	श्री याकूब	श्री अमृत लाल आर्य
2.	श्रीमती लाली	श्रीमती लाली आर्या
3.	श्री सुरेश	श्री सुरेश कुमार आर्य
4.	श्री रमेश	श्री रमेश कुमार आर्य
5.	श्री अनिल	श्री अनिल कुमार आर्य
6.	सुश्री फूलवन्ती	सुश्री फूलवन्ती आर्या

आर्य समाज हिरणमगरी :

उदयपुर नगर के फैलाव को देखते हुये आर्य समाज, उदयपुर ने हिरणमगरी में एक आर्य समाज की आवश्यकता अनुभव की और इस हेतु भूमि आवंटन कराने के लिये प्रयास प्रारम्भ किये। तत्कालीन प्रधान आर्य समाज उदयपुर, श्रीमती मालती जी अग्रवाल ने नगर विकास प्रन्यास में आर्य समाज हिरंणमगरी के लिये भूमि आवंटित करने के लिये आवेदन किया। व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रयासों से सचिव ने एक पत्र क्रमांक बिक्री/न.वि.प्र./86–87/3728 दिनांक 08.12.1986, प्रधान आर्य समाज, उदयपुर के नाम जारी किया जिसमें सूचित किया गया कि आर्य समाज मन्दिर के लिये हिरणमगरी सेक्टर 4 में प्लोट नम्बर 484 क्षेत्रफल 7350 वर्गफीट, योजना की आरक्षित दर की आधी दर रू. 4.50 प्रति वर्गफुट से 99 वर्ष लीग होल्ड आधार पर निम्न शर्तो पर आवंटित किया जाता है। इसके पश्चात् अर्बन इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट (यू.आई.टी.) ने अपने पत्र लाइसंन्स नम्बर /200/87/बिक्री/यू.आई.टी./दिनांक 16.02.

1987 के द्वारा श्रीमती मालती अग्रवाल प्रधान आर्य समाज उदयपुर के फेवर में प्लोट्ट नं. 484 हिरणमगरी सेक्टर 4 माप 105 फीट X 70 फीट का लाइसेन्स जारी किया जिसमें विटनेस के अन्तर्गत श्री जयसिंह जी मेहता एवं श्री पन्ना लाल जी अरोड़ा के नाम अंकित है। निर्माण की स्वीकृति, पत्र संख्या 889/प्लान/यू.आई.टी./88/दिनांक 16.01.1988 के द्वारा सचिव यज्ञशाला एवं सत्संग भवन कॉम्पलेक्स के नाम से जारी की गई। प्लोट की लीज राशि रू. 1633.33 निर्धारित की गई। आर्य समाज हिरणमगरी यज्ञशाला का शिलान्यास दिनांक 23.08.1987 को श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी एवं उनकी पत्नी श्रीमती रतन देवी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आर्य समाज हिरणमगरी में यज्ञशाला निर्माण हेतु भी श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी ने रू. 31000.00 प्रदान किये। पूज्य आर्य भिक्षु जी महाराज ने यज्ञशाला की साइज 24 फीट X 24 फीट संस्कार विधि के अनुसार निर्धारित की। दिनांक 03.05. 1988 की अंतरंग बैठक के अनुसार आर्य समाज उदयपुर द्वारा ही आर्य समाज हिरणमगरी बनवाया गया और उसे आर्य समाज उदयपुर की ही एक प्रवृत्ति माना गया। श्री हरिनारायण जी शर्मा के अथक प्रयास से यज्ञशाला का निर्माण सम्पन्न हुआ। श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी, प्रधान आर्य समाज उदयपुर ने अपने पत्र आ.स.म./92/दिनांक 08.02.1992 में मंत्री आर्य समाज मन्दिर हिरणमगरी सेक्टर 4 को लिखा कि लीज राशि समय पर हमारे यहाँ भिजवाने का कष्ट करें ताकि नगर विकास प्रन्यास को जमा कराई जा सके। यह आवश्यक भी है क्योंकि प्लोट की सम्पत्ति आर्य समाज उदयपुर की है। आर्य समाज हिरणमगरी की यज्ञशाला का उद्घाटन कार्तिक शुक्ला द्वितीया संवत् 2044 तद्नुसार दिनांक 24 अक्टूबर 1987, शनिवार, सायंकाल 5 बजे परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री आर्य भिक्षु जी महाराज, ज्वालापुर, हरिद्वार के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समय आर्य समाज, उदयपुर के प्रधान श्री जय

सिंह जी मेहता व मंत्री श्री पन्ना लाल जी अरोड़ा थे। संरक्षक श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी थें। यज्ञशाला के उद्घाटन के पश्चात् नवीन यज्ञकुण्ड में सर्वप्रथम यज्ञ, वेद पारायण यज्ञ से करने का निश्चय किया गया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य भीमसेन जी गुरुकुल चित्तौड़ तथा उद्गाता स्वामी विजयानन्द जी आर्य पद्मिनी कन्या गुरुकुल चित्तौड़ थे। ब्रह्मचारिणियों ने सहयोग किया। यज्ञ तीन दिन तक चला जिसका सम्पूर्ण व्यय रू. 3000.00 (तीन हजार) श्री ओम प्रकाश जी केडिया उद्योगपति उदयपुर ने वहन किया। यज्ञ की समाप्ति पर श्री देवी लाल जी चौहान ने खीर पुड़ी का सहभोज दिया।

श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी का सम्मान :

आर्य समाज उदयपुर द्वारा दिनांक 08.02.1987 को श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी एवं श्रीमती रतन देवीजी चौधरी को सम्मानित किया गया। श्रीमती रतन देवीजी एवं श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी आजीवन आर्य समाज के सदस्य बन गये। उनको आर्य समाज, उदयपुर का संरक्षक भी बनाया गया। इस अवसर पर श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी ने आर्य समाज में दोनों समय यज्ञ होता रहे इस हेतु रू. 3600.00 (तीन हजार छः सौ रूपये) प्रतिवर्ष प्रदान करने की घोषणा की। इस सब कार्य में श्री हरिनारायण जी शर्मा का विशेष योगदान रहा। उनके ही प्रयास से श्री चौधरी सा. का आर्य समाज में प्रवेश हुआ।

श्री पन्नालाल जी पीयूष का सम्मान :

पौष शुक्ला पंचमी सम्वत् 2044 रविवार दिनांक 04.08.1987 को श्री पन्ना लाल जी पीयूष के 75 वर्ष की आयु पूर्ण कर 76 वें वर्ष में प्रवेश पर आर्य समाज उदयपुर द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट कर उनको सम्मानित किया गया। आर्य समाज के इस प्रख्यात उपदेशक ने डॉ. ब्रजमोहन जावलिया के निर्देशन में कानपुर विश्वविद्यालय से संगीत में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की।

आयुर्वेदिक निदान एवं परामर्श केन्द्र :

आर्य समाज द्वारा दिनांक 31.05.1987 से आर्य समाज भवन में आयुर्वेदिक निदान एवं परामर्श केन्द्र प्रारम्भ किया गया। इसका अनुभव यह रहा कि आर्य समाज मन्दिर के पास अनेक आयुर्वेदिक व प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान होने के कारण जनता इसका अधिक लाभ नहीं ले सकी। अतः औषधालय को आर्य समाज हिरनमंगरी यज्ञशाला में स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया गया। फलस्वरूप दिनांक 09.05.1988 से यह औषधालय आर्य समाज, हिरनमगरी यज्ञशाला में प्रारम्भ कर दिया गया।

नगर परिषद प्रांगण में आर्य समाज स्थापना दिवस :

दिनांक 19.03.1988 को नगर परिषद प्रांगण में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। 5 यज्ञ वेदियाँ बनाई गई और श्री श्याम लाल जी कुमावत एवं श्री गोधाजी के प्रयास से लगभग 5000 स्कूली छात्रों ने यज्ञ में आहुतियाँ लगाई।

नाथद्वारा मंदिर में हरिजन प्रवेश हेतु पदयात्रा :

पुरी के शंकराचार्य ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश विरोधी वक्तव्य दिया। इसके उत्तर में नाथद्वारा मन्दिर में हरिजन प्रवेश हेतु उदयपुर से नाथद्वारा पद यात्रा आयोजित करने का निर्णय किया गया। यह पद यात्रा 11 व 12 जुलाई 1988 को स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में करने का निश्चय हुआ। 10 जुलाई 1988 शाम को दिल्ली व राजस्थान के विभिन्न भागों से यात्रा में भाग लेने हेतु सन्यासी व अन्य लोग उदयपुर पहुँच गये थे। 11 जुलाई 1988 को प्रातः आर्य समाज मन्दिर में विराट हिन्दू समाज के सचिव श्री चिन्तामणि जी के तत्वावधान में "ज़ाति तोड़ो यज्ञ" सम्पन्न हुआ। पद यात्रा 11 बजे प्रारम्भ हुई। पद यात्रियों का दल भजन कीर्तन व नारे लगाते हुये नगर के विभिन्न मार्गो से गुजरा। पद यात्रियों की संख्या लगभग एक सौ थी जिसमें कुछ महिलायें भी

थी। पद यात्रियों के हाथों में "मैं हरिजन हूँ" "मैं दलित हूँ" तथा "जातिवाद मिटायेंगे" आदि नारे लिखी तख्तियाँ थी। पद यात्रियों में आर्य समाज उदयपुर के श्री हरिनारायण जी शर्मा, श्री गिरधारी लाल जी आर्य, श्री हीरालाल जी सांचोरा, श्री लाल चन्द जी कालरा, श्री शंकर लाल जी नरमट, श्री भैरू लाल जी आर्य, श्री राजेन्द्र कुमार जी शर्मा, श्री श्रीरामजी आर्य सम्मिलित हुये। पद यात्रा में श्री छोटू सिंह जी, श्री सम्यव्रत जी सामवेदी, आचार्य हरिदेव जी, श्री राम सिंह जी, श्री कैलाश जी सत्यार्थी, श्री रमेश जी आर्य, डॉ. के.के. खेतान, डॉ. अशोक जी मल्होत्रा, श्री परश राम जी त्रिवेदी श्री परशराम जी (नेशनल मेडिकल), श्री नरेन्द्र पाल सिंह जी, श्री मदन जी मोदी, श्री जगदीश जी जादू, श्री हिम्मत जी सेठ, श्री महेश जी शर्मा आदि भी सम्मिलित थे। डॉ. भीमराव जी अम्बेडकर के पुत्र श्री प्रकाश जी अम्बेडकर इस पद यात्रा में शामिल होने वाले थे किन्तु किसी कारणवश वे नहीं आ पाये। भुवाणा में स्वामी अग्निवेश जी ने ग्रामीणों को सम्बोधित किया और जातिवाद तथा अस्पृश्यता मिटाने का आह्वान किया। पद यात्रियों ने सुखेर में दोपहर का भोजन किया। भोजन सामग्री व फल आदि एक वाहन में थे जो पद यात्रा के साथ चल रहा था। यात्रा में पुलिस का भारी बन्दोबस्त था। रात्रि को चीरवा घाटा के उतार में सड़क के दोनों किनारों पर ही पद यात्रियोंने रात्रि विश्राम किया। 12.08.1988 को प्रातः पदयात्रा आगे रवाना हुई और सबने एकलिंग जी के तालाब में स्नान किया और पुनः आगे बढ़े। देलवाड़ा पहुँचने पर पद यात्रा का विरोध हुआ। वहाँ के लोगों ने स्वामी अग्निवेश जी का पुतला भी जलाया। वहाँ से पदयात्रा घोड़ा घाटी पहुँची। वहाँ से ही धारा 144 लगा दी गई। सबने मिलकर परामर्श किया और निर्णय लिया कि पदयात्रा स्थगित कर देना चाहिये। सरकार ने, जो जो यात्री जहाँ-जहाँ के थ उनको अपने-अपने स्थान पर पहुँचाया।

श्रीनाथ जी के मंदिर में हरिजनों के प्रवेश के लिये स्वामी अग्निवेश

जी के नेतृत्व में द्वितीय यात्रा 2 अक्टूबर 1988 को निकाली गई। पहले राष्ट्रीय दलित मुक्ति महासम्मेलन उदयपुर के भंडारी दर्शक मंडप में सम्पन्न हुआ और उसके बाद होटल देव दर्शन से यात्रियों की बस नाथद्वारा के लिये रवाना हुई। उस यात्रा में श्री सूर्य नारायण चौधरी, पूर्व कानून मंत्री, राजस्थान सरकार, सुनीता सत्यार्थी एडवोकेट एवं महिला सामाजिक कार्यकर्ता, जयपुर तथा श्री परशुराम जी त्रिवेदी आदि साथ थे। यात्रा जब नेगड़िया पहुँची तो स्वामी अग्निवेश जी को पुलिस ने नेगड़िया में ही रोक लिया। शेंष यात्री नाथद्वारा पहुँचे और वहाँ बस स्टेण्ड से कतार में रामधुन गाते हुये मंदिर द्वार तक गये। मंदिर के पंडे–पुजारियों ने यात्रियों को गेट पर ही रोक लिया और पिटाई की। झगड़े के बाद पुलिस ने वहाँ से सबको खदेड़ दिया और अंदर नहीं जाने दिया। स्वामी अग्निवेश जी को नेगड़िया में जब यह समाचार मिला तो वे नाथद्वारा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने दर्शनार्थियों को सम्बोधित किया। सम्बोधन करते करते वे बहुत भावुक हो गये। उन्होंने कहा कि मेरी वजह से आप लोगों की पिटाई हुई है, पुलिस ने मेरे साथ धोखा किया। उदयपुर से श्री भेरूलाल जी आर्य, श्री जगदीश जी जादू, एवं श्री राम जी आर्य, इस यात्रा में सम्मिलित हुये थे।

नौलखा महल :

18 जुलाई 1972 को आर्य समाज उदयपुर के 15 सभासदों का एक शिष्टमंडल नौलखा महल, सज्जन निवास गार्डन (हाल वाणिज्यक कर विभाग) को प्राप्त करने बाबत् भूतपूर्व मुख्य मंत्री महोदय श्री बरकतुल्ला खाँ साहब से स्थानीय सर्किट हाउस में मिला और एक प्रार्थना पत्र दिया। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस पर पूरी तरह ध्यान दिया जायेगा। 18.07.1972 को ही एक पत्र मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार को भी भिजवाया गया। इस समय श्री अनिल कुमार जी शर्मा आर्य समाज उदयपुर के प्रधान तथा श्री परमानन्द

जी छाबड़िया मंत्री थे। 29.05.1973 को मंत्री श्री अनिल कुमार जी शर्मा ने नौलखा महल आर्य समाज को दिलवाने बाबत पत्र श्री मोहन लाल जी सुखाड़िया, राज्यपाल मैसूर, को लिखा। 29.05.1973 को ही एक पत्र मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार को भेजा गया। 25.09.1973 को श्री अनिल कुमार जी शर्मा ने एक पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान को नौलखा महल के लिये राजस्थान सरकार से बात करने के लिये लिखा। 23.11.1973 को प्रधान श्री अनिल कुमार जी शर्मा ने नौलखा महल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर आर्य समाज को भेंट करने के संदर्भ में पत्र श्री हरिदेव जी जोशी, मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार को लिखा। 16.08.1977 को श्री जयसिंह जी मेहता, प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर ने एक पत्र सभी आर्य समाजों को लिखा कि सभी आर्य समाज अपने अपने यहाँ से नवलखा महल आर्य समाज को समर्पित करने के लिये प्रस्ताव पारित कर मुख्य मंत्री, राजस्थान सरकार को भिजवायें। राजस्थान सरकार सामान्य प्रशासन (ग्रुप–2) विभाग के पत्र क्रमांक एफ 10(1) सा.प्र./11/79 दिनांक 11.05.1979 के द्वारा हमें सूचित किया गया कि राज्य सरकार ने अपने निर्णय संख्या एफ 10 (16) जी.ए./2/77 दिनांक 29.08.1977 के द्वारा नवलखा महल में परम्परा विश्रुत स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित भाग में एक लघु संग्रहालय स्थापित कर दर्शकों के लिये खोलने का आदेश दिया है। उक्त पत्र और निर्णय की प्रति राज्य सरकार ने जिलाधीश, उदयपुर को भी दी और व्यवस्था करने हेतु लिखा। इसके उत्तर में 20.10.1979 को आर्य समाज, उदयपुर ने जिलाधीश को लिखा कि नवलखा महल पूरा ही स्वामी जी के योग, अध्ययन, लेखन, उपदेश आदि क्रिया कलापों की स्थली रहा हैं। ऐसी स्थिति में किसी एक भाग में संग्रहालय स्थापित कर देने मात्र से आर्य समाज की माँग की पूर्ति नहीं होती। आर्य समाज, उदयपुर ने नवलखा महल के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी से भी पत्र

व्यवहार किया जिसके उत्तर में प्रधानमंत्री जी से पत्र संख्या डी 464 पी. एम/79 दिनांक 18 सितम्बर 1979, दिनांक 23.09.1979 को प्राप्त हुआ। इस पत्र में 24 सितम्बर 1979 को प्रातः 9 बजे प्रधानमंत्री जी से प्रधानमंत्री निवास 12 तुगलक रोड़ नई दिल्ली पर भेंट करने को लिखा था। साथ ही यह भी पूछा गया था कि समय की पुष्टि करें तथा प्रतिनिधि मंडल में कितने व्यक्ति आयेंगे की पुष्टि भी पत्र द्वारा करें। आर्य समाज, उदयपुर के प्रधान डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त ने तुरन्त प्रधानमंत्री कार्यालय को तार द्वारा सूचना भिजवाई और पत्र भी लिखा कि चूँकि पत्र 23.09.1979 को ही मिला अतः कल प्रातः पहुँचना किसी भी तरह संभव नहीं है। साथ ही यह भी लिखा कि दूसरी तिथि निश्चित कर सूचित करने का कष्ट करे और तिथि की सूचना कम से कम दस दिन पहले देने का कष्ट करें जिससे प्रतिनिधि मंडल में सम्मिलित होने वाले सभी सदस्यों को सूचित किया जा सके। बाद में घटनाक्रम कुछ ऐसा चला कि चौधरी चरण सिंह जी प्रधानमंत्री पद पर नहीं रहे। दिनांक 15.11.1979 व पुनः दिनांक 03. 12.1979 को आर्य समाज उदयपुर के प्रधान डॉ. प्रेम चन्द जी गुप्त व मंत्री श्री हरिनारायण जी शर्मा ने जिलाधीश के माध्यम से राज्य सरकार को लिखा कि राजस्थान सरकार ने आदेश किया है कि पूज्य स्वामी जी महाराज जिस कमरे में बिराजते थे वह कमरा आर्य समाज को सुपुर्द कर दिया जावे। मगर स्वामी जी महाराज के पास हजारों ग्रन्थ व कुछ विद्वान् लिखने पढ़ने वाले रहते थे और एक कार्यालय चलता था। महाराणा साहब उपदेश सुनने व मनुस्मृति आदि पढ़ने प्रतिदिन यहाँ आया करते थे। भोजन शाला, अतिथि शाला, यज्ञशाला आदि सब यहाँ थे, अतः पूरा भवन ही स्वामी जी महाराज के काम आता था। दर्शकों के लिये संग्रहालय व कार्यालय साथ साथ नहीं चल सकते। एक कमरा या एक पोर्शन से बिलकुल काम नही चल सकता। न तो कार्यालय ही ठीक से चल सकेगा और न संग्रहालय ही। अर्थात् स्वामी जी

से सम्बन्धित स्थानों को दर्शक ठीक से नहीं देख पायेंगे क्योंकि कई स्थानों के लिये कार्यालय के कमरों में होकर जाना पड़ेगा जो उचित नहीं होगा। अतः पूरा का पूरा नवलखा महल का भवन ही आर्य समाज को सोंपा जाय। 12.05. 1983 को आर्य समाज उदयपुर में आचार्य भगवान देव जी सांसद अजमेर का स्वागत किया गया और उनसे नौलखा महल को राष्ट्रीय स्मारक घोषित कर आर्य समाज को सौंपने की माँग की गई। आचार्य भगवान देव जी ने इस कार्य हेतु अपना पूरा प्रयास करने का आश्वासन दिया। दिनांक 03.08.1983 को आर्य समाज उदयपुर के शिष्ट मंडल ने मुख्य मंत्री श्री शिव चरण जी माथुर से भेंट कर एक ज्ञापन दिया और नौलखा महल आर्य समाज को सौपने की माँग की गई।

डॉ. वेदपाल सुनीथ द्वारा प्रणीत पुस्तक 'शतपथ के दश पथ' (प्रथम भाग) का विमोचन नगर आर्यसमाज और आर्य समाज हिरणमगरी सेक्टर 4 के संयुक्त तत्वावधान में महंत श्री मुरली मनोहर शरणजी की अध्यक्षता में 24 मार्च 1991 को नगर आर्य समाज मंदिर में किया गया। इस अवसर पर उद्घाटन भाषण प्रधान डॉ. ब्रजमोहन जावलिया ने दिया। पुस्तक का विमोचन श्री हनुमानप्रसाद ने किया। डॉ. वेदपाल सुनीथ ने पुस्तक में निहित विषय की जानकारी अपने वक्तव्य में दी। अध्यक्षीय उद्बोधन महंत मुरलीमनोहर शरण जी ने दिया। इस अवसर पर श्री सत्यानंद वेदवागीश और आचार्य भीमसेन भी समा में उपस्थित थे। आर्य समाज हिरणमगरी के प्रधान डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने धन्यवाद की रस्म अदा की;

15.05.1991 को श्री के.के. कालिया प्रधान, आर्य समाज, हिरनमगरी उदयपुर, ने नवलखा महल के लिये पत्र लिखा। 21.06.1991 को श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी, प्रधान, आर्य समाज, उदयपुर ने नवलखा महल के लिये पत्र लिखा। 18.09.1991 को संभागीय आयुक्त, उदयपुर के कक्ष में एक बैठक हुई

जिसमें आर्य समाज की ओर से श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी, श्री जयसिंह जी मेहता, डॉ. अमृत लाल जी तापड़िया, डॉ. ब्रजमोहन जी जावलिया, डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त व श्री के.के. कालिया सा. सम्मिलित हुये। संभागीय आयुक्त को बताया गया कि सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा लिये गये निर्णय दिनांक 29.08.1977 के अनुसार नवलखा महल के कुछ हिस्से जहाँ स्वामी दयानन्द जी निवास करते थे या उनसे संम्बन्धित थे, को एक म्यूजियम में विकसित किया जावे व कला एवं संस्कृति विभाग अग्रिम कार्यवाही करे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान, जयपुर, व स्थानीय आर्य समाज, उदयपुर ने इस निर्णय को न स्वीकार किया और न इसकी क्रियान्विति हुई। आरंभ से ही हमारी यह माँग रही है कि पूरा का पूरा नौलखा महल स्वामी जी के काम आता था– एक कमरा या कुछ हिस्सा नहीं। अतः पूरा का पूरा नौलखा महल का भवन ही आर्य समाज को सौंपा जाय। दिनांक 18.05.1992 को चरखी दादरी (हरियाणा) में पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह में राजस्थान के मुख्य मंत्री माननीय श्री भेरोसिंह जी शेखावत मुख्य अतिथि ने उदयपुर स्थित नौलखा महल को स्वामी दयानन्द सरस्वती स्मारक के लिये उपलब्ध कराने की घोषणा कर आर्य जनता की लंबित माँग को स्वीकार किया और इसके लिये दस लाख रूपये देने वाले दानदाता श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी प्रधान आर्य समाज, उदयपुर से कहा कि स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश जैसे ग्रन्थ के रचानास्थल को ऐसा स्वरूप दें कि देश विदेश के लोग वहाँ से प्रेरणा लेकर जावें और स्वदेशी एवं स्वालम्बन का संदेश घर घर पहुँचे।

दिनांक 13.10.1992 को उदयपुर प्रशासन ने नवलखा महल की चाबियाँ सौंपी। उस दिन से ही नवलखा में आर्य समाज, उदयपुर के सौजन्य से प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल यज्ञ प्रारम्भ कर दिया गया। दिनांक 29. व 30 नवम्बर 1992

को नवलखा महल स्वीकरण समारोह राष्ट्रीय स्तर पर गुलाब बाग में मनाया गया। प्रतिनिधि सभा के आदेश के अनुसार आर्य समाज, उदयपुर ने नौलखा महल स्वीकरण समारोह को सफल बनाने के लिये दिन रात परिश्रम करके सफल बनाया। भोजन एवं आवास व्यवस्था की भूरि–भूरि प्रशंसा हुई। आर्य समाज उदयपुर के सदस्यों ने स्वयं ने तो आर्थिक सहयोग दिया ही, साथ ही अन्य सज्जनों से एक लाख रुपये दान प्राप्त कर सहयोग दिया। समारोह में चार लाख रूपये से अधिक व्यय हुआ। प्रतिनिधि सभा की ओर से वांछित राशि प्राप्त नहीं होने पर आर्य समाज, उदयपुर के प्रधान श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी ने दो लाख रुपये की राशि अपने पास से जुटा कर समारोह का खर्च पूरा कराया। सभा ने यह राशि लौटाने का आश्वासन दिया। प्रधान जी पूर्णतया अस्वस्थ होते हुये भी इस समारोह को सफल बनाने के लिये बम्बई से यहां आये और सारी व्यवस्था को अपनी शय्या से संभाला। समारोह में विशाल शोभायात्रा, सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन. संगीत सम्मेलन, 6 दिवसीय चतुर्वेद शतकीय यज्ञ आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुये जो उदयपुर में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में निश्चय ही सहायक सिद्ध हुये। इस अवसर पर विद्वानों द्वारा रचित निम्न पुस्तकों का विमोचन भी किया गया–

1. आर्य समाज, उदयपुर के विद्वान श्री शंकरलाल मरमट विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित "जीवात्म ज्योति"।
2. डॉ. मदनमोहन जावलिया द्वारा लिखित पुस्तक "आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओं का हिन्दी के विकास में योगदान"।
3. श्री वेदपाल जी सुनीथ द्वारा लिखित पुस्तक "शतपथ के दशपथ" का द्वितीय भाग।

नवलखा स्वीकरण समारोह में पूर्व विधि मंत्री शांतिलाल जी चपलोत तथा तत्कालीन गृहमंत्री श्री कैलाश जी मेघवाल ने मुख्यमंत्री श्री भैरो सिंह जी

शेखावत का प्रतिनिधित्व किया। हस्तान्तरण पत्र क्रमांक प/10/22 सा. प्र/1/83 जयपुर दिनांक 3 सितम्बर 1992 राजस्थान सरकार के सामान्य प्रशासन ग्रुप–1 विभाग के द्वारा दिये गये आदेश के अनुसार हुआ। इसके अनुसार नवलखा महल भवन उदयपुर को, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर को एक रूपया प्रति वर्ष के हिसाब से 99 वर्ष की लीज पर दिया जाता है। लीज का समय 99 वर्ष समाप्त होने की स्थिति में दोनों पक्षकारों की स्वीकृति से पुनः नवीनीकरण किया जा सकेगा। यह पत्र श्री रामलुभाया, विशिष्ट शासन सचिव के हस्ताक्षर से जारी किया गया। नवलखा भवन के स्वामी दयानन्द चित्र दीर्घा में दस चित्रों का पैसा 6 हजार रुपये प्रतिचित्र के हिसाब से कुल साठ हजार रूपये आर्य समाज, उदयपुर द्वारा प्रेरित व्यक्तियों द्वारा प्रदान किया गया। दिनांक 2.5.1993 को श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी के स्वास्थ्य लाभ के उपलक्ष में सभी आर्य सभासदों का सामूहिक भोज नवलखा महल में आर्य समाज, उदयपुर की ओर से वार्षिक चुनाव के बाद रखा गया। नवलखा महल की समस्त गतिविधियाँ श्री मद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के अन्तर्गत चलाई जा रही है।

गौ महिमा एवं पुरातत्व पर प्रवचन :

आर्य समाज, उदयपुर के तत्वावधान में, आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी, आर्युवेदज्ञ एवं पुरातत्ववेता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का प्रवचन दिनां 9.11.1991 को प्रातः आलोक संस्थान में हुआ। दिनांक 10.11.1991 को प्रातः प्रवचन आर्य समाज में, दोपहर को स्थानीय जैन समाज के अणुव्रत कार्यक्रम में, सायंकाल नगर के इतिहास विशेषज्ञों की उपस्थिति में इतिहास विषय पर तथा रात्रि को ''गौ गरिमा'' विषय पर सुखाड़िया रंगमंच पर हुआ। इस अवसर पर 500 प्रतियाँ स्वामी दयानन्द द्वारा रचित पुस्तक ''गौकरूणा–निधि'' की सहभागियों को भेंट की गई।

आर्य वीर दल :

1992 में आर्य समाज उदयपुर द्वारा आर्य वीर दल की स्थापना की गई, जिसका संचालक श्री हीरालालजी सांचोरा को बनाया गया। आर्य समाज, उदयपुर ने इस कार्य हेतु 2000 रूपये की राशि प्रदान की तथा 2500 रूपये की राशि श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी ने चौधरी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से प्रदान की। इसमें वेटलिफ्ट 1 जोड़ा नया तथा 1 जोड़ा पुराना, बुलवर्कर 1, डम्बल एक जोड़ा,, झूले 2, (जो गीता रामायण सेवा संघ से प्राप्त हुये) तथा मुगदर छोटे व बड़े (जो आर्य समाज में थे) रखे गये व कार्य संचालित किया गया। बाद में आर्य समाज, अम्बामाता बनने पर, उस समाज के द्वारा मांगे जाने पर यह सामान आर्य समाज, सज्जननगर ए ब्लॉक (वर्तमान नाम) को दिया गया, जो वहीं पर काम आ रहा है।

विश्रान्ति गृह :

दिनांक 17.2.1991 को आर्य समाज उदयपुर की पूर्व दिशा की खाली जमीन पर एक विश्रान्ति गृह बनाने का प्रार्थना पत्र नगरपरिषद में प्रस्तुत किया गया, परन्तु पड़ौसी श्री हरिसिंह धाबाई ने नगर परिषद में एक प्रार्थना पत्र लिखकर आपत्ति उठाई कि आर्य समाज ने जो स्वीकृति मांगी है वह कोमर्शियल के लिये मांगी है। यह स्वीकृति नही दी जावे, क्योंकि यह आवासीय मुहल्ला है और मोहल्ला वालों को असुविधा रहेगी। उन्हीं धाबाई ने 1999 में आर्य समाज भवन की दीवार से सटवां एक बेसमेन्ट, दूकानें व होटल बना ली। ये एक कोमर्शियल कार्य के लिये काम आ रहे हैं। इन सब के लिये श्री धाबाई ने नगर परिषद से कोई स्वीकृति नहीं ली।

योग प्रशिक्षण :

सत्र 1990–91 में आर्य समाज उदयपुर में स्वामी विजयानन्द जी आचार्य कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ ने एक साधना शिविर लगाया। दिनांक

2.3.1998 से 10.03.1998 तक योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, मुरादाबाद के संस्थापक स्वामी शरणानन्दजी ने आर्य समाज उदयपुर में निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर लगाया जिसमें 50 व्यक्तियों ने भाग लिया। स्वामी व्रतानन्द जी परिव्राट (पंजाब) ने भी समय–समय पर यहाँ पधारकर योग का प्रशिक्षण दिया। स्वामी ओमानन्द जी मनधारा प्रपात वालों ने सन् 1980 में आर्य समाज, उदयपुर में योग शिविर का आयोजन किया। आचार्य विष्वङ्ंग जी ने ऋषि उद्यान अजमेर से पधार कर वर्ष 2003 में यहाँ योग शिविर लगाया जिसमें मुख्य रूप से समाज के छात्रावास में रहने वाले समस्त विद्यार्थियों ने लाभ उठाया। वर्तमान में वर्ष 2004 से डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को सत्संग में प्रवचन के समय में स्वामी रामदेवजी आधारित योगाभ्यास करवा रहे हैं।

स्वंतन्त्रता सेनानियों का अभिनन्दन :

स्वतंत्रता के स्वर्ण जयंती समारोह वर्ष के उपलक्ष में दिनांक 28.09.1997 को उदयपुर के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को, जो आर्य समाज से सम्बन्धित रहे हैं, आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, हिरणमगरी एवं आर्य समाज, अम्बामाता की ओर से आर्य समाज, उदयपुर में शाल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह के पश्चात् सहभोज का आयोजन भी हुआ। इस समारोह में निम्नलिखित स्वतंत्रता सेनानियों का अभिनंदन किया गया। अभिनंदन पत्र डॉ. ब्रजमोहन जावलिया ने तैयार किए और पढे.–

1. स्वामी स्वतंत्रानन्दजी, संचालक दयानन्द सेवाश्रम, बाँसवाड़ा।
2. श्री बलवंत सिंह जी मेहता, सदस्य संविधान निर्मात्री समिति
3. श्री कनक मधुकरजी, संपादक, नवजीवन साप्ताहिक,
4. श्री पन्नालाल जी पीयूष, आर्य भजनोपदेशक एवं संगीताचार्य

5. श्री वीरेन्द्रपाल सिंह जी वरणा, सेवानिवृत्त अध्यापक।

गौरक्षा हस्ताक्षर अभियान :

ब्रह्मचारी धर्मभिक्षु जी (टंकारा) द्वारा प्रायोजित गौरक्षा हस्ताक्षर अभियान के अन्तर्गत आर्य समाज, उदयपुर ने 50,000 हस्ताक्षर करवाकर भिजवाये। इस कार्य में श्री हरिनारायणजी शर्मा का उल्लेखनीय योगदान रहा।

मोरिशियस देश के प्रतिनिधियों का सत्कार :

सन् 1990 में मोरिशियस देश के 50 प्रतिनिधि भारत भ्रमण के दौरान आर्य समाज, उदयपुर में भी पधारे। उन्हें उदयपुर आर्य समाज की गतिविधियों से परिचित कराया गया तथा भोजन आदि के द्वारा उनका पूर्ण सत्कार किया गया।

वैदिक परिवार स्नेह मिलन :

वर्ष 1996–97 में नांदेश्वर में, दिनांक 16.08.1998 को झामेश्वर में, दिनांक 30.10.2004 को जलबुर्ज पर तथा वर्ष 1990–91 में दूधतलाई पर ये स्नेह मिलन आयोजित किये गये। इनके अतिरिक्त जब बाहर की व्यवस्था नहीं हो पाती थी तो वर्ष में एक बार आर्य समाज भवन में ही वैदिक परिवारों का यह स्नेह मिलन सहभोज के साथ आयोजिंत किया जाता रहा है।

सत्यार्थप्रकाश भेंट करना :

वर्ष 1999 से इस कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप से चलाया गया। उदयपुर शहर के जितने भी कॉलेज व स्कूल हैं उनके पुस्तकालयों में बड़े आकार का सत्यार्थप्रकाश भेंट किया गया। उदयपुर नगर में जितने भी समाचार पत्र निकलते हैं उनके सम्पादकों को भी आर्य समाज, उदयपुर की ओर से सत्यार्थप्रकाश की प्रति भेंट की गई। उदयपुर नगर परिषद् के जितने भी पार्षद हैं उन सबको भी सत्यार्थप्रकाश की प्रति उनके घर जाकर ससम्मान भेंट की गई। उदयपुर नगर में जितने भी बैंक और उनकी शाखायें हैं उनके

मैनेजरों को भी आर्य समाज, उदयपुर की ओर से सत्यार्थप्रकाश की प्रति स्वाध्याय हेतु भेंट की गई। वर्तमान में इस वर्ष 2005 में सत्यार्थप्रकाश की प्रति औषधालयों (सभी प्रकार के) के प्रभारी अधिकारियों को भेंट करने का कार्यक्रम चल रहा हैं। यह कार्यक्रम सदैव चलने वाला कार्यक्रम है जो आर्य समाज, उदयपुर अपनी सामर्थ्य के अनुसार चलाता रहेगा। आर्य समाज, उदयपुर की दृष्टि में जन–जन तक महर्षि दयानन्द के विचारों को पहुँचाना एक अहम् कार्य है। "वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थप्रकाश पढ़ो" यह आर्यसमाज का ही तो दिव्य घोष है।

संस्कार विधि भेंट करना :

आर्य समाज, उदयपुर की यह सोच रही है कि मानव निर्माण, व्यक्ति को संस्कारित करके ही किया जा सकता है और इस कार्य के लिये महर्षि दयानन्द रचित संस्कार विधि सबसे उत्तम पुस्तक है। संस्कार आर्य समाज के पुरोहितों के अतिरिक्त, पौराणिक पुरोहित भी सम्पन्न करवाते हैं। अतः इस निवेदन के साथ कि परिवारों में संस्कार स्वामी दयानन्द की संस्कारविधि से सम्पन्न करवाये जावें। उदयपुर के पौराणिक पंडितों को संस्कार विधि पुस्तक की प्रति उनके घर–घर जाकर ससम्मान भेंट की गई।

स्वामी दयानन्द की जीवनी भेंट करना :

आर्य समाज उदयपुर ने यह अनुभव किया कि आज का विद्यार्थी स्वामी दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द में ही भेद नहीं कर पा रहा है। वह स्वामी विवेकानन्द को ही स्वामी दयानन्द समझता है । स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतत्व को व्यक्ति अपने विद्यार्थी काल से ही ठीक–ठीक समझें इस हेतु कक्षा दस के विद्यार्थियों को स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र भेंट करने का कार्यक्रम बनाया गया और वर्ष 2005 में महर्षि जीवनी की एक हजार प्रतियां माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों

को आर्य समाज, उदयपुर की ओर से भेंट की गई। इस कार्यक्रम को भी आर्य समाज, उदयपुर अपनी सामर्थ्य के अनुसार सतत चलाने की इच्छा रखता है।

विकलांग छात्रावास को सहायता :

आर्य समाज, उदयपुर की मान्यता है कि जो संस्थायें समाज सेवा का अच्छा कार्य कर रही हैं उनकी यथा सामर्थ्य अवश्य सहायता की जानी चाहिये जिससे उनके अभावों की पूर्ति होकर और अधिक उत्साह के साथ वे सेवा कार्य कर सकें। आर्य समाज, उदयपुर के सदस्यों ने सर्वेक्षण किया, स्वयं जा जाकर पता लगाया कि किस संस्था को वास्तव में सहायता की आवश्यकता है और की गई सहायता का वहाँ पूर्ण सदुपयोग होगा। झामर कोटड़ा मार्ग पर स्थित विकलांग छात्रावास की आर्य समाज, उदयपुर ने खाद्य पदार्थ प्रदान कर सहायता की तथा दो हजार इक्यावन रुपये प्रदान कर उस संस्था की एक ऐसी योजना का सदस्य बना जिसके द्वारा वर्ष में एक समय का भोजन वहाँ रहने वाले विकलांग बच्चों को मिलना सुनिश्चित हो सके। हमें संतोष है कि प्रतिवर्ष दीपावली (महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस) पर सायंकाल का भोजन विकलांग बच्चों को आर्य समाज, उदयपुर के सौजन्य से कराया जाता है। आर्य समाज, उदयपुर के सदस्य व्यक्तिगत स्तर पर भी विकलांग बच्चों की भोजन, मिठाई, कपड़े, खाद्य पदार्थ, खिलौने आदि सामान प्रदान कर सहायता करते रहते हैं। आर्य सत्संग गुटका आदि बच्चों को भेंट कर, आर्य समाज, उदयपुर बच्चों को संस्कारित करने का भी प्रयास करता रहता है।

अन्ध विद्यालय को सहायता :

वर्ष 2000–2001 में अन्ध विद्यालय, अम्बामाता को उनकी आवश्यकता के अनुरूप निम्न उपकरण देहरादून से मंगवाकर आर्य समाज उदयपुर द्वारा भेंट किये गये–

(1) अरिथमेटिक व एलजब्रा फ्रेम – 8

(2) अरिथमेटिक मेटल टाइप – आधा किलो

(3) ज्योमेट्रिकल डिवाइस विद – 1
स्परव्हील एंड ओल एटेचमेन्ट

बधिर विद्यालय को सहायता :

वर्ष 2000–2001 में बधिर विद्यालय अम्बामाता को उनकी, आवश्यकतानुसार आर्य समाज उदयपुर की ओर से साइज 6 फीट X 1.6 फीट की 22 दरी पट्टियाँ बच्चों के बैठने हेतु भेंट की गई।

गायों के लिये चारे की सहायता :

वर्ष 2000–2001 में कविता ग्राम में निम्नलिखित परिवारों को, अकाल के हालात में, आर्य समाज, उदयपुर द्वारा गायों के लिये चारा प्रदान किया गया–

(1) विपल पुत्र गोपाल – 100 किलो

(2) श्रवण पुत्र सुशील – 100 किलो

(3) गिरीश पुत्र मांगु – 100 किलो

(4) लूणचन्द पुत्र लाला – 100 किलो

(5) जमना पुत्र जीतमल – 100 किलो

इस कार्य में जरूरतमंद परिवारों के चयन हेतु श्री मोहनलाल जी शर्मा ग्राम कविता का सहयोग लिया गया।

गर्मी में पानी हेतु प्याऊ :

वर्ष 2000–2001 में गर्मी के तीन महीनों अप्रेल से जून तक आर्य समाज, उदयपुर द्वारा शीतल जल पिलाने हेतु प्याऊ लगाई गई।

भूकम्प पीड़ितों के लिये सहायता :

वर्ष 2000–2001 में भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ आर्य समाज उदयपुर द्वारा महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा को 2000 रुपये की सहायता

भिजवाई गई।

रोगियों को फल वितरण :

वर्ष 2000 –2001 में राजकीय महाराणा भूपाल चिकित्सालय में सेवारत मानव सेवा समिति को आर्य समाज, उदयपुर की ओर से रोगियों को फल वितरण हेतु 1000 रूपये की सहायता प्रदान की गई ।

विद्यार्थियों को पढ़ाई हेतु सहायता : वर्ष 2000–2001 में श्री वासुदेवजी शास्त्री को उनके तीनों बच्चों की पढ़ाई हेतु 1000 रूपये की सहायता प्रदान की गई।

कमजोर आर्थिक स्थिति वाले सदस्य को सहायता :

वर्ष 2000–2001 में डॉ. श्रीरामजी आर्य को उनकी कमजोर आर्थिक स्थित को देखते हुये तथा आर्य समाज के कार्यों में उनके योगदान को देखते हुये आर्य समाज, उदयपुर की ओर से 1000 रूपये की सहायता प्रदान की गई।

दयानन्द सेवाश्रम बांसवाड़ा को सहायता :

आदिवासी क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य कर रहे स्वामी स्वतंत्रानन्द जी द्वारा स्थापित दयानन्द सेवाश्रम, बांसवाड़ा को आर्य समाज, उदयपुर नियमित रूप से पूर्व में ग्यारह सौ रूपये व अब 2200 रूप्ये प्रति वर्ष सहायता भिजवाता है। यहाँ के सदस्यों द्वारा भी समय–समय पर व्यक्तिगत तौर पर वहां सहायता की जाती रही है। वहाँ से आने वाले दो विद्यार्थियों को निःशुल्क आर्य समाज, उदयपुर के छात्रावास में रखने की परम्परा का निर्वहन हाल के वर्षों तक किया जा रहा है।

गुरुकुल ऋषि उद्यान अजमेर को सहायता :

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रारंभ किये गये गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर को आर्य समाज, उदयपुर की ओर से 1000 रूपये की सहायता प्रति वर्ष भिजवाई जाती है।

शुद्धि अभियान हेतु सहायता :

स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा चलाये जा रहे शुद्धि अभियान में आर्य समाज अपनी आहुती गुरुकुल, आमसेना, उड़ीसा को 500 रूपये प्रतिवर्ष भिजवाता है।

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा को महायता :

आर्य समाज, उदयपुर की ओर से 500 रूपये की सहायता महर्षि दयानन्द ट्रस्ट, टंकारा को ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष में भिजवाई जाती है।

उदयपुर में महिला सौन्दर्य प्रतियोगिता रूकवाने हेतु प्रतिनिधि मंडल :

दिनांक 18 दिसम्बर 2000 को आर्य समाज, उदयपुर का प्रतिनिधि मंडल जिसमें डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त, श्री लालचन्द जी कालरा, श्री हरिनारायणजी शर्मा तथा डॉ. दीनदयालजी शर्मा थे, अतिरिक्त जिलाधीश श्री भाटी जी से मिला। उन्हें महिला सौन्दर्य प्रतियोगिता, उदयपुर में आयोजित नहीं हो इसके लिये ज्ञापन दिया एवं वार्ता की। इस कार्य में आर्य समाज को पूर्ण सफलता मिली। उदयपुर में आयोजित होने वाली महिला सौंदर्य प्रतियोगिता की अनुमति प्रशासन के द्वारा नहीं दी गई।

दहेज विरोधी चेतना सम्मेलन :

दिनांक 16 सितम्बर 2001 को आर्य समाज, उदयपुर एवं कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान कृषि महाविद्यालय के सभागार में दहेज विरोधी चेतना सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। सम्मेलन को स्वामी अग्निवेश जी एवं आचार्य आर्य नरेशजी ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर स्वामी अग्निवेशजी ने उपस्थित छात्र–छात्राओं को बिना दहेज लेन–देन के विवाह करने की शपथ दिलवाई। आर्य समाज की ओर से सभी विद्यार्थियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। सम्मेलन में राजस्थान कृषि महाविद्यालय के

अधिष्ठाता डॉ. गोपाल स्वरूप जी शर्मा, छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ. मोहन सिंह जी शक्तावत व समन्वयक नैतिक शिक्षा डॉ. विश्वनाथ जी जोशी ने भी अपने विचार रखे। इस आयोजन को सफल बनाने में डॉ. दीनदयाल जी शर्मा, डॉ. गणपत लाल जी शर्मा, श्री वासुदेवजी शास्त्री, श्री शिवप्रकाश जी शास्त्री व श्री इंद्रदेव जी पीयूष का विशेष योगदान रहा।

साहित्य प्रकाशन एवं वैदिक धर्म प्रचार :

नगर आर्य समाज, उदयपुर के मान्य सदस्य विद्यावाचस्पति श्री शंकरलाल जी मर्मट ने आर्य सिद्धांतों के प्रचार हेतु कई एक पुस्तकों का प्रणयन किया है। तीन पुस्तकें प्रकाशित हो पायी हैं– पर कई एक अप्रकाशित हीं पड़ी हैं। उनके द्वारा प्रणीत साहित्य निम्नलिखित है–

प्रकाशित–

1. जीवात्म ज्योति : भूमिका– डॉ. ब्रजमोहन जावलिया 2. ज्ञान सुधा 3. व्रत दर्पण

अप्रकाशित–

1. संस्कार विधि मानव निर्माण की कला
2. सन्ध्या प्रकार
3. उठो जागो आँखें खोलो
4. विशुद्ध वाल्मीकि रामायण
5. वैदिक विवेक प्रश्नोत्तरी
6. शब्द–पंकज–भास्कर (संस्कृत)
7. Return to Vedas for Human welfare
8. Divine Politics

श्री मर्मट 1996 ई. से आज तक उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान में जहां कहीं भी जाते हैं– वहां महाविद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों, आर्य समाजों में तथा अन्य संस्थाओं में अपने प्रवचनों के द्वारा वैदिक धर्म का

प्रचार कर नगर आर्य समाज, उदयपुर की गरिमा में वृद्धि करते रहे हैं। श्री मरमट हाल ही दिनांक 2 नवंबर 2008 को वैदिक धर्म प्रचारार्थ सूरीनाम की राजधानी पेरामारीबो गये। वहां लगभग एक माह तक विभिन्न नगरों में उन्होंने प्रवचन दिए।

डॉ. ब्रजमोहन जावलिया के द्वारा लिखे गए– महर्षि दयानंद सरस्वती के उदयपुर आगमन और प्रवास, नवलखा महल और स्वामी दयानंद सरस्वती, दण्डी विरजानंद का महाराजा रामसिंह जयपुर को पत्र, स्वामी दयानंद का काशीशास्त्रार्थ आदि अनेक लेख और अधुना अज्ञात सामग्री वेदवाणी और परोपकारी पत्रिकाओं में प्रकाशित कराई। नवलखा महल में आर्य समाज द्वारा आयोजित प्रथम उत्सव के समय भी उक्त विषयक लेखादि लिखकर श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी, स्वामी सुमेधानंदजी और श्री विद्यासागरजी को प्रकाशनार्थ दी।

स्टिकर द्वारा प्रचार :

आर्य समाज उदयपुर ने स्टिकर तैयार करवाये जिसमें आह्वान किया गया "स्वस्थ पर्यावरण के लिये अग्निहोत्र (यज्ञ–हवन) करें।" स्टिकर में उक्त कोटेशन के अतिरिक्त ओ३म्, चारों वेदों के नाम, महर्षि दयानन्द का चित्र तथा यज्ञ करते हुये चित्र तथा आर्य समाज उदयपुर का पता भी दिया गया। स्टिकर, कार, स्कूटर, ओटो रिक्शा तथा घर के मुख्य दरवाजे आदि पर लगाने हेतु भेंट किये गये। इस कार्य में श्री लालचन्द जी कालरा का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज में वाचनालय :

नगर परिषद, उदयपुर की ओर से आर्य समाज, उदयपुर में एक वाचनालय का संचालन होता है। इसमें वहां से प्राप्त पत्र पत्रिकाओं के अतिरिक्त, आर्य समाज में आने वाले पत्र पत्रिकाएं भी रखी जाती हैं, जिससे पाठक दोनों का लाभ प्राप्त कर सके। आर्य समाज, उदयपुर इसके लिये नगर

परिषद उदयपुर का आभारी है।

दैनिक संध्या एवं यज्ञ :

आर्य समाज, उदयपुर में दैनिक संध्या एवं यज्ञ प्रातःकाल एवं सायंकाल दोनों समय होता है जिसमें आर्य समाज के छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थी भी भाग लेते हैं। आर्य समाज के पदाधिकारी व अंतरंग सदस्य स्वेच्छा से सप्ताह में एक दिन दैनिक यज्ञ में अपनी ड्यूटी लगाते हैं, जिससे दैनिक संध्या व यज्ञ सुचारू रूप से सम्पन्न हो तथा आर्य समाज की गतिविधि से अवगत रहें।

बैंक एकाउन्ट :

आर्य समाज उदयपुर का खाता तीन बैंकों– पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक आफ इंडिया तथा युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया में है। पंजाब नेशनल बैंक में खाता आर्य समाज मंदिर उदयपुर के नाम से है जबकि शेष दोनों बैंकों में आर्य समाज, उदयपुर के नाम से है। आर्य समाज, उदयपुर की तीन एफ.डी. हैं जिनमें से दो यूनियन बैंक तथा एक युनाइटेड बैंक में है। एफ. डी. की कुल राशि एक लाख बीस हजार रूपया है। ब्याज की राशि मूल में जुड़ जाती है।

टेलीफोन :

आर्य समाज, उदयपुर में टेलीफोन लगा हुआ है, जिसका नम्बर 2417941 है। यह टेलीफोन इनकमिंग सर्विस के लिये कर रखा है, जिससे छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों से उनके सम्बन्धी बात कर सकें तथा आर्य समाज के अधिकारी भी यदि आर्य समाज के सेवक को कोई सन्देश देना चाहें तो दे सकें तथा बाहर के लोग भी कोई कार्य हो तो संपर्क कर सकें।

पुस्तकालय :

आर्य समाज, उदयपुर में एक अच्छा पुस्तकालय है जिसमें लगभग दो

हजार पुस्तकें हैं। सदस्यों को पुस्तक लेने व पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है। वाचनालय भी पुस्तकालय के कक्ष में ही संचालित होता है।

वैदिक साहित्य विक्रय संचालन

आर्य समाज, उदयपुर में वैदिक साहित्य, विक्रय हेतु उपलब्ध रहता है और जो भी क्रय करना चाहता है, उसको उपलब्ध करवाया जाता है। विक्रय का पूरा हिसाब रखा जाता है तथा क्रय कर्ता को रसीद प्रदान की जाती है।

सभी कमरे महापुरूषों के नाम पर :

आर्य समाज, उदयपुर के सभी 15 कमरों पर महापुरूषों के नाम अंकित किये गये हैं जो इस प्रकार है– (1) दंडी विरजानन्द कक्ष (2) महर्षि दयानन्द कक्ष (3) स्वामी श्रद्धानन्द कक्ष (4) पं. लेखराम कक्ष (5) पं. गुरूदत्त कक्ष (6) राम प्रसाद बिस्मिल कक्ष (7) भगत सिंह कक्ष (8) अशफाकउल्ला कक्ष (9) महाराणा प्रताप कक्ष (10) महर्षि पतंजली कक्ष (11) महर्षि पाणिनी कक्ष (12) चन्द्रशेखर आजाद कक्ष (13) श्याम जी कृष्ण वर्मा कक्ष (14) सुख देव कक्ष (15) राजगुरु कक्ष। ये नाम इसी भावना से दिये गये हैं कि इनमें निवास करने वाले इनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन का निर्माण कर सकें।

डायरेक्टरी :

आर्य समाज, उदयपुर ने अपने सभी सदस्यों की एक डायरेक्टरी बना रखी है जिसमें सदस्य का नाम, पता तथा टेलीफोन नम्बर दिया गया है। यह डायरेक्टरी सभी सदस्यों को उपलब्ध करवाई गई है और आवश्यकतानुसार इसको अपडेट कर दिया जाता है। आर्य समाज के अधिकारियों को सदस्यों से सम्पर्क करने तथा सदस्यों को आपस में एक–दूसरे से सम्पर्क करने में इससे बहुत मदद मिलती है।

ट्यूब वेल :

वर्ष 2003 में आर्य समाज परिसर में साढ़े चार इंच साइज का 200

फीट गहरा एक ट्यूबवेल खुदवाया गया, जिसमें बहुत अच्छा पानी निकला। इसमें टेक्समों का सबमर्सिबल पम्प फिट करवाया गया। ट्यूबवेल को डायरेक्ट पाइप लाइन से जोड़ा गया। इससे पानी की समस्या का स्थायी समाधान हुआ।

शिलालेख :

एक शिलालेख "महर्षि दयानन्द का उदयपुर प्रवास" एवं "उदयपुर में आर्य समाज की स्थापना विषयक बनवाकर मेन गेट पर लगवाया गया। इसका अनावरण आर्य समाज, उदयपुर के प्रधान श्री हरिनारायण जी शर्मा ने दिनांक 18 फरवरी 2004 को ऋषि बोधोत्सव पर किया। शिलालेख का विवरण निम्न प्रकार है।

ओ३म्

" महर्षि दयानन्द सरस्वती का उदयपुर प्रवास"

महर्षि दयानन्द सरस्वती का उदयपुर में प्रवास श्रावण कृष्णा 13 संवत् 1939 वि. (11 अगस्त 1882) से फाल्गुन कृष्णा 6 संवत् 1939 वि. (27 फरवरी 1883) तक रहा।

"उदयपुर में आर्य समाज की स्थापना "

स्वामी दयानन्द के उदयपुर प्रवास के अवसर पर दिये गये प्रवचनों से प्राप्त प्रेरणा द्वारा श्री मोहनलाल पंडया के निवास स्थान पर कार्तिक अमावस्या संवत् 1944 वि. (16 अक्टूबर 1887) को आर्य समाज उदयपुर की स्थापना हुई।

पानेरी मेनारिया समाज द्वारा प्रदत्त भूमि पर चैत्र शुक्ला 13 संवत् 1947 वि. (22 अप्रेल 1891) को आर्य समाज उदयपुर के भवन का शिलान्यास हुआ।

मार्गशीर्ष कृष्णा 12 संवत् 1950 वि. (4 दिसम्बर 1893) को बेदला राव सा. कर्णसिंह जी के कर कमलों द्वारा, पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी

विश्वेश्वरानन्द जी एवं ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी के सानिध्य में आर्य समाज, उदयपुर के भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

सुगन द्वार :

आर्य समाज उदयपुर का मुख्य द्वार श्री बाबू सुगनचन्द जी द्वारा बनवाया गया था, अतः निर्माणकर्ता की स्मृति में द्वार पर "सुगम द्वार" अंकित करवाया गया। यह कार्य भी ऋषि बोधोत्सव 2004 पर ही करवाया गया।

स्वामी व्रतानन्द भवन :

पुराने भवन में जिसमें सर्वप्रथम स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा गुरुकुल प्रारम्भ किया गया था और जिसके निर्माण में उनकी सक्रिय भूमिका रही थी, की स्मृति में भवन पर "स्वामी व्रतानन्द भवन" नाम पट्ट बनवाकर लगवाया गया। यह कार्य भी ऋषि बोधोत्सव 2004 पर ही सम्पन्न करवाया गया।

कमरों का निर्माण :

डॉ. बख्तावरलाल स्मृति भवन (एक कमरा) के निर्माण में बीस हजार रूपये डॉ. बख्तावर लाल जी के पुत्र द्वारा प्रदान किये गये और शेष राशि आर्य समाज ने अपने कोष से प्रदान की। डॉ. बख्तावर लाल भवन का निर्माण कार्य श्री शंकरलालजी मर्मट के निर्देशन में संपन्न हुआ।

एक कमरा श्री पृथ्वीसिंह जी मेहता की स्मृति में बनवाया गया। इस हेतु पंद्रह हजार रूपये श्री पृथ्वीसिंह जी मेहता के परिवार की ओर से प्राप्त हुये तथा शेष राशि आर्य समाज के कोष से व्यय की गई। एक कमरा श्री जयसिंह जी मेहता ने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में बनवाकर आर्य समाज को प्रदान किया । एक कमरा डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त ने अपने माताजी व पिताजी की स्मृति में निर्माण करवाकर आर्य समाज को लोकार्पित किया। एक कमरा श्री मांगीलाल जी शर्मा ने अपने पिताजी एवं धर्मपत्नी की स्मृति में बनवाकर आर्य समाज को भेंट किया। एक कमरा आर्य समाज ने श्री नरेन्द्र पाल सिंह

जी चौधरी के दस हजार रूपये के दान व शेष राशि अपने कोष से मिलाकर निर्माण करवाया तथा एक अतिथि कक्ष भी आर्य समाज ने अपने कोष से निर्माण करवाया। एक कमरा स्व. सुरेंद्रसिंह राठौड़ की स्मृति में उनकी श्रीमती चंद्रलेखा राठौड़ द्वारा एक लाख रुपये दान से निर्मित करा भेंट किया गया। ये सभी कमरे सेवक, विद्यार्थी, अतिथि आदि के निवास हेतु काम में लिये जा रहे हैं। तीन कमरों का निर्माण आर्य समाज ने मुख्य द्वार के पास आरंभ करवाया था किन्तु पड़ौसी श्री धाबाई द्वारा स्टे ले आने के कारण शेष निर्माण कार्य रूका हुआ है।

आर्य समाज द्वारा निर्माण करवाये गये कमरों में निर्माण हेतु राशि आर्य समाज के सदस्य अग्रिम ऋण के रूप में आर्य समाज को प्रदान करते थे और आर्य समाज धीरे–धीरे वह राशि सदस्यों को लौटाता था। इस कार्य हेतु राशि प्रदान करने में श्रीहरिनारायण जी शर्मा, डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त, श्री मांगीलाल जी शर्मा, श्री भवानी दास जी आर्य, श्री नारायण जी मित्तल, श्री शिव प्रकाश जी शास्त्री, श्री हीरा लाल जी सांचोरा, श्री मीठा लाल जी चौधरी, श्री इंद्रदेव जी पीयूष, श्री फतेहलाल जी शर्मा, श्री नंदलाल जी शर्मा का योगदान रहा है। इन कमरों का निर्माण समय–समय पर श्रीहरिनारायण जी शर्मा, श्रीलाल चन्द जी कालरा, श्री मांगीलाल जी शर्मा व डॉ. श्रीरामजी आर्य की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इनके द्वारा प्रदान की गई सेवाएं आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरणा की स्रोत सिद्ध होगी।

श्रीहरि नारायण जी शर्मा का सम्मान :

आर्य समाज के वयोवृद्ध सदस्य (81 वर्षीय) श्री हरिनारायण जी शर्मा का सम्मान दिनांक 4 अप्रेल सन् 2004 को आर्य समाज सत्संग भवन में किया गया। श्री हरि नारायणजी शर्मा आर्य नगरी शाहपुरा के निवासी हैं। स्वामी वेदानन्द जी से सम्पर्क के द्वारा आप आर्य समाज, उदयपुर में सक्रिय कार्य

करने लगे। बांसवाड़ा में स्वामी स्वतंत्रानन्द जी ने भी आपको काफी प्रभावित किया। दयानन्द सेवाश्रम, बांसवाड़ा में आपने एक कमरे का निर्माण करवाया। सन् 1964 में आर्य समाज, उदयपुर में श्री प्रेमचन्द जी गुप्त के आध्यात्मिक प्रवचन सुनकर आपकी काफी रुचि बढ़ी और संगठित होकर कार्य करने में रुचि हुई। सन् 1981 में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह में धन–संग्रह के कार्य में आपकी विशेष भूमिका रही। आपने ही श्री हनुमानप्रसाद जी चौधरी को आर्य समाज उदयपुर से जोड़ा। आपने श्री चौधरी जी को प्रेरणा देकर इक्कीस हजार रूपये का सत्संग भवन का निर्माण करवाया। डॉ. बख्तावर लाल जी के पुत्रों को प्रेरणा देकर आपने बख्तावर लाल स्मृति कक्ष का निर्माण करवाया। श्री पृथ्वीसिंह जी मेहता के परिवार को प्रेरणा देकर आपने पृथ्वी सिंह कक्ष का निर्माण करवाया। नवलखा महल स्वीकरण समारोह की व्यवस्था में व भवन सुधार कार्य में आपका भरपूर योगदान रहा। सर्वप्रथम फरवरी 2001 में यजुर्वेद पारायण यज्ञ अपने निवास पर आपने सम्पन्न करवाया, जिससे अन्य सदस्यों को प्रेरणा मिली। आर्य समाज उदयपुर की संपत्ति एवं रेकार्ड के रखरखाव में आपकी विशेष रूचि रही है। स्वामी अग्निवेशजी द्वारा उदयपुर से नाथद्वारा तक की हरिजनों को नाथद्वारा मंदिर में प्रवेशार्थ जो पद यात्रा आयोजित की गई थी उसमें आपका पूर्ण सहयोग रहा। आपने आर्य समाज उदयपुर के प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रहकर प्रशंसनीय सेवा की है। सम्मान के अन्तर्गत आपको माल्यार्पण कर श्रीफल, अभिनंदन पत्र, शाल एवं स्मृति चिह्न भेंट किया गया एवं दीर्घायु होकर आर्य समाज, उदयपुर का मार्गदर्शन करते रहने की कामना की।

वेद पारायण यज्ञ :

आर्य समाज के उत्सव आदि में तो वेद पारायण यज्ञ कभी–कभी सम्पन्न करवाये जाते हैं। किन्तु सदस्यों के निवास पर वेद पारायण यज्ञ

यदा–कदा ही सम्पन्न करवाये जाते हैं। आर्य समाज उदयपुर के सदस्यों ने इस कार्य में भी पहल की है। फरवरी 2001 में श्री हरिनारायण जी शर्मा ने अपने निवास पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। मई 2002 में डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त ने अपने निवास पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। मई 2005 में श्री भवानीदास जी आर्य ने अपने निवास पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। अक्टूबर 2005 में डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त ने अपने निवास पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न करवाया। इन सभी पारायण यज्ञों में मुख्य वेदपाठी श्री शिवप्रकाश जी शास्त्री थे। अप्रेल–मई 2007 में भी भवानीदास जी आर्य ने अपने निवास पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ संपन्न करवाया। इसके अंतर्गत आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय के प्रवचन भी हुये।

कन्या भ्रूण हत्या विरोधी चेतना रैली व आम सभा :

दिनांक 03.11.2005 को कन्या भ्रूण हत्या विरोधी चेतना रैली टंकारा (1.11.05) से प्रारंभ होकर अहमदाबाद (2.11.05) होती हुई उदयपुर पहुँची। यात्रा का नेतृत्व स्वामी अग्निवेश जी कर रहे थे। टाउन हाल में आर्य समाज के सदस्यों ने रैली का स्वागत किया। नगर में रैली के दौरान आर्य समाज, उदयपुर के बेनर के पीछे आर्य समाज, उदयपुर ने वैदिक साहित्य एवं हवन कुंड आदि एक हाथ ठेले में सजा कर साथ–साथ चलाया तथा सदस्य यथा श्री हरिनारायण जी शर्मा, डॉ. प्रेमचन्द जी गुप्त, डॉ. श्रीरामजी आर्य, श्री सुरेशजी चौहान, डॉ. दीनदयालजी शर्मा, श्री नंदलाल जी शर्मा, श्री शंकरलाल जी मरमट, श्री शिवप्रकाश जी शास्त्री, श्री रूपचन्द जी अग्रवाल आदि रैली एवं आमसभा में सम्मिलित हुये। इससे पूर्व आर्य समाज, उदयपुर दहेज विरोधी चेतना सम्मेलन अपने स्तर पर आयोजित कर चुका है। आर्य समाज, उदयपुर नारी सौंदर्य प्रतियोगिता का आयोजन भी उदयपुर में रुकवाने में सफल हो चुका है। आर्य समाज, उदयपुर की यह सोच रही है कि मातृशक्ति का उत्पीड़न रुकना चाहिये और सम्मान बढ़ना चाहिये।

आर्य समाज उदयपुर के पौधे को सींचने वाले महानुभाव :

आर्य समाज उदयपुर की स्थापना से लेकर वर्तमान स्थिति तक पहुँचाने में अनेक महानुभावों का योगदान रहा है, वे इस प्रकार हैं—

1 श्री मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या
2 श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा
3 श्री ठा. तख्तसिंह बेदला
4 श्री जगन्नाथसिंह मेहता
5 स्वामी विश्वेश्वरानन्द
6 ब्रह्मचारी नित्यानन्द
7 राव सा. कर्ण सिंह बेदला
8 ठा. मनोहरसिंह सरदारगढ़
9 श्री जालिमसिंह देलवाड़ा
10 श्री गोविन्द सिंह बदनौर
11 श्री कृष्ण सिंह बिजोलिया
12 श्री शार्दूल सिंह
13 श्री गज सिंह
14 श्री पन्नालाल मेहता
15 श्री तख्त सिंह मेहता
16 पं. विनायक राव
17 पं. शुकदेव प्रसाद
18 पं. त्रिभुवन लाल
19 श्री लाभचन्द पंचोली
20 श्री गोपीनाथ ओझा
21 श्री ईश्वरीसिंह चंदेल
22 श्री प्रभास चन्द
23 श्री बिनु लाल
24 श्री चतुर्भुज धायभाई
25 श्री रघुवर दयाल
26 श्री रामनारायण
27 श्री सन्तराम सेंगल
28 श्री शिव शंकर शुक्ला
29 डॉ. रामरिछपाल
30 सेठ रुस्तमी
31 मुंशी अहमद खाँ
32 पं. प्यारे किशन कौल
33 वैद्य भानुशंकर
34 पं. श्याम सुन्दरलाल
35 श्री घासीराम पटेल, कुरज
36 श्री जसवंत सिंह महता
37 श्री सौभाग्यसिंह कोठारी
38 श्री जीवनसिंह मेहता
39 श्री मदनसिंह चौधरी
40 श्री नाहरसिंह, सनवाड़
41 श्री नाहर सिंह, शाहपुरा
42 श्री सुजान सिंह कोठारी

43 श्री स्वरूप लाल
44 मिस्तरी लालराम
45 श्री मोतीलाल भंडारी
46 लाला अमृतलाल
47 स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
48 श्री ईश्वरदत्त मेघार्थी
49 प्रो. आशीर्वादी लाल
50 प्रो. शम्भूलाल यज्ञधारी
51 मेजर दौलतसिंह
52 डॉ. बख्तावरलाल
53 ठा. बलवंत सिंह
54 मा. मुरलीधर माथुर
55 श्री भँवरलाल जोशी
56 श्री बाबू रूपशंकर शर्मा
57 श्री मोतीलाल तेजावंत (भील नेता)
58 श्री भँवरलाल पालीवाल
59 श्री वरदीशंकर
60 श्री शांति स्वरूप कुलश्रेष्ठ
61 श्री सौभाग्यसिंह जैन
62 श्री बाबू सुगनचन्द
63 श्री सुगनसिंह कोठारी
64 श्री लालसिंह शक्तावत
65 श्री जवानसिंह राणावत
66 श्री प्यारेलाल चौपड़ा
67 श्रीमती सुभद्रारानी चौपड़ा
68 श्री अमृत लाल सोनी
69 डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
70 श्री हरिनारायण शर्मा
71 श्री पन्नालाल पीयूष
72 श्री स्वरूपसिंह चूंडावत
73 श्री अर्जुनसिंह
74 मास्टर नन्दलाल
75 श्री चुन्नीलाल कपूर
76 प्रो. उमरावसिंह भटनागर
77 श्री बजरंग एम पान्थी
78 स्वामी वेदानन्द सरस्वती
79 ठा. गोविन्द सिंह
80 श्री किशनलाल चौहान
81 श्री वीरेन्द्रपाल सिंह बरणा
82 श्री श्रीकृष्ण पारीक
83 मास्टर अम्बालाल
84 श्री उदयलाल शर्मा
85 श्री इन्दरलाल शर्मा
86 श्री राधाकिशन
87 श्री प्रेम प्रकाश
88 श्री विश्वनाथ शर्मा
89 डॉ. रामशरण शर्मा
90 श्री लालचन्द पेन वाले

91 श्री हुकुमीचन्द तेली
92 श्री नित्यानन्द सरस्वती
93 श्री ईश्वरानन्द सरस्वती
94 श्री भेरूलाल मेघवाल
95 श्री कैलाशचन्द मेघवाल
96 श्री डॉ. हरिलाल ठकुर
97 डॉ. प्रेमचन्द गुप्त
98 डॉ. अमृतलाल तापड़िया
99 डॉ. सुरेन्द्रसिंह राठौड़
100 डॉ. भँवर लाल पोरवाल
101 डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल
102 श्री अनिलकुमार शर्मा
103 श्री जयसिंह मेहता विद्यालंकार
104 श्रीमती मालती अग्रवाल
105 श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता
106 श्री कर्मचन्द वाधवानी
107 श्री हनुमानप्रसाद चौधरी
108 श्री ब्रह्मस्वरूप रस्तोगी
109 श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता
110 श्री शंकरलाल मरमट
111 श्री श्याम लाल मोटवानी
112 श्री भीमशंकर श्रीमाली
113 श्री परमानन्द छाबड़िया
114 श्री भँवरलाल गर्ग
115 श्री हासानन्द कटारिया
116 श्री रामस्वरूप गोयल
117 डॉ. दीनदयाल शर्मा
118 श्रीमती स्नेहलता गुप्ता
119 श्रीमती कुसुमलता नैयर
120 श्रीमती मनोरमा गुप्ता
121 श्रीमती सौभाग्यवती गर्ग
122 श्री फतेहलाल शर्मा
123 श्री ब्रह्मदत्त शर्मा
124 श्री कृष्णकुमार सोनी
125 श्री जगदीशचन्द्र नागर
126 श्री महेन्द्रसिंह भटनागर
127 श्री मनुराम
128 श्री हीरालाल सांचोरा
129 श्री अशोक आर्य
130 श्री भवानीदास आर्य
131 श्री नारायणलाल मित्तल
132 श्री इंद्रदेव पीयूष
133 डॉ. श्रीराम आर्य
134 श्री मुनीन्द्रसिंह भाटी
135 श्री गिरधारीलाल आर्य
136 श्री मीठालाल चौधरी
137 श्री लाजपतसिंह चौहान
138 श्री मांगीलाल शर्मा

139 श्री सुरेशचन्द्र चौहान
140 श्री शिवप्रकाश शास्त्री
141 श्री पन्नालाल अरोड़ा
142 श्री गोपाल भाई चौहान
143 श्री प्रकाश श्रीमाली
144 श्री हुकुमचन्द शास्त्री
145 श्री प्रकाश मेघवाल
146 श्री धूलीराम बंधु
147 श्री माँगीलाल हरिजन
148 श्री प्रदीप आर्य (श्री अग्निव्रत)
149 श्री रामगोपाल आर्य
150 श्री धर्मधर आर्य
151 श्री कैलाशनाथ
152 श्री महेन्द्रकुमार मेघार्थी

आर्य समाज उदयपुर के प्रधान एवं मंत्री

वर्ष	प्रधान	मंत्री
1893–94	श्री जगन्नाथ सिंह	–
1920–21	–	बाबू रामनारायण
1927–28	श्री सुगनचन्द कोठारी	प्रो. शम्भूदयाल यज्ञधारी
1928–29	श्री लालसिंह शक्तावत	श्री सौभाग्यसिंह राठौड़
1934–35	श्री सुगन चन्द	प्रो. शम्भू दयाल यज्ञधारी
1935–36	श्री लालसिंह शक्तावत	श्री बख्तावर लाल
1936–37	श्री सुगन चन्द	श्री बख्तावर लाल
1937–38	श्री सुगन चन्द	श्री बख्तावर लाल
1938–39	श्री सुगन चन्द	श्री बख्तावर लाल
1941–42	–	श्री बख्तावर लाल
1944–45	प्रो. शम्भू दयाल यज्ञधारी	श्री वीरेन्द्रपाल सिंह
1950–51	ठा. बलवंत सिंह	श्री भँवरलाल शर्मा
1951–52	ठा. बलवंत सिंह	श्री भँवरलाल शर्मा
1952–53	ठा. बलवंत सिंह	श्री भँवरलाल शर्मा
1953–54	ठा. बलवंत सिंह	श्री भँवरलाल शर्मा

1954–55	ठा. बलवंत सिंह	श्री भँवरलाल शर्मा
1955–56	श्री प्यारेलाल चौपड़ा	श्री ब्रजमोहन जावलिया
1956–57	श्री प्यारेलाल चौपड़ा	श्री ब्रजमोहन जावलिया
1957–58	श्री प्यारेलाल चौपड़ा	श्री इन्दरलाल शर्मा
1958–59	श्री प्यारेलाल चौपड़ा	श्री अनिल कुमार शर्मा
1959–60	श्री रूपशंकर शर्मा	श्री अम्बालाल
1960–61	श्री रूपशंकर शर्मा	श्री अम्बालाल
1961–62	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री अनिलकुमार शर्मा
1962–63	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री अनिलकुमार शर्मा
1963–64	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री अनिलकुमार शर्मा
1964–65	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री अनिलकुमार शर्मा
1965–66	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री अनिलकुमार शर्मा
1966–67	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री मदनलाल मेहता
1967–68	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री मदनलाल मेहता
1968–69	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री प्रेमचन्द गुप्त
1969–70	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री रामस्वरूप गोयल
1970–71	ठॉ. बलवंत सिंह	श्री हरिनारायण शर्मा
1971–72	ठॉ. बलवंत सिंह	डॉ. अमृतलाल तापड़िया
1972–73	श्री अनिल कुमार शर्मा	श्री परमानन्द छाबड़िया
1973–74	डॉ. हरिलाल ठकुर	श्री अनिल कुमार शर्मा
1974–75	डॉ. हरिलाल ठकुर	डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
1975–76	डॉ. हरिलाल ठकुर	डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
1976–77	श्री जयसिंह मेहता	डॉ. अमृतलाल तापड़िया
1977–78	श्री जय सिंह मेहता	डॉ. अमृतलाल तापड़िया

1978–79	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	डॉ. अमृतलाल तापड़िया
1979–80	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	श्री हरि नारायण शर्मा
1980–81	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	डॉ. अमृत लाल जी तापड़िया
1981–82	श्री जयसिंह मेह्ता	डॉ. अमृतलाल तापड़िया
1982–83	डॉ. ब्रजमोहन जावलिया	श्री ब्रह्मस्वरूप रस्तोगी
1983–84	श्री सुरेशचन्द गुप्ता	श्री ब्रह्मस्वरूप रस्तोगी
1984–85	श्री जयसिंह मेहता	श्री शंकर लाल मरमट
1985–86	श्रीमती मालती अग्रवाल	श्री ज्ञानप्रकाश गुप्ता
1986–87	श्रीमती मालती अग्रवाल	श्री फतेहलाल शर्मा
1987–88	श्री जयसिंह मेहता	श्री पन्नालाल अरोड़ा
1988–89	श्री जयसिंह मेहता	श्री हरि नारायण शर्मा
1989–90	श्रीमती मालती अग्रवाल	श्री शंकरलाल मरमट
1990–91	डॉ. ब्रजमोहन जावलिया	श्री हरिनारायण शर्मा
1991–92	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री शंकरलाल मरमट
1992–93	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री हरि नारायण शर्मा
1993–94	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री अम्बालाल गौड़
1994–95	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री प्रकाश मेघवाल
1995–96	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री शिव प्रकाश शास्त्री
1996–97	श्री हनुमान प्रसाद चौधरी	श्री भँवरलाल गर्ग
1997–98	श्री हरिनाराय्यण शर्मा	डॉ. दीनदयाल शर्मा
1998–99	श्री भवानी दास आर्य	श्री नारायणलाल मित्तल
1999–2000	श्री भवानी दास आर्य	श्री हरिनारायण शर्मा
2000–2001	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	श्री हरिनारायण शर्मा
2001–2002	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	डॉ. श्रीराम आर्य

2002—2003	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	डॉ. श्रीराम आर्य
2003—2004	श्री हरिनारायण शर्मा	डॉ. श्रीराम आर्य
2004—2005	डॉ. प्रेमचन्द गुप्त	श्री हरिनारायण शर्मा
2005—2006	श्री हरिनारायण शर्मा	श्री सुरेशचन्द्र चौहान
2006—2007	डॉ प्रेमचन्द गुप्त	डॉ. श्रीराम आर्य
2007—2008	डॉ. प्रेमचंद गुप्त	डॉ. श्रीराम आर्य
2008—2009	श्रीमती स्नेहलता गुप्ता	श्री सुरेशचंद चौहान

गुरु शिष्य परम्परा
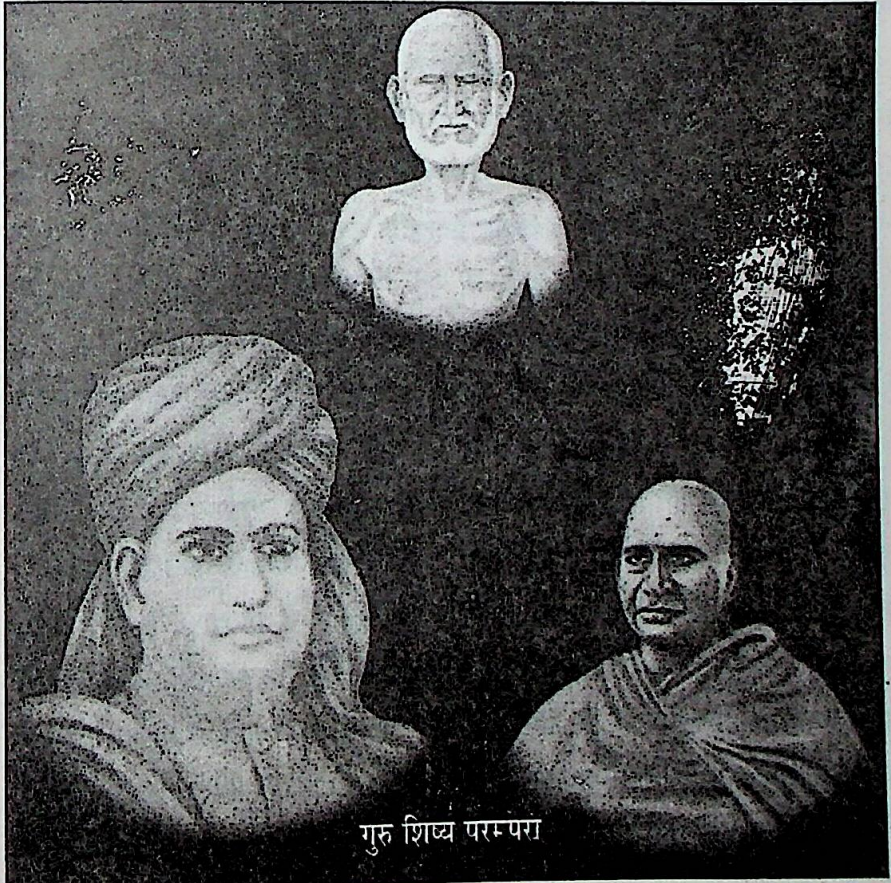
परिशिष्ट–1

"स्वामी दयानंद जी महाराज और मौलवी अब्दुर्रहमान साहब सुपरिंटेंडेंट पुलिस तथा न्यायाधीश, न्यायालय उदयपुर, मेवाड़ देश के मध्य होने वाला शास्त्रार्थ"

११ सितंबर, सन् १८८२ तदनुसार भादो बदि चौदश,
संवत् १६३६, सोमवार।

मौलवी साहब– (प्रथम प्रश्न) ऐसा कौन सा मत है जिसकी मूल पुस्तक सब मनुष्यों की बोलचाल और समस्त प्राकृतिक बातों को सिद्ध करने में पूर्ण हो। जब बड़े–बड़े मतों पर विचार किया जाता है जैसे भारतीय वेद पुराण या चीन वाले चीनी, जापानी, बर्मी बौद्ध वाले, फार्सी जिन्द वाले, यहूदी तौरेत वाले, नसरानी इन्जील वाले, मौहम्मदी कुरान वाले तो प्रकट होता है कि उनके धार्मिक नियम और मूल विशेष एक देश में एक भाषा के द्वारा एक प्रकार से ऐसे बनाए गए हैं जो एक दूसरे से नहीं मिलते और इन मतों में से प्रत्येक मत के समस्त गुण और विशेष चमत्कार उसी देश तक सीमित हैं जहाँ वह बना है, जिनमें से कोई एक लक्षण तथा चिह्न उसी देश के अतिरिक्त दूसरे देश में नहीं पाया जाता, प्रत्युत दूसरे देश वाले अनभिज्ञता के कारण उसे बुरा जानकर उसके प्रति मानवी व्यवहार तो क्या उसका मुख तक देखना नहीं चाहते। ऐसी दशा में सब मतों में से कौनसा मत सत्य समझना चाहिए।

उत्तर स्वामी जी का– मतों की पुस्तकों में से विश्वास के योग्य एक भी नहीं क्योंकि पक्षपात से पूर्ण है। जो विद्या की पुस्तक पक्षपात से जो रहित है वह मेरे विचार में सत्य है और ऐसी पुस्तक का साधारण प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध न होना भी आवश्यक है। मैंने जो खोज की है उसके अनुसार वेदों के अतिरिक्त कोई पुस्तक ऐसा नहीं है जो विश्वास के योग्य हो क्योंकि समस्त

पुस्तकें किसी न किसी देश विशेष की भाषा में हैं और वेद की भाषा किसी देश विशेष की भाषा नहीं है, केवल विद्या की भाषा है। क्योंकि यह विद्या की पुस्तक है, इसी कारण से किसी मत विशेष से संबंध नहीं रखती। यही पुस्तक समस्त देशीय भाषाओं का मूल कारण है और पूर्ण होने से प्रसिद्ध भलाइयों तथा निषिद्ध बुराइयों की परिचायक है और समस्त प्राकृतिक नियमों के अनुकूल है।

प्रश्न मौ.– क्या वेद मत की पुस्तक नहीं है?

उत्तर स्वा.– वेद मत की पुस्तक नहीं है प्रत्युत विद्या की पुस्तक है।

प्रश्न मौ.– मत का आप क्या अर्थ करते हैं?

उत्तर स्वा.– पक्षपात सहित को मत कहते हैं इसी कारण से मत की पुस्तक सर्वथा मान्य नहीं हो सकती।

प्रश्न मौ.– हमारे पूछने का अभिप्राय यह है कि समस्त मनुष्यों की भाषाओं पर तथा समस्त मनुष्यों के आचारों पर और समस्त प्राकृतिक नियमों पर कौन–सी पुस्तक पूर्ण है सो आपने वेद निश्चित किया। सो वेद इस योग्य है या नहीं?

उत्तर स्वा.– हाँ है।

प्रश्न मौ.– आपने कहा कि वेद किसी देश की भाषा नहीं। जो किसी देश की भाषा नहीं होती उसके अंतर्गत समस्त भाषाएं कैसे हो सकती हैं?

उत्तर स्वा.– जो किसी देश विशेष की भाषा होती है वह किसी दूसरी देश भाषा में व्यापक नहीं हो सकती क्योंकि उसी में बद्ध (सीमित) है।

प्रश्न मौ.– जब एक देश की भाषा होने से वह दूसरे देश में नहीं मिलती तो, तब वह किसी देश की है ही नहीं तो सब में व्यापक कैसे हो सकती है?

उत्तर स्वा.– जो एक देश की भाषा है उसका व्यापक कहना सर्वथा विरुद्ध है और जो किसी देश विशेष की भाषा नहीं वह सब भाषाओं में व्यापक है जैसे आकाश किसी देश विशेष का नहीं है इसी से सब देशों में व्यापक है।

ऐसे वेद की भाषा भी किसी देश विशेष से संबंध न रखने से व्यापक है।

प्रश्न मौ.– यह भाषा किसकी है?

उत्तर स्वा.– विद्या की।

प्रश्न मौ.– बोलने वाला इसका कौन है?

उत्तर स्वा.– इसका बोलने वाला सर्वदेशी है।

मौलवी– तो वह कौन है?

स्वामी– वह परब्रह्म है।

मौलवी– यह किसको संबोधन की गई है?

स्वामी– आदि सृष्टि में इसके सुनने वाले चार ऋषि थे जिनका नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा था। इन चारों ने ईश्वर से शिक्षा प्राप्त करके दूसरों को सुनाया।

मौलवी– इन चारों को ही विशेषरूप से क्यों सुनाया?

स्वामी– वे चार ही सब में पुण्यात्मा और उत्तम थे।

मौलवी– क्या इस बोली को वे जानते थे?

स्वामी– उस जानने वाले ने उसी समय उनकी भाषा भी जना दी थी अर्थात उस शिक्षक ने उसी समय उनको भाषा का ज्ञान दे दिया।

मौलवी– इसको आप किन युक्तियों से सिद्ध करते हैं?

स्वामी– बिना कारण के कार्य कोई नहीं हो सकता।

मौलवी– बिना कारण के कार्य होता है या नहीं?

स्वामी– नहीं।

मौलवी– इस बात की क्या साक्षी है?

स्वामी– ब्रह्मादिक अनेक ऋषियों की साक्षी है और उनके ग्रंथ भी विद्यमान है।

मौलवी– यह साक्षी संदेहात्मक और बुद्धिविरुद्ध है। कारण कथन

कीजिए।

स्वामी– वेद की साक्षी स्वयं वेद से प्रकट है।

मौलवी– इसी प्रकार सब मतवाले भी अपनी–अपनी पुस्तकों में कहते हैं।

स्वामी– ऐसी बात दूसरे मतवालों की पुस्तकों में नहीं है और न वे सिद्ध कर सकते हैं।

मौलवी– पुस्तक वाले सभी सिद्ध कर सकते हैं।

स्वामी– मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मतवाले ऐसा सिद्ध नहीं कर सकते (और यदि कर सकते हैं तो बताइये कि मौहम्मद साहब के पास कुरान कैसे पहुंचा)।

मौलवी– जैसे चारों ऋषियों के पास वेद आया।

नोट– खेद है कि मौलवी साहब ने बिना सोचे समझे ऐसा कह दिया। यह किसी प्रकार ठीक नहीं। न तो कुरान आदि सृष्टि में मोहम्मद साहब की आत्मा में प्रकाशित हुआ और न उसमें वर्णित कहानियां ही ऐसी हैं जो आदि सृष्टि से संबंधित हों और न उसकी भाषा ही ऐसी है। मोहम्मद साहब और खुदा के मध्य में जबराइल और असंख्य फरिश्तों की चौकीदारी और पहरा और आकाश से उतरना आदि समस्त बातें ऐसी हैं जिनसे कोई मौहम्मदी भाई इंकार नहीं कर सकता। इसलिए कुरान किसी प्रकार भी इस विशेषण का पात्र नहीं हो सकता और उस्मान और कुरानों के बदलने की कहानी इसके अतिरिक्त है। – **संपादक**

दूसरा प्रश्न–

प्रश्न मौलवी– समस्त संसार के मनुष्य एक जाति के हैं अथवा कई जातियों के?

उत्तर स्वामी– जुदी–जुदी जातियों के हैं।

मौलवी– किस युक्ति से?

स्वामी– सृष्टि की आदि में ईश्वरीय सृष्टि में उतने जीव मनुष्य शशीर धारण करते हैं कि जितने गर्भ सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं और वे जीव असंख्य होने से अनेक हैं।

मौलवी– इसका प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है?

स्वामी– अब भी सब ही अनेक माँ–बाप के पुत्र हैं।

मौलवी– इसके विश्वसनीय प्रमाण कहिये।

स्वामी– प्रत्यक्षादि आठों प्रमाण।

मौलवी– वे कौन से हैं?

स्वामी– प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, ऐतिह्य, संभव, उपमान, अभाव, अर्थापत्ति।

मौलवी– इन आठों में से एक–एक का उदाहरण दे कर सिद्ध कीजिए।

प्रश्न मौलवी– ये जो आकार मनुष्यों के हैं, इनके शरीर एक प्रकार के बने अथवा भिन्न–भिन्न प्रकार के बने?

उत्तर स्वामी– मुख आदियों में एक से हैं, रंगों में कुछ भेद है।

मौलवी– किस–किस रंग में क्या–क्या भेद है?

स्वामी– छोटाई–बड़ाई में किंचिन्मात्र अंतर है।

मौलवी– यह अंतर एक देश अथवा एक जाति में एक ही प्रकार के हैं अथवा भिन्न–भिन्न देशों में भिन्न–भिन्न प्रकार के?

स्वामी– एक–एक देश में अनेक हैं। जैसे एक माँ–बाप के पुत्रों में भी भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं।

मौलवी– हम जब संसार की अवस्था पर दृष्टिपात करते हैं तो आपके कथनानुसार नहीं पाते। एक ही देश में कई जातियाँ जैसे हिंदी, हब्शी,

चीनी, इत्यादि देखने में पृथक्–पृथक् विदित होती है अर्थात् चीन वाले दाढ़ी नहीं रखते और तिकौने मुँह के होते हैं। हब्शी, मलन्गाई, चीनी, तीनों की आकृतियाँ परस्पर नहीं मिलतीं। एक ही देश में यह भेद क्योंकर है?

स्वामी– उनमें भी अंतर है।

मौलवी– दाढ़ी न निकलने का क्या कारण है?

स्वामी– देशकाल और माँ–बाप आदि के शरीरों में कुछ–कुछ भेद है। समस्त शरीर रज वोर्य्य के अनुसार बनते हैं। वात, पित्त, कफ आदि धातुओं के संयोग वियोग से भी कुछ भेद होते हैं।

मौलवी– हम समस्त संसार में तीन प्रकार के मनुष्य देखते हैं, जिनका विभाजन इस प्रकार है– दाढ़ी वाले, बिना दाढ़ी के, घुंघरू बाल वाले। दाढ़ी वाले भारतीय, फिरंगी, अर्बी, मिश्री आदि। वे दाढ़ी वाले चीनी, जापानी, कैमिस्टका के। घुंघरू बाल वाले हब्शी। इन तीनों की बनावट और प्रकार में बहुत–सा भेद है। एक–दूसरे से नहीं मिलता और यह भेद आपके कथनानुसार ऊपर वाले कारणों से है। यदि एक देश के रहने वाले ये तीनों प्रकार के मनुष्य दूसरे देश में जाकर रहें तो कभी भेद नहीं होता। जाति समान है। इस अवस्था में संसार के मूलपुरुष आपके कथनानुसार तीन हुए, अधिक नहीं।

स्वामी– भोटियों को किस में मिलाते हैं। वे किसी से नहीं मिलते। इस प्रकार तीन से अधिक सम्पत्ति विदित होती है।

मौलवी– जैसा भेद इन तीनों में है वैसा दूसरे में नहीं। तीनों जातियों का परस्पर मिल जाना इस थोड़े भेद का क़ारण है परंतु इन तीनों की आकृति एक–दूसरे से नहीं मिलती।

तीसरा प्रश्न–

प्रश्न मौलवी– मनुष्य की उत्पत्ति कब से है और अंत कब होगा?

उत्तर स्वामी– एक अरब छयानवे करोड़ और कितने लाख वर्ष

उत्पत्ति की हुए और दो अरब वर्ष से कुछ ऊपर तक और रहेगी।

मौलवी– इसका क्या कारण और प्रमाण है?

स्वामी– इसका हिसाब विद्या और ज्योतिष शास्त्र से है।

मौलवी– वह हिसाब बतलाइये?

स्वामी– भूमिका के पहले अंक में लिखा है और हमारे ज्योतिषशास्त्र से सिद्ध है, देख लो।

चौथा प्रश्न–

(१३ सितंबर, सन् १८८२, बुधवार तदनुसार
भादो सुदि एकम, संवत् १६३६ विक्रमी)

प्रश्न (मौलवी जी की ओर से)– आप धर्म के नेता हैं या विद्या के अर्थात् आप किसी धर्म के मानने वाले हैं या नहीं?

उत्तर (स्वामी जी की ओर से)– जो धर्म विद्या से सिद्ध होता है उसको मानते हैं।

प्रश्न मौलवी– आपने किस प्रकार जाना की ब्रह्म ने चारों ऋषियों को वेद पढ़ाया?

उत्तर स्वामी– प्रदान किए गए वेदों के पढ़ने से और विश्वसनीय विद्वानों की साक्षी से।

मौलवी– यह साक्षी आप तक किस प्रकार पहुंची?

स्वामी– शब्दानुक्रम से और उनके ग्रंथों से।

मौलवी– प्रश्नों से पूर्व परसों यह निश्चित हुआ था कि उत्तर बुद्धि के आधार पर दिए जायेंगे, पुस्तकों के आधार पर नहीं। अब आप उसके विरुद्ध ग्रंथों की साक्षी देते हैं।

स्वामी– बुद्धि के अनुकूल वह है जो विद्या से सिद्ध हो चाहे वह लिखित हो अथवा वाणी द्वारा कहा जावे। समस्त बुद्धिमान इसको मानते हैं

और आप भी।

मौलवी– इस कथन के अनुसार ब्रह्म का चारों ऋषियों को वेद की शिक्षा देना विद्या अथवा बुद्धि द्वारा किस प्रकार सिद्ध होता है?

स्वामी– बिना कारण के कार्य नहीं हो सकता इसलिए विद्या का भी कोई कारण चाहिए और विद्या का कारण वह है कि जो सनातन हो। यह सनातन विद्या परमेश्वर में उसकी कारीगरी को देखने से सिद्ध होती है। जिस प्रकार वह समस्त सृष्टि का निमित्त कारण है उसी प्रकार उसकी विद्या भी समस्त मनुष्यों की विद्या का कारण है। यदि वह उन ऋषियों को शिक्षा न देता तो सृष्टि–नियम के अनुकूल यह जो विद्या की पुस्तक है, इसका क्रम ही न चलता।

मौलवी– ब्रह्म ने वेद चारों ऋषियों को पृथक्–पृथक् पढ़ाया अथवा एक साथ क्रमशः शिक्षा दी अथवा एक काल में पढ़ाया?

स्वामी– ब्रह्म व्यापक होने के कारण चारों को पृथक्–पृथक् और क्रमशः पढ़ाता गया क्योंकि वे चारों परिमित बुद्धि वाले होने के कारण एक ही समय कई विद्याओं को नहीं सीख सकते थे और प्रत्येक बुद्धिप्राप्ति की शक्ति भिन्न–भिन्न होने के कारण कभी चारों एक समय में और कभी पृथक्–पृथक् समझकर एक साथ पढ़ते रहे। जिस प्रकार चारों वेद पृथक्–पृथक् है उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को एक–एक वेद पढ़ाया।

मौलवी– शिक्षा देने में कितना समय लगा?

स्वामी– जितना समय उनकी बुद्धि की दृढ़ता के लिए आवश्यक था।

नोट– (इससे आगे मौलवी साहब के स्थान पर मौ. और स्वामी के स्थान पर स्वा. लिखा जाएगा)

मौ.– पढ़ाना मानसिक प्रेरणा के द्वारा था अथवा शब्द अक्षर आदि

के द्वारा जो वेद में लिखे हुए हैं अर्थात क्या शब्द अर्थ संबंध सहित पढ़ाया?

स्वा.– वही अक्षर जो वेद में लिखे हुए हैं शब्दार्थ संबंध रहित पढ़ाए गए।

मौ.– शब्द बोलने के लिए मुख, जिह्वादि साधनों की अपेक्षा है। शिक्षा देने वाले में यह साधन हैं या नहीं?

स्वा.– उसमें ये साधन नहीं हैं क्योंकि वह निराकार है। शिक्षा देने के लिए परमेश्वर अवयवों तथा बोलने के साधनादि से रहित है।

मौ.– शब्द कैसे बोला गया?

स्वा.– जैसा आत्मा और मन में बोला सुना और समझा जाता है।

मौ.– भाषा को जाने बिना शब्द किस प्रकार उनके मन में आए?

स्वा.– ईश्वर के डोलने से क्योंकि वह सर्वव्यापक है।

मौ.– इस सारे वार्तालाप में दो बातें बुद्धि के विरुद्ध हैं– प्रथम यह कि ब्रह्म ने केवल चार ही मनुष्यों को उस भाषा में वेद की शिक्षा दी जो किसी देश अथवा जाति की भाषा नहीं। दूसरे यह कि उच्चारित शब्द जो पहले से जाने हुए न थे, दिल में डाले गए और उन्होंने ठीक समझे। यदि यह स्वीकार किया जावे तो फिर समस्त बुद्धिविरुद्ध बातें जैसे चमत्कारादि सब मतों के सत्य स्वीकार करने चाहिए।

स्वा.– ये दोनों बातें बुद्धिविरुद्ध नहीं क्योंकि ये दोनों ही सच्ची हैं। जो कुछ जिह्वा से अथवा आत्मा से बताया जावे वह शब्दों के बिना नहीं हो सकता। उसने जब शब्द बतलाए तो उनमें ग्रहण करने की शक्ति थी। उसके द्वारा उन्होंने परमेश्वर के ग्रहण कराने से योग्यतानुसार ग्रहण किया और बोलने के साधनों की आवश्यकता बोलने और सुनने वाले के अलग–अलग होने पर होती है क्योंकि जो वक्ता मुख से न कहे और श्रोता के कान न हों तो न कोई शिक्षा कर सकता है और न कोई श्रवण। परमेश्वर चूंकि सर्वव्यापक हैं इसलिए उनके आत्मा में भी विद्यामान था, पृथक् न था। परमेश्वर ने अपनी

सनातन विद्या के शब्दों को उनके अर्थात् चारों के आत्माओं में प्रकट किया और सिखाया। जैसे किसी अन्य देश की भाषा का ज्ञाता किसी अन्य देश के अनभिज्ञ मनुष्य को जिसने उस भाषा का कोई शब्द नहीं सुना, सिखा देता है। उसी प्रकार परमेश्वर ने जिसकी विद्या व्यापक है और जो उस विद्या की भाषा को भी जानता था, उनको सिखा दिया। ये बातें बुद्धिविरुद्ध नहीं। जो इनको बुद्धिविरुद्ध कहे वह अपने दावे को युक्तियों द्वारा सिद्ध करें। पुराण जो पुरानी पुस्तकें हैं अर्थात वेद के चार ब्राह्मण हैं, वे वहीं तक सत्य हैं जहाँ तक वेदविरुद्ध न हों। और जो अठारह पुराण नवीन हैं जैसे भागवत, पद्मपुराणादि, वे प्राकृतिक नियमों और विद्या के विरुद्ध होने से सत्य नहीं, नितांत झूठे हैं।

मौ.– पुराण मत की पुस्तकें हैं या विद्या की?

स्वा.– वह प्राचीन पुस्तकें अर्थात् चारों ब्राह्मण विद्या की और पिछली भागवतादि पुराण मत की पुस्तकें हैं जैसे कि अन्य मत के ग्रंथ।

मौ.– जब वेद विद्या की पुस्तक हैं और पुराण मत की पुस्तकें हैं और आपके कथनानुसार असत्य हैं तो आर्यों का धर्म क्या है?

स्वा.– धर्म वह है, जिसमें निष्पक्षता, न्याय और सत्य का स्वीकार और असत्य का अस्वीकार हो। वेदों में भी उसी का वर्णन है और वही आर्य्यों का प्राचीन धर्म हैं और पुराण केवल पक्षपातपूर्ण संप्रदायों अर्थात शैव, वैष्णवादि से संबंधित हैं जैसे कि अन्य मत के ग्रंथ।

मौ.– पक्षपात आप किसको कहते हैं?

स्वा.– जो अविद्या, काम, क्रोध, लोभ, मोह, कुसंग से किसी अपने स्वार्थ के लिए न्याय और सत्य को छोड़कर असत्य और अन्याय को धारण करना है, वह पक्षपात कहलाता है।

मौ.– यदि कोई इन गुणों से रहित हो, आर्य्य न हो तो आर्य्य लोग उसके साथ भोजन और विवाहादि व्यवहार करेंगे या नहीं?

स्वां.– विद्वान् पुरुष भोजन तथा विवाह को धर्म अथवा अधर्म से संबंधित नहीं मानते प्रत्युत इसका संबंध विशेष रीतियों, देश तका समीपस्थ वर्गों से है। इसके ग्रहण अथवा त्याग से धर्म की उन्नति अथवा हानि नहीं होतीं, परंतु किसी देश अथवा वर्ग में रहकर किसी अन्य मतवाले के साथ इन दोनों कार्य्यों में सम्मिलित होना हानिकारक है इसलिए करना अनुचित है। जो लोग भोजन तथा विवाहादि पर ही धर्म अथवा अधर्म का आधार समझते हैं उनका सुधार करना विद्वानों को आश्वयक है यदि कोई विद्वान् उनसे पृथक हो जावे तो वर्ग को उससे घृणा होगी और यह घृणा उसको शिक्षा का लाभ उ़ठाने से वंचित रखेगी। सब विद्याओं का निष्कर्ष यह है कि दूसरों को लाभ पहुंचाना और दूसऱों को हानि पहुंचाना उचित नहीं।

पांचवां प्रश्न–

(रविवार १७ सितंबर, सन् १८८२ तदनुसार
भादो सुदि पंचमी संवत् १९३९ विक्रमी)

प्रथम मौ.– समस्त धर्म वाले अपनी धार्मिक पुस्तकों को सबसे उत्तम और उनकी भाषा को सर्वश्रेष्ठ कहते हैं और उसको उस कारण का कार्य भी कहते हैं। जिस प्रकार की बौद्धिकयुत्तियाँ वे देते हैं उसी प्रकार आपने भी वेद के विषय में कहा। कोई प्रमाण प्रकट नहीं किया, फिर वेद में क्या विशेषता है?

स्वा.– पहले भी इसका उत्तर दे दिया गया है कि प्रत्याक्षी आदि प्रमाणों और प्रांकृतिक नियमों के विरुद्ध विषय जिन पुस्तकों में होंगे वे सर्वज्ञ की बनाई हुई नहीं हो सकती और कार्य का होना कारण के बिना असंभव है। चार मत जो कि समस्त मतों का मूल है अर्थात पुराणी, जैनी, इंजील तौरेत वाले किरानी, कुरानी इनकी पुस्तकें मैंने कुछ देखी हैं और इस समय भी मेरे पास हैं और मैं इनके बारे में कुछ कह भी सकता हूँ और पुस्तक भी दिखा

सकता हूँ। उदाहरणार्थ– पुराण वाले एक शरीर से सृष्टि का आरंभ मानते हैं यह अशुद्ध है क्योंकि शरीर संयोगज है, इसलिए वह कार्य है उसके लिए कर्ता की अपेक्षा है।

जिन्होंने इस कार्य को इस प्रकार सनातन माना है कि कोई इसका रचयिता नहीं, वह भी अशुद्ध है क्योंकि संयोगज पदार्थ स्वयं नहीं बनता। इंजील और कुरान में अभाव से भाव माना है। ये चारों बातें उदाहरणार्थ विद्या के नियमों के विरुद्ध है, इसलिए इनकी वेद से समता नहीं कर सकते। वेदों में कारण से कार्य को माना है और कारण को अनादि कहा है। कार्य को प्रवाह से अनादि और संयोगज होने के कारण शांत बताया है। इसको समस्त बुद्धिमान मानते हैं। मैं सत्य और असत्य वचनों के कारण वेद की सत्यता और मतस्थ पुस्तकों की असत्यता कथन करता हूं; यदि कोई सज्जन इसको प्रकट रूप में देखना चाहे तो मैं किसी दिन तीन घंटे के भीतर उन मतों की पुस्तकों को प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध सिद्ध करके दिखा सकता हूँ। यदि कोई नास्तिक वेद में से प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध कोई बात दिखायेगा तो उसको विचार करने के बाद केवल अपनी अज्ञानता ही स्वीकार करनी पड़ेगी। इसलिए वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक है न किसी मत विशेष की।

छठा प्रश्न–

प्रश्न मौ.– क्या प्रकृति अनादि है?

उत्तर स्वा.– उपादान कारण अनादि है।

मौलवी– अनादि आप कितने पदार्थों को मानते हैं?

स्वा.– तीन। परमात्मा, जीव और सृष्टि का कारण– यह तीनों स्वभाव से अनादि है। इनका संयोग, वियोग, कर्म तथा उनका फल भोग प्रवाह में अनादि है। कारण का उदाहरण– जैसे घड़ा कार्य, उसका उपादान कारण मिट्टी बनाने वाला अर्थात् निमित्त कारण कुम्हार चक्र दंडादि साधारण कारण,

काल तथा आकाश समवाय कारण।

मौ.– वह वस्तु जिसको हमारी बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती, हम उसको अनादि क्योंकर मान सकते हैं?

स्वा.– जो वस्तु नहीं है वह कभी नहीं हो सकती और जो है वही होती है। जैसे इस सभा के मनुष्य जो थे तो यहाँ आए। यहाँ हैं तो फिर भी कहीं होंगे। बिना कारण के कार्य का मानना ऐसा है जैसे बंध्या के पुत्र उत्पन्न होने की बात कहना। कार्य वस्तु से चारों कारण जिनका ऊपर वर्णन किया है, पहले माननें पड़ेंगे। संसार में कोई ऐसा कार्य नहीं जिसके पूर्वकथित चार कारण न हों।

मौ.– संभव है कि जगत का कारण जिसे आप अनादि कहते हैं, कदाचित् वह भी किसी अन्य वस्तु का कार्य हो। जैसे कि बिजली के बनने में कई साधारण वस्तुएं मिलकर ऐसी शक्ति उत्पन्न हो जाती है जो अत्यंत महान् है। इस वार्तालाप के परिणाम से प्रकट है कि प्रत्येक वस्तु के लिए कोई कारण चाहिए तो कारण के लिए भी कोई कारण अवश्य होगा।

स्वा.– अनादि कारण उसका नाम है जो किसी का कार्य न हो। जो किसी का कार्य हो उसको अनादि अथवा सनातन कारण नहीं कह सकते किंतु वह परंपरा और पूर्वापर संबंध से कार्य कारण नाम वाला होता है। यह बात सब विद्वानों को जो पदार्थ विद्या को यथावत् जानते हैं, स्वीकरणीय है। किसी वस्तु को चाहे जहाँ तक अवस्थांतर में विभक्त करते चले जाएं, चाहे वह सूक्ष्म हो चाहे स्थूल, जो उसकी अंतिम अवस्था होगी, उसको कारण कहते हैं और जो यह बिजली का दृष्टांत दिया, वह भी निश्चित कारणों से होता है जो उसके लिए आवश्यक है। अन्य कारणों से वह नहीं हो सकती।

सातवां प्रश्न–

मौ.– यदि वेद ईश्वर का बनाया होता तो अन्य प्राकृतिक पदार्थों

सूर्य, जल तथा वायु के समान संसार के समस्त साधारण मनुष्यों को लाभ पहुंचाना चाहिए था।

स्वा.– सूर्यादि सृष्टि के समान ही वेदों से सबको लाभ पहुंचता है क्योंकि सब मतों और विद्या की पुस्तकों का आदिकारण वेद ही हैं। और इन पुस्तकों में विद्या के विरुद्ध जो बातें हैं वे अविद्या के संबंध से हैं क्योंकि वे सब पुस्तकें वेद के पीछे बनी हैं। वेद के अनादि होने का प्रमाण यह है कि अन्य प्रत्येक मत की पुस्तक में वेद की बात गौण अथवा प्रत्यक्ष रूप से पाई जाती है और वेदों में किसी का खंडन मंडन नहीं। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्यादि से अधिक उपकार लेते हैं वैसे ही वेद के पढ़ने वाले भी वेद से अधिक उपकार लेते हैं और नहीं पढ़ने वाले कम।

मौ.– कोई इस दावे को स्वीकार नहीं करता कि किसी काल में वेद को समस्त मनुष्यों ने माना हो और न किसी मत की पुस्तक में प्रत्यक्ष अथवा गौण रूप से वेदों का खंडन मंडन पाया जाता है।

स्वा.– वेद का खंडन मंडन पुस्तकों में है, जैसे कुरान में बेकिताब वाले और एक उसी ईश्वर के मानने वाले जैसे बाइबिल में पिता पुत्र और पवित्रात्मा, होम की भेंट, ईश्वर की प्रिय, याजक, महायाजक, यज्ञ, महायज्ञ आदि शब्द आते हैं। जितने मतों के पुस्तक बने हुए हैं– बीच के काल के हैं। उस समय के इतिहास से सिद्ध है कि मुसलमान, ईसाई आदि जंगली थे तो जंगलियों को विद्या से क्या काम। पूर्व के विद्वान् पुरुष वेदों को मानते थे और वर्तमान समय में शब्द विद्या (फिलालोजी) के परीक्षक मेक्षमूलर आदि विद्वान भी संस्कृत भाषा तथा ऋग्वेदादि को सब भाषाओं का मूल निश्चित करते हैं। जब बाइबिल कुरान नहीं बने थे तब वेद के अतिरिक्त दूसरी मानने योग्य पुस्तक कोई भी नहीं थी। मनुष्य की उत्पत्ति का आदि काल ही ऋषियों की वेदप्राप्ति का समय है जिसको १९६०८५२९९७ वर्ष हुए। इससे प्राचीन कोई

पुस्तक नहीं है।

पांडे मोहनलाल जी ने कहा कि मौलवी साहब के शास्त्रार्थ के प्रथम दिन तो राणा साहब नहीं आए थे परंतु उन्होंने शास्त्रार्थ लिखित होना स्वीकार किया था। अंतिम दिन श्री महाराज पधारे और मौलवी साहब ही हठ देखकर श्री दरबार साहब ने कहा कि जो कुछ स्वामी जी ने कहा है वह निस्संदेह ठीक है। फिर शास्त्रार्थ नहीं हुआ। कविराज श्यामलदास जी ने भी इसका समर्थन किया। (दयानंद शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर संग्रह के साभार)

महाराणा प्रवचन सुनते हुए

परिशिष्ट–2

महाराणा सज्जनसिंह द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती को दिया गया विदाई पत्र

स्वस्ति श्री सर्वोपकारार्थ कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 5 श्री मद्दयानंद सरस्वती यतिवर्येषु इतः महाराणा सज्जनसिंहस्य नतिततयः समल्लसंतु उदन्तस्तु; आपका अठै सात मास का निवास सूं चित्त अत्यंत आनंद में रह्यो क्योंकि आपकी शिक्षा को प्रकार श्रेष्ठ और उन्नतिदायक है और आपका संयोग सूं केही न्याय धर्मादि शारीरिक कार्यों में निस्संदेह लाभ प्राप्त होवा की म्हां का सभ्य जना सहित दृढाशा हुई कारण कि शिक्षा और उपदेश वां श्रेष्ठ पुरुषां का दृढ़ होवे है ज्यों स्वकीय आचरण भी प्रतिकूल नहीं राखै सो यो आप में यथार्थ मिल्यो अब म्हे आपका वियोग को-संजोग तो नहीं चावाँ हाँ, परंतु आपको शरीर अनेक मनुष्यों के उपकारक है जीं सूं अवरोध करणो अनुचित है तथापि पुनरागमन सूं आप भी म्हां का चित्त नै शीघ्र अनुमोदित करोगा – इत्यलम्

संवत् 1939 फाल्गुन कृष्णा 5 भौमे–

हस्ताक्षर महाराणा सज्जनसिंहस्य

परिशिष्ट–3

महर्षि दयानन्द सरस्वती के उदयपुर में आगमन पर स्वागत लेख

(विद्यार्थी संमिलित हरिश्चंद्रचंद्रिका और मोहनचंद्रिका (पत्रिका) जिसके संपादक मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या थे, उदयपुर से प्रकाशित मार्गशीर्ष सं. 1938 के कला 8 किरण के पृष्ठ 194 से 196 पर किसी सद्विवेकी के नाम से स्वामी दयानन्द के स्वागत में एक पत्र (विज्ञप्ति पत्र) प्रकाशित किया गया था; पत्र, अविकल्परूप. में यहां प्रकाशित कराया जा रहा है। यह स्वागत संबंधी लेख श्री माननीय डॉ. ब्रजमोहन जावलिया की कृपा से प्राप्त हुआ– संपादक)।

श्रीयुत स्वामी दयानन्द जी का स्वागत

ये स्वामी जी हम हिन्दुओं के पूरे हितेच्छु हैं क्योंकर कि हमारे मुख्य प्रमाणभूत वेदों को 'सर्वार्थचिन्तामणि' मानकर जैसा कि चाहिए वैसे सर्वकाल इनकी मान्यता की वृद्धि के लिए उद्योग करते रहते हैं और हिंदु पशुओं को स्थान–स्थान में यथाशक्ति के यथाज्ञान सदुपदेश भी करते फिरते हैं यह उनका परम प्रशंसनीय कृत्य है अतः ऐसे सत्पुरुष श्रेष्ठ बांधव का स्वागत करना हम लोगों को अवश्य प्राप्त है क्योंकि उनका पधारना इस मेवाड़ देश में सांप्रत हुआ है। यद्यपि कतिपय विषयों मे अल्प अल्प कारणों से हमारा और उनका ऐकमत्य नहीं है तथापि बहुत से विषय ऐसे हैं जिनमें ऐकमत्य भी तो है। और सर्व विषय में ऐकमत्य हो जाना सांप्रत इस जगत में वंध्यापुत्र के सदृश असंभूतवत् ही भासता है क्योंकि पितापुत्र, स्त्रीपुरुष, भाईबंधु, इष्टमित्र इनमें भी जब सर्वांश में ऐकमत्य कहीं भी हो ऐसा नहीं कह सकते तब अन्यत्र कहां उपलब्ध हो सकता है? संक्षेप में इनके और हमारे मत में ऐक्य और अनैक्य का विशेष जैसे कि आज तक समझा हुआ है उसके अनुसार लिखते हैं और इस पर से और लोग भी

विचार कर लें कि ऐक्य विशेष अंश है वा अनैक्य विशेष अंश है।

ऐक्य अंश : ईश्वर मानते हैं (1) वेद को परम प्रामाणिक मानते हैं (2) श्रौत स्मार्त कर्मों अनुष्ठान करना आवश्यक मानते हैं (3) पठनपाठन सूत्रादि मूल–मूल ग्रंथों का युक्त है ऐसा मानते हैं (4) यावत् विधि–निषेधों को उपपत्ति (युक्ति) से सिद्ध समझते हैं (5) पदार्थविद्या आदि जो देशांतरीय लोगों ने विषय कल्पना किये हैं, उनकी भी सिद्धता वेदमूलक ही स्वीकार करते है (6) वर्ण जातिविवेक मानते हैं (7) नियोग विधि को छोड़ विधवा विवाह को अशास्त्रीय समझते हैं (8)।

अनैक्य अंश : वेद में विहित नहीं इसलिए मूर्तिपूजा आदि व्यवहार ठीक नहीं ऐसा मानते हैं–1 ज़ीवित हुए ही पितृपितामहादिकों को श्राद्ध मानते हैं–2 इत्यादि।

ये जो ऊपर ऐक्य और मतैक्य विषय के सिद्धांत दिखलाये एतन्मूलक ही अनेक स्थल में ऐकमत्य और थोड़े स्थल में अनैक्य सिद्ध होता है। इसको निष्पक्षपाति लोग विचार करके देखें कि थोड़े विषयों के लिए हम लोगों का स्वामी जी से विरोध है यह कहां से सिद्ध हो? और जो लोग विराध है ऐसा समझते हैं उन्हें इतना भी ज्ञान कहां है कि स्वामी जी के और अन्य विद्वानों के शास्त्रार्थ को समझ भी सकें। मूर्ख लोग़ों को इतना ही उत्साह रहता है कि शास्त्रार्थ हो, अपन भी देखें और शास्त्रार्थ होने के पीछे पूछते हैं कि कौन हारा और कौन जीता क्योंकि संस्कृत का अक्षर भी तो जानते नहीं।

लीजिये इस पर से ये मूढ उत्साहियों को कितना ज्ञान होगा यह स्पष्ट नहीं है? परंतु इन मूढों को तो क्या कहें प्रंतु जो अपने को विद्वान लगाते हैं वे भी अपना और खेल देखने वालों का दोनों का खेल चार विद्वानों को और स्वामी को दिखलाते हैं। ये लोग क्या करते हैं कि रात दिन सिर फोड़–फोड़ कर कहीं से ढूंढ ढांढ वेद में से मूर्तिपूजा का प्रमाण अपनी समझ के अनुसार

निकाल कर स्वामीजी को बतलाते हैं और कहते हैं कि देखो वेद में मूर्तिपूजा लिखी है; स्वामी जी भी ऐसे लोगों के पूरे गुरु हैं कि उन प्रमाणों को देखते हुए देव का अर्थ विद्वान, मूर्ति का अर्थ स्वरूप, प्रतिमा का अर्थ तौल, पूजा का अर्थ प्रशंसा वा सत्कार इत्यादि बतलाकर उनका रात दिन का सिर फोड़ना एक क्षण में व्यर्थ कर देते हैं? उस पर वे महाशय दांवपेच में अज्ञात मूल्लों की ऐसी चिकोटी से वा दांत से काटने के सदृश स्वामी जी से उलझ पड़ते हैं, तब स्वामीजी तो स्वामीजी ही हैं ये भी कब छोड़ें, बनाकर छोड़ते हैं। सारांश शास्त्रार्थ है तो शास्त्रार्थ की रीति से ही हो सकता है परंतु इन मूर्खों को स्वाद क्या आवे जैसा कि न्यायशास्त्र के वादविवाद में। तस्मात् मेरा मत यही है कि 'गृहागते स्वागतमेव कार्य' स्वामी जी का इस देश में पधारना हुआ तो अपने को तो स्वागत करना ही चाहिए। मनुस्मृति में लिखा है–

ऊर्ध्वं प्राणा ह्युत्क्रमन्ति यूनः स्थविर आयाति।
प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते।।१।।

और जो स्वामी जी के और हमारे मत के अनैक्य एक दो है वे हम और स्वामी जी मिलेंगे और दोनों सहृदय होकर विचार करेंगे तो आशा है कि आप ही मिट जायेंगे। उसमें किसी के मत का न स्थापन और न खंडन हो सकता है। लोगों को इसका परिज्ञान भी नहीं तब विशेष लिखना भी व्यर्थ है। केवल उस एकांत सहृदय विचार से जो जगत् में एकमत्य होकर अनेक उत्तम–उत्तम फल होंगे वे मात्र स्पष्ट दीख पड़ेंगे। मेरे दृष्टि से तो इस जगत् में जो दीखते हैं सो वाद विवाद कर विरोध ही बढ़ाने वाले दीखते हैं, कोई ऐसे नहीं दीखते कि सभों में से ऐकमत्य करें और करावें। यद्यपि मैंने भी स्वामी जी पर कटाक्ष रखकर कविवचनसुधा में बहुत सा विषय लिख मारा है और उसमें फल वही समझ रखा है कि बड़ों से लड़ने में बुद्धि बढ़ती है अथवा जो स्वामी जी बड़े–बड़े उद्योग करने में इष्टफल है वे भी फल मेरे लिए सही।

अब मैं प्रार्थना करता हू कि स्वामी जी क्षमाशील और सत्यसत्य सहृदय हों तो मरे इस लेख के प्रत्यक्षर और प्रति पंक्ति और प्रतिवाक्य से विचार के साथ प्रसन्न होकर पीछे आज्ञा के द्वारा बुला कर दर्शन देवें, यदि इष्टफल को हानि का विचार इतने ही पर न आ सकता। मैं विद्वान नहीं हूं स्वामी जी विद्वान हैं क्योंकि समग्र वेद इनका देखा हुआ है। मैं स्वामी जी के सन्मुख इनके सदृश प्रवाह धारावत् संस्कृत नहीं बोल सकता। मैं स्वामी जी के सदृश चतुर्थ आश्रम में नहीं हूं द्वितीय आश्रम में हूं। मैं स्वामी जी के सदृश सभा में जोर–जोर से वक्तृता नहीं दे सकता जिसमें सभा जय कर सकूं। मैं स्वामी जी के सदृश स्वतंत्र और निर्भय नहीं हूं जिससे चाहे जैसा कह दूं अर्थात अपनी निस्पृहता प्रगट कर सकूं। तस्मात् स्वामी जी मेरी अपेक्षा सर्वथा बड़े हैं अतएव मुझे माननीय है कि मतः परं गृहागते स्वागतमेव काय यही सिद्धांत है।

तुष्यन्तु सुजना बुध्वा विशेषान् मदुदीरितान्।
अबोधेन हसंतो मां तोषमेष्यंति दुर्जनाः।।

वाचक लोगों से भी प्रार्थना है कि इस लेख में जितना कुछ लिखा है जहां तक मेरे समझ की दौड़ है सत्य ही है यह लेख ठीक–ठीक मेरे हृदय का ही चित्र है ऐसा समझिये और चित्र देखने के लिए उसी सूक्ष्मदर्शक काच की अपेक्षा है जिस हृदय से दूसरे का हृदय जाना जाता है। अलं कि वहुनेति शम्

भूजलं तेजो वायुव्यो सु तिष्ठन् स्वशक्त्यैव।
श्रद्धकमात्र फलदो जगदीशो जगदपायतः पायात्।।

आपका सद्विवेकी

चलो, हमारा भी स्वागत करने का धर्म हमारे निज सहायक ने कर दिखाया। यद्यपि ऐसे काम में पुनरुक्ति भी गुणावह होती है तथापि स्थल संकोच और कालातिक्रम के कारण मौन ही युक्त जान पड़ा। (वेदवाणी विशेषांक पोष सं. 2044 वि. वर्ष 40 अंक 3 से साभार)

परिशिष्ट–4

नकल नकशे अमीन पडतवाके
शुदी ११
बाजामाली
चतरभुज नागदा
रास्ता
नन्दा माली
लालसंकर नागदा
फोटो प्रतिलिपि
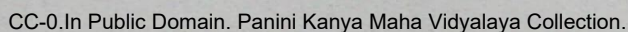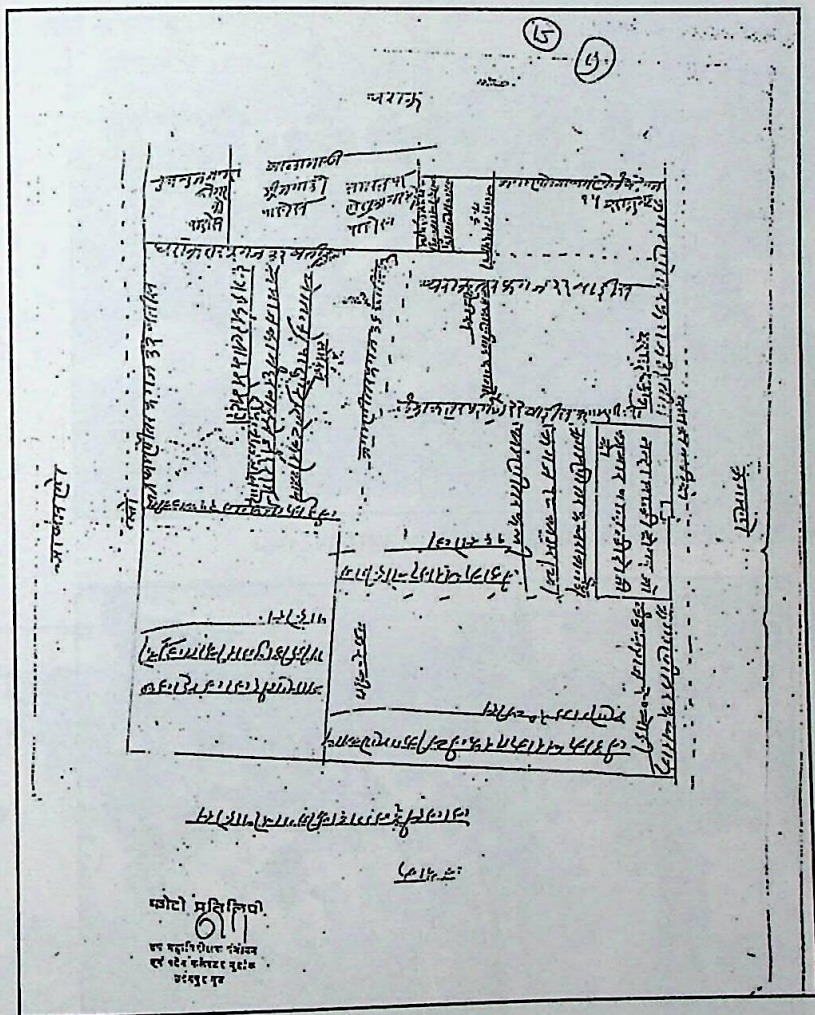
परिशिष्ट–5

परिशिष्ट–6 चित्रावली
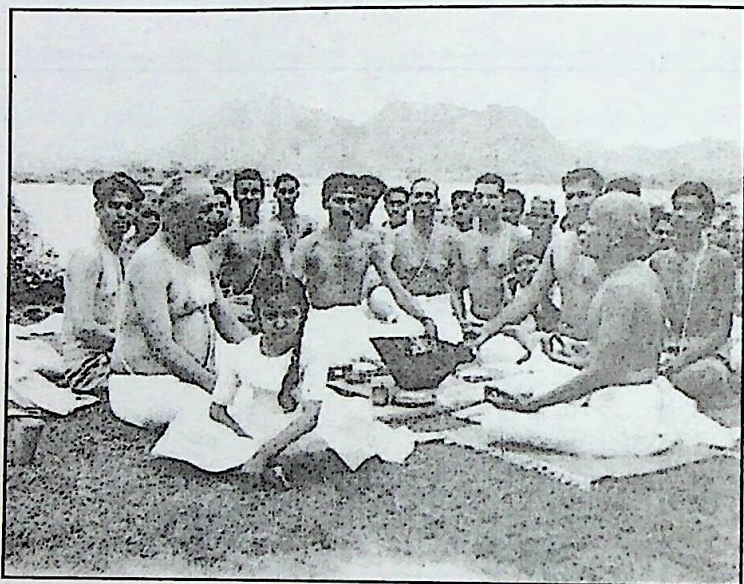
श्रावणी उपक्रम यज्ञ, फतहसागर, 1954

आर्य समाज का 82वां वार्षिकोत्सव, शोभायात्रा, 12 मई, 1965

आर्य समाज का वार्षिकोत्सव
शोभायात्रा 1979
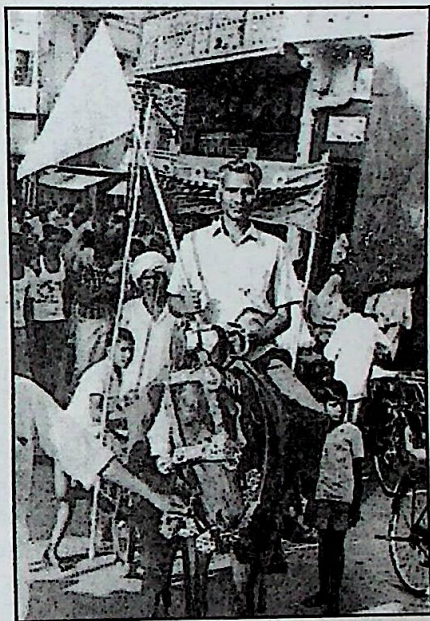
साप्ताहिक सत्संग, 1979
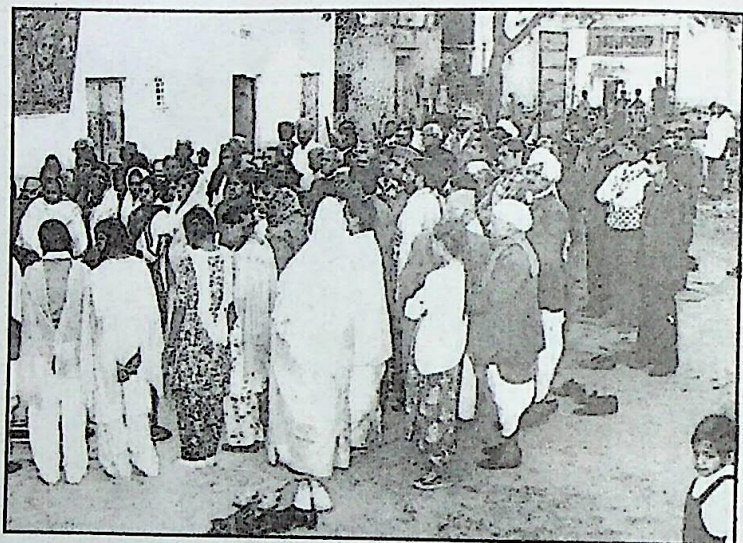
आर्य समाज का बोधोत्सव पर्व दि. 25.2.1979
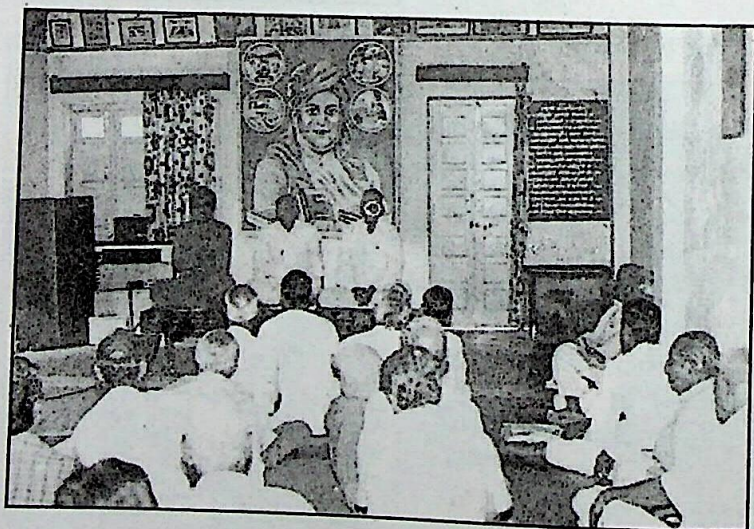
सत्संग में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानमंत्री मंचस्थ, 1989

सार्वदेशिक एवं राजस्थान आ.प्र. सभा, उदयपुर

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के लिए विचारार्थ अन्तरंग की बैठक के अवसर पर दि. 10.02.1980

बायसे से दाये ..सर्वश्री –
भूमि पर – कमल किशोर ————, दानसिंह, पूरनचन्द, सरदारीलाल, ————, कन्हैयालाल, ब्रह्मस्वरूप, चैतन्यप्रकाश।
कुर्सी पर – स्वरूप सिंह, छोटूसिंह, कुसुमलता, ओमप्रकाश त्यागी (मंत्री) रामगोपाल शालवाला (प्रधान), सोमनाथ, पृथ्वीसिंह, मोहनलाल, रविदत्त।
प्रथम पंक्ति – परमानन्द, लालचंद (वा.प्र.), भंवरलाल, ब्रह्मदत्त, राजगुरु, दुर्गाप्रसाद, विद्याधर, रामचन्द्र राव, भगवतीप्रसाद, ब्रह्मदत्त।
द्वितीय पंक्ति – भारामल, हासानन्द, लालचन्द, शत्रुसिंह, रघुनाथ, जयसिंह, हरीनारायण, अमृतलाल, अनिल कुमार, अमृतलाल, प्रेमचन्द, स्नेहलता, पन्नालाल।
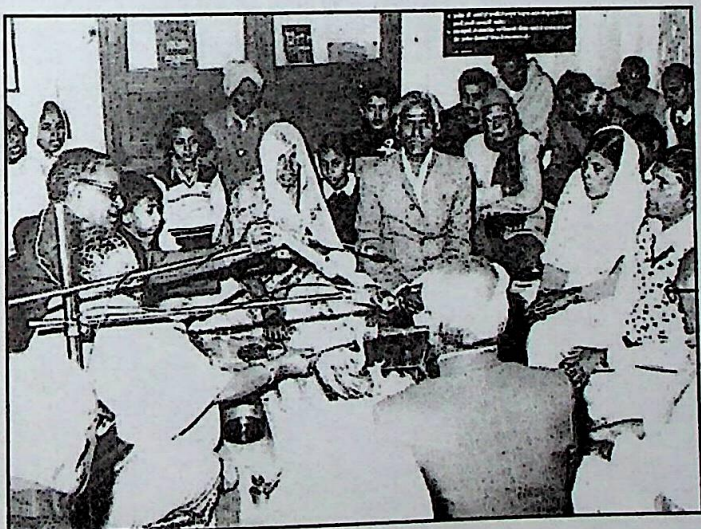
साप्ताहिक सत्संग, 1981

साप्ताहिक सत्संग, प्रवचन स्वतंत्रतानंदजी, 1981
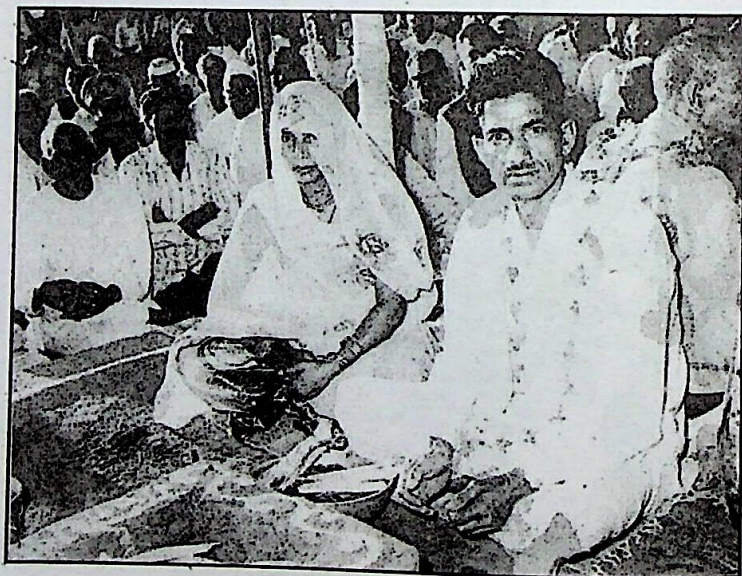
सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह सत्यार्थ–भृत् यज्ञ दि. 16–10–1981

आर्य समाज उदयपुर के प्रधान एवं समारोह के स्वागत मंत्री श्री जयसिंह महता विद्यालंकार, सत्यार्थ भृत यज्ञ के अध्यक्ष श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती एवं आचार्य श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए ।1981
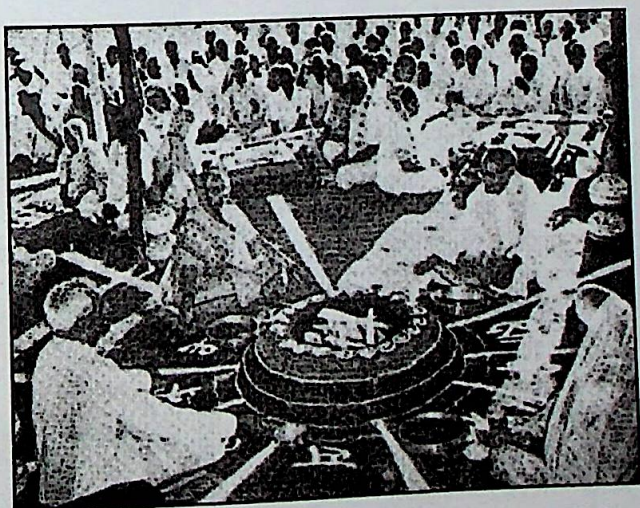
सत्यार्थ-भृत-यज्ञ की एक झांकी । केन्द्रीय समीक्षा वेदि: पर यजमान हैं प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता श्री पृथ्वी सिंह जी महता विद्यालंकार तथा श्री जयसिंह जी महता, प्रधान आर्य समाज उदयपुर एवं स्वागत मंत्री समारोह ।1981

सत्यार्थ प्रकाश नगर का पूर्वी द्वार (महाराणा सज्जनसिंह द्वार) जहां से विशाल शोभायात्रा प्रारंभ हुई, 1981।
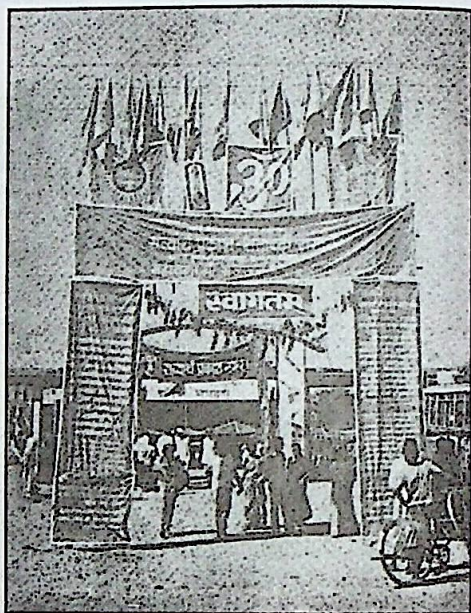
श्री जयप्रकाशजी आर्य (भूतपूर्व इमाम बेतिया), समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपालजी शालवाले का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए 1981।

विशाल शोभायात्रा: उदयपुर के महत्वपूर्ण स्थल देहली गेट से निकलती हुई। 1981
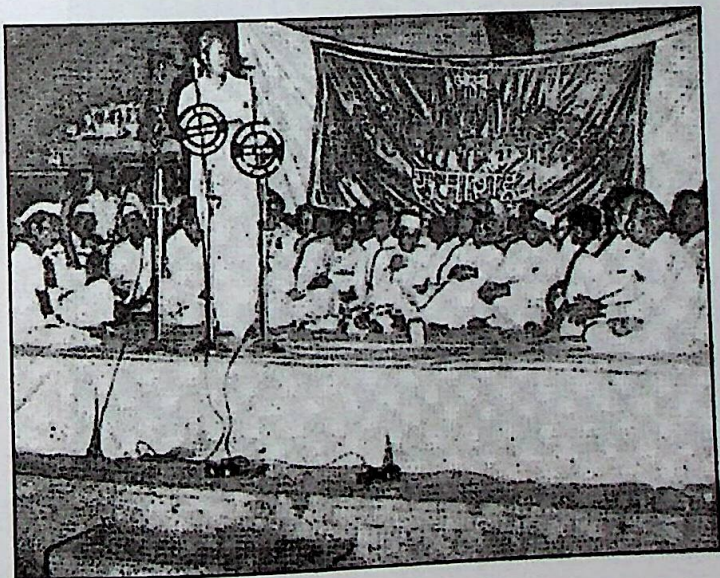
श्री चौधरी दलबीर सिंह जी, केन्द्रीय राज्य मंत्री मुख्य अतिथि के रूप में भाषण करते हुए। 1981
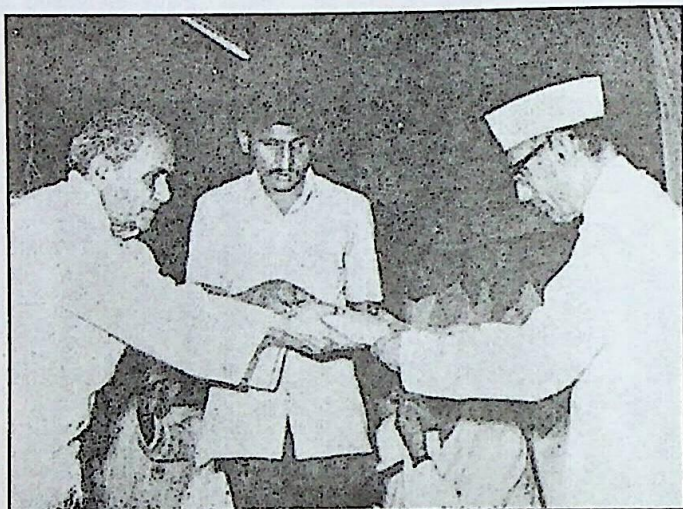
श्री कालीदास जी (जूनागढ़) द्वारा ब्रेल लिपि में लिखे गये सत्यार्थ प्रकाश का, समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपालजी शालवाले द्वारा विमोचन । 1981
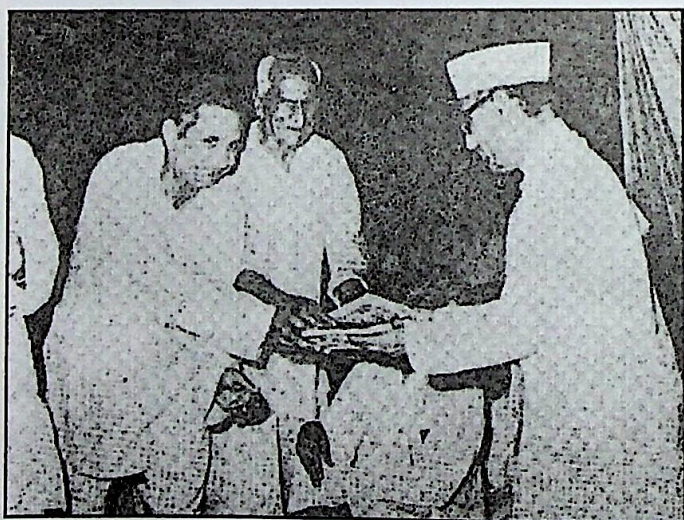
नेरोबी से आये प्रतिनिधि मंडल द्वारा लाये गये स्वाहिली भाषा में अनूदित सत्यार्थ प्रकाश का, समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपालजी शालवाले द्वारा विमोचन ।1981
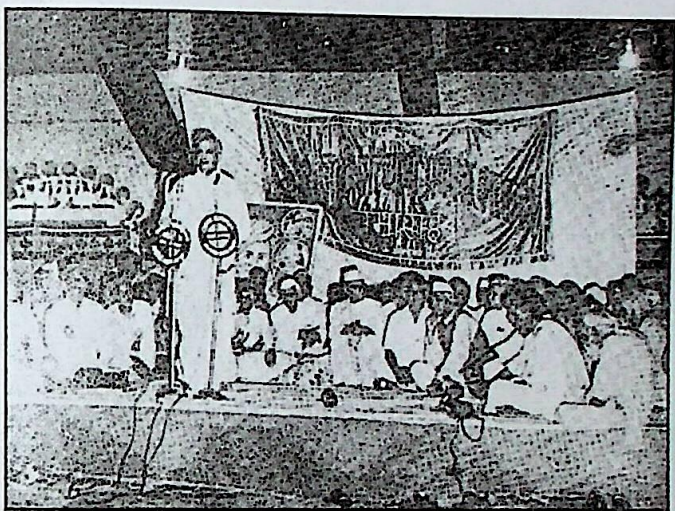
श्री मोहनलालजी सुखाड़िया, संसदसदस्य, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए। 1981
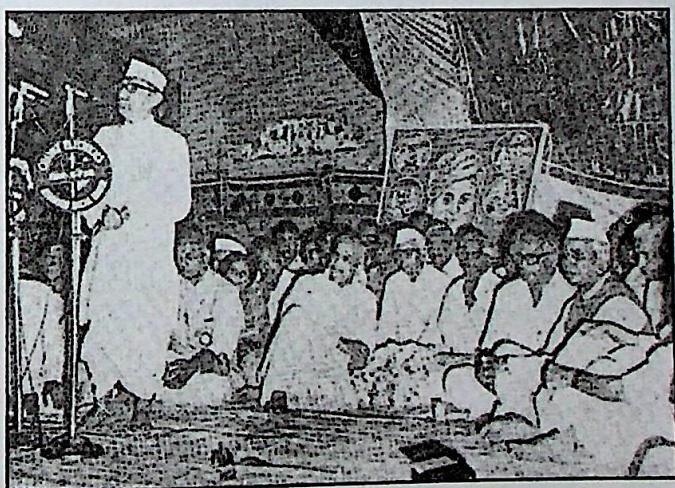
श्री राम गोपालजी शालवाले अध्यक्ष सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह एवं प्रधान सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए। 1981

श्रीमान् बा० सुगुणचंद्रजी, उदयपुर.

आपकी ही उदार सहायता से इस ग्रन्थमाला का प्रकाशन "आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा" द्वारा हो रहा है। आपने अन्य भी गुरुकुल आदि संस्थाओं को पर्याप्त दान दिया है।
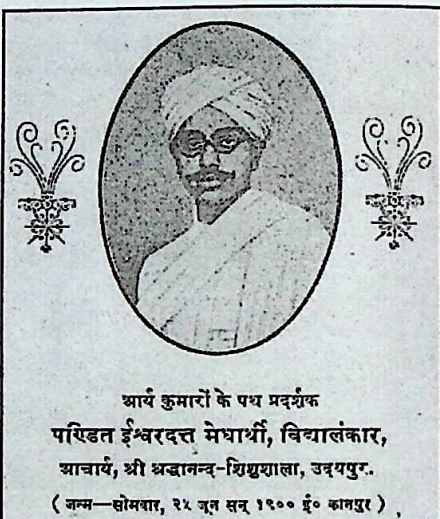
आर्य कुमारों के पथ प्रदर्शक
पण्डित ईश्वरदत्त मेधार्थी, विद्यालंकार,
आचार्य, श्री श्रद्धानन्द-शिशुशाला, उदयपुर.
(जन्म—सोमवार, २५ जून सन् १९०० ई० कानपुर)

1928–29
आचार्य

श्री डा. आनंद सुमनजी (पौत्र नवाब छत्तारी), समारोह के अध्यक्ष श्री रामगोपालजी शालवाले का माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए, 1981।
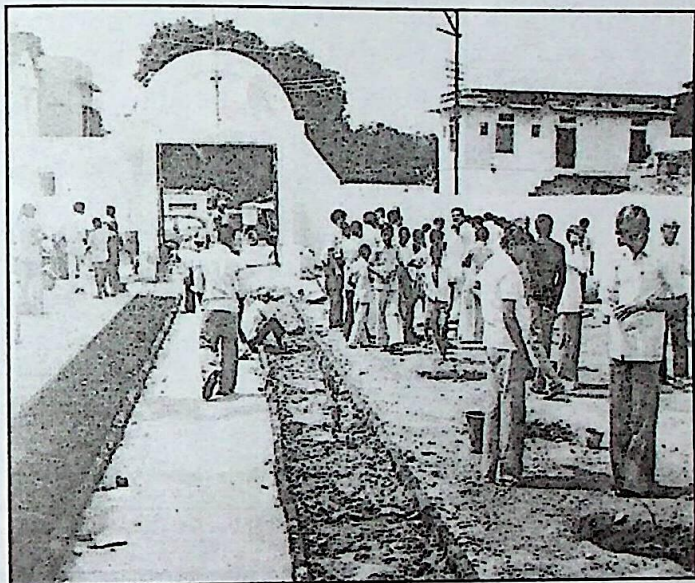
आर्य समाज परिसर में वृक्षारोपण दि. 31–7–1983
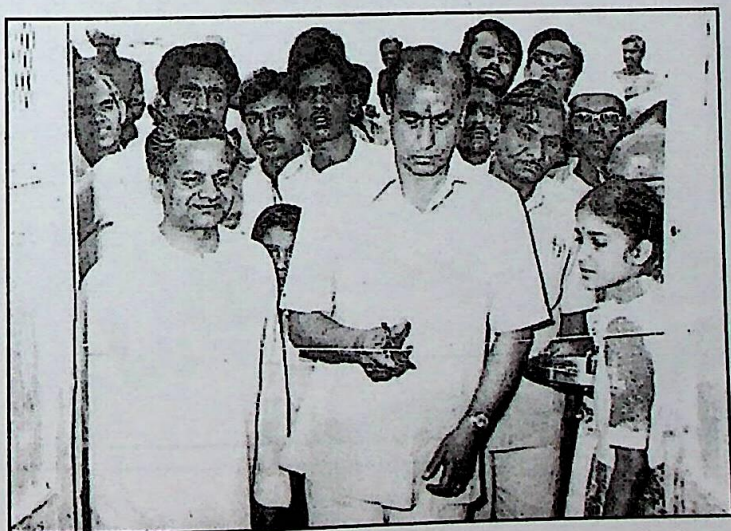
नगर परिषद उदयपुर द्वारा स्थापित वाचनालय का उद्घाटन श्री सी.एल. खन्नां प्रशासक नगर परिषद द्वारा दि. 3–4–1983

नवलखा महल, दि. 30–10–1992
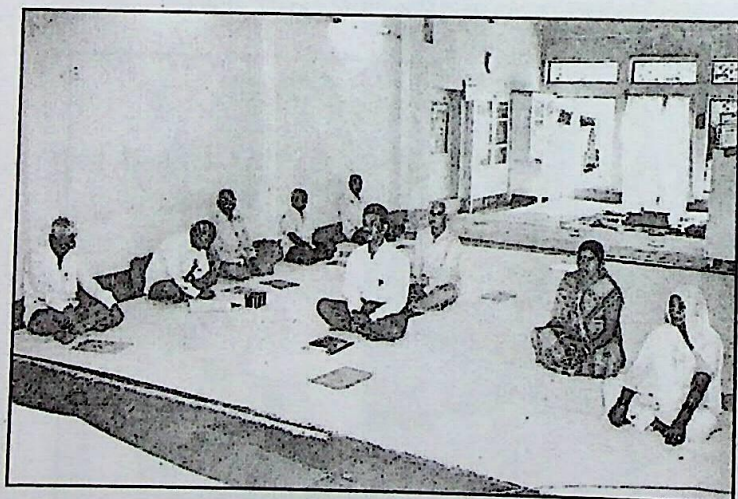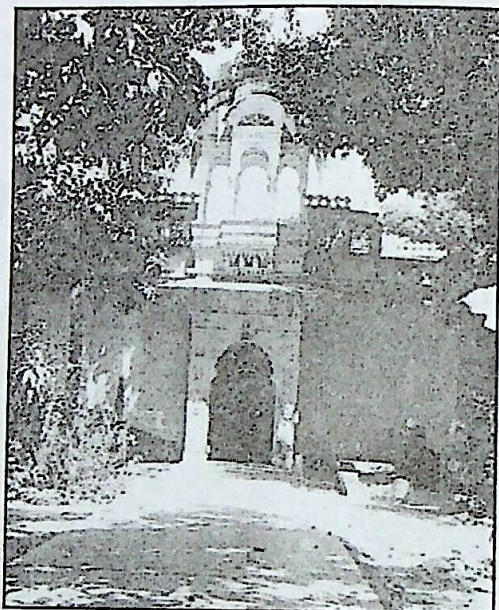
साप्ताहिक सत्संग, 2007
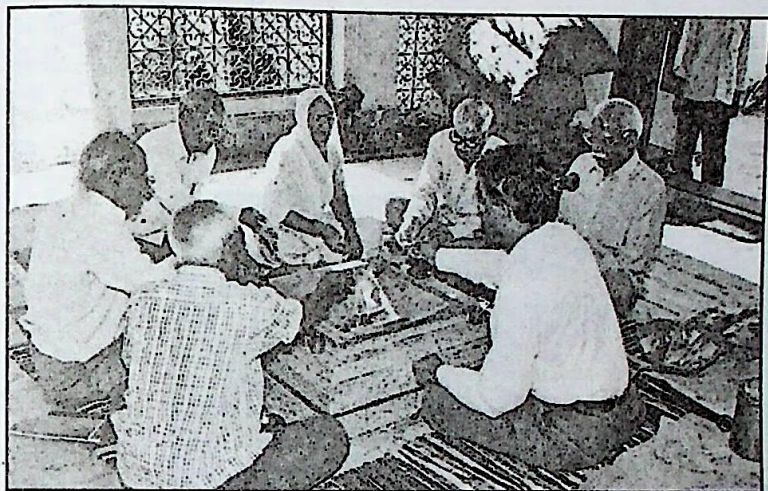
साप्ताहिक सत्संग, 2007
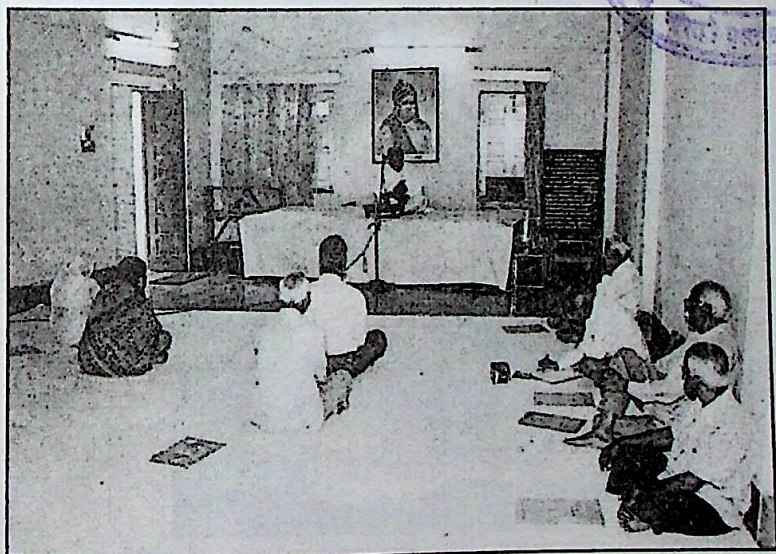
साप्ताहिक सत्संग, 2007

आर्य समाज, उदयपुर, राजस्थान

(कार्यकारिणी नगर आर्य समाज, उदयपुर)

(1963–1965)
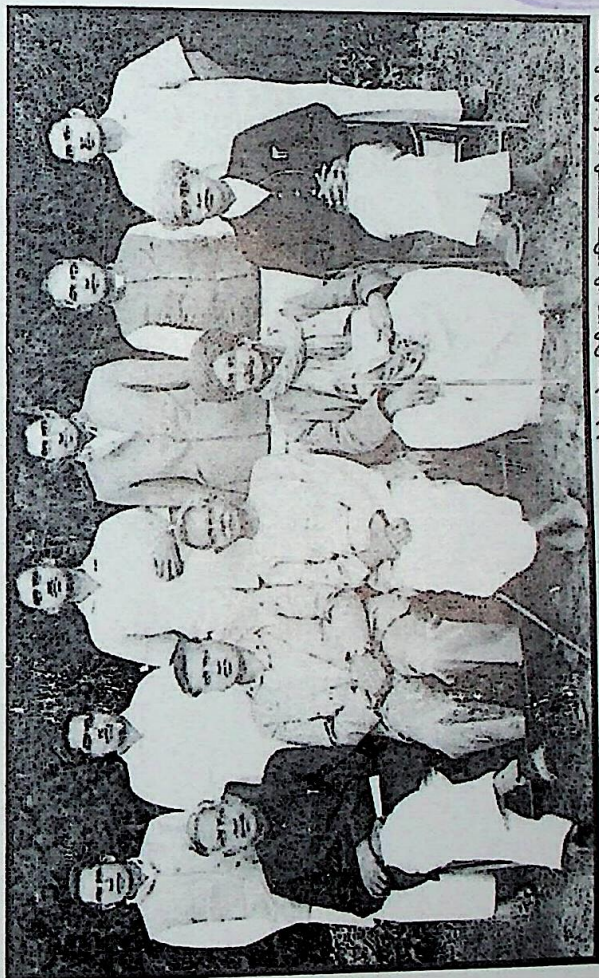
बायें से दाहिनी ओर : कुर्सी पर बैठे हुए :– श्री स्वरूपसिंहजी चूंडावत, एडवोकेट लेखा निरीक्षक, श्री अनिल कुमारजी शर्मा मंत्री, श्री ठाकुर बलवंतसिंह जी प्रधान, श्री बाबू रूपशंकरजी उप प्रधान, श्री गोविंदसिंहजी प्रधान, आर्य वीरदल। खडे हुए :– श्री कृष्णजी पारीक, मंत्री, आर्य समाज, भूपालपुरा, श्री राजेंद्रकुमारजी उप मंत्री, श्री ब्रजमोहनजी जवालिया, उप प्रधान, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा, अजमेर, श्री किशनलालजी चौहान, भजनोपदेशक, श्री भंवरलालजी जोशी, प्रधान, आर्य समाज, भूपालपुरा, श्री प्रो. प्रेमचंदजी गुप्त।

।।ओ३म्।।

आर्य समाज के नियम व उद्देश्य

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्म के अनुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिये। सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।